AGNI PAREEKSHA by Acharya Shri Tulsi Ra. 650

यो जन रनवाम्बर वेरायनी महासमा चन्नन्ता १ क सौजन्य संप्राप्ती

copyright 1901 @ atha ban & sont delei-6

प्रकारक
रामनात पूरी एकानक
प्राम्भाराम एण्ड संस
नारमीरी केन दिन्दी ६
गैंव नाम नर्न दिन्दी
चीड़ा एस्ता जपपुर
नाई होंगे केन, सानगर
वपमुक्त एड केर्ड दिस्सिकानक सेन चन्नीमह

प्रयम संस्थागण १६६१ मृत्य दशप् ६१

> पत्पपास श्वन शतपास श्वन वा नैष्ट्रण श्रमशिनक प्रेस द प्री नजना नगर शिल्मीन्ड

पम्प श्रीर रत्न ने महाभारत की कथा पर महाकाव्य रचे श्रीर पीन्न ने राम-कथा पर भुवनेवय रामाम्युदय नामक काव्य रचा । हालांकि वर्तमान में यह काव्य अनुपलव्य है, पर श्रन्य श्रनेक ग्रन्थों में इसकी गौरव-गाथा मिलती है ।

जैन कवि श्री नागचन्द्र ने रिवर्षण ग्रीर विमलमूरी की रामायण के ग्रार्धार

पर वन्नड मे रामचन्द्र चरित्र पुराण नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया ।

तेरहवी यताब्दी के उत्तरावं में जैन मुनिश्री कुमुदेन्दु ने कुमुदेन्दु, रामायण लिखी। चौदहवी ग्रौर मोलहवी शताब्दी के बीच वैदिक पडितों ने भी रामायण लिखी।

राजस्थानी भाषा मे

ं राजस्थानी भाषा मे जैनेतर विद्वानो द्वारा रिचत राम-कथा-ग्रन्थो का इतिहासँ जहां मतरहवी शताब्दी से प्रारम्भ होता है, वहा जैन विद्वानो व मुनिजनो द्वारा रंचित रामायण, ग्रन्थ का इतिहास सोलहवी शताब्दी के भ्रादि चरण मे ही प्रारम्भ हो जाता है। श्री ग्रगरचन्दजी नाहटा ने ग्रपने एक लेख मे विताम्बर ग्रीर दिगम्बर जैन विद्वानी द्वारा रिचत रामयशोरमायन प्रभृति २२ ग्रन्थो का परिचय दिया है। * ' ' '

हिन्दी भाषा की श्रोर

हिन्दी भाषा का युग श्राया तो जैन धाचार्यो व मुनियो की लेखिनी राम-कथा को लेकर हिन्दी भाषा की श्रोर मुड चली है। श्रनेको ग्रन्थ श्रव तक रचे जा चुके हैं। श्राधुनिक भाव भाषा की दृष्टि से महामहिम श्राचार्य श्री तुलसी हारा रचितं यह 'ग्रागिन-परीक्षा' ग्रन्थ श्रपती प्रकार का एक है। सचमुच ही यह एक प्रगीत काव्य है। इसमे लका-विजय से सीता-परित्याग श्रीर उसकी ग्रागिन-परीक्षा तक का सजीव चित्रगा किया गया है।

जैन श्रौर वैदिक रामायगों मे कथा-भेद

महाकिव तुलिमी के रामचिरित मानस में लका में ही पुर्नीमलन के अवसर पर सीता की अग्नि-परीक्षा होती है। परीक्षित सीता भी रजक के ताने मात्र से पुन लक्ष्मण के द्वारा वन में छुडवा दी जाती है। किन्तु प्रस्तुत अग्नि-परीक्षा खण्ड काव्य में लका-विजय के पश्चात् सीता सानन्द राम-लक्ष्मण के माथ अयोध्या लौटती है। कालान्तर से राम लोकापवाद को और रजक के ताने को सुनकर कृतान्तमुख सेनापित के हाथो पुन निर्जन वन में छुडवा देते हैं। लवण और अकुश, (लबकुश) मानु-प्रतिशोध के लिए अनेक राजाओं की सेना के साथ अयोध्या पर चढाई करते हैं। युद के अन्त में सीता का परिचय खुलता है। राम उसे पुन अयोध्या लाते हैं और उसकी अग्नि-ररीक्षा करवाते हैं।

^{*} राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त श्रमिनन्दन ग्रन्थ ए० ६४०

भीर समीक्षात्मक इति से मिने रिवर्ग भाए हैं। यस्य कुछ एक मौनिक विश्ववतार्ण रकता है।

राम-कथा पर प्रकाध झासनेबासा प्राकृत माया का दूधरा महायत्व तिष्ठहुं महापूरिख्युगालकार है। उसमें बेसटळ्याकायुक्यों के चरित्र हैं। यह प्राविद्याध्य प्रीर उत्तरपुराण के बीचेकर अध्य महापुराण के वीचेकर अध्य महापुराण के वीचेकर अध्य महापुराण के वीचेकर अध्य के का बार का तीव का ति इस का का ति इस क्या प्राविद्याध्य के का बाता के वीचेकर का तीव का ति हों। वस क्या मार्ग के प्रविद्याध्य के का बाता है। यह इस मार्ग के स्वर्थण प्रकृत क्या के भी बराज बाता है। बीच हुमार स्मीक विधित कर कर कर विधान कि कि वह कम के प्राविद्याध्य के प्रविद्याध्य के प्रविद्य के प्याध्य के प्रविद्य के प्रव

सस्त्रुत में

मंत्रात प्रापा में श्री क्ल कविकारों की लेखिनी घलाप इस वे क्ली। कविकार रिवियेण ने प्राप्टन के पदमक्तिय का पत्निकित घवतरण वस्त्रुद्ध प्राचा में कर दिया। पत्र प्राप्त करिय करा वहले कर किया है। पत्र प्राप्त करिय करा वहले किया प्राप्त करिय करा वहले करा वहले

धानार्थे हेमनार का नियश्चिमात्राक्षपुरानित बतील हुनार नहीं विधान है। इस वन के सालवें पर्व में नयभय पैतीमनी इतीकों में स्वत्रश्चना का नतुन किया या है। एनचुन ही भाषार्थ हेमनार डा यह पत्रन सकत्त्रीवित्तृत पूरास्त्र भी है भीर हालास्त्र भी

हाराम्य भी। प्रिमन्दर मात्रार्थं विन्नसेत ने भी विस्तात्राय के प्रतुम्वरिय के मोबार पर भव्दन भागा में प्रमूचना की रवना की है। सीए मा मनेक्षनिक काम्य व वरित्र राज-क्या के विद्यार्थ में जैन पनीतियों ते के हैं।

कमाइ भाषा में

नानत द्विता पी एक प्रकृत भागा है। दिनी पुग में क्लॉटक में येन बसेका बहुत दिलार पा। कमा भागा के साटिल का उत्तार ही सिक्ता के कलीपावें भी परिता में होता है। इस बाता में भी नाता येन दिलाने के शम्मतीकर पेने हैं। पद्मा कोल मेरे कल साथ पुत्र के नवेंभ्रण करियों से भाग मेरीनों हो जैन न पम्प और रत्न ने महाभारत की कथा पर महाकाव्य रचे श्रीर पौन्न ने राम-कथा पर भुवनैक्य रामाम्युदय नामक काव्य रचा। हालांकि वर्तमान में यह काव्य श्रनुपलव्य है, पर श्रन्य श्रनेक ग्रन्थों भे इसकी गौरव-गाथा मिलती है।

जैन कवि श्री नागचन्द्र ने रिवर्षण श्रीर विमलसूरी की रामायण के श्राधार

पर कन्नड मे रामचन्द्र चरित्र पुराएा नामक ग्रन्थ का प्रएायन किया ।

तेरहवी शताब्दी के उत्तरार्घ में जैन मुनिश्री कुमुदेन्दु ने कुमुदेन्दु, रामायरा लिखी। चौदहवी श्रीर सोलहवी शताब्दी के बीच वैदिक पडितो ने भी रामायरा लिखी।

राजस्थानी भाषा मे

' राजस्थानी भाषा मे जैनेतर विद्वानो द्वारा रिचर्त राम-कथा-ग्रन्थो का इतिहास जहां मतरहवी शताब्दी से प्रारम्भ होता हैं, वहा जैन विद्वानो व मुनिजनो द्वारा रेचित रामायणं ग्रन्थ का इतिहास सोलहवी शताब्दी के ग्रादि चरण से ही प्रारम्भ हों जाता है। श्री ग्रगरचन्दजी नाहटा ने ग्रपने एकं लेख मे श्वेताम्बर ग्रीर दिगम्बर जैन विद्वानो द्वारा रिचत रामयशोरमायन प्रभृति २२ ग्रन्थों का परिचय दिया है। * ' '

हिन्दी भाषा की श्रोर

हिन्दी भाषा वा युग श्राया तो जैन भाचार्यों व मुनियों की लेखिनी राम-कथा को लेकर हिन्दी भाषा वी थोर मुंड चली है। यनेको ग्रन्य थ्रव तक रचे जा चुके हैं। ग्रापुनिक भाव भाषा की दृष्टि से महामहिम श्राचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित यह 'श्रान्न परीक्षा' ग्रन्य श्रपनी प्रकार का एक है। सचमुच ही यह एक प्रगीत काव्य है। इसमें लका-विजय से सीता-परित्याग श्रीर उसकी श्रान्त-परीक्षा तंक का सजीव चित्रस्म किया गया है।

जैन श्रौर वैदिक रामायगों मे कथा-भेद

महाकिव तुलसी के रामचिरत मानस में लका में ही पुनिमलन के श्रवसर पर सीता की श्रिन-परीक्षा होती है। परीक्षित सीता भी रजक के ताने मात्र से पुन लक्ष्मण के द्वारा वन में छुड़वा दी जाती है। किन्तु प्रस्तुत श्रिन-परीक्षा खण्ड काव्य में लका-विजय के पक्ष्वात् सीता मानन्द राम-लक्ष्मण के माथ श्रयोध्या लौटती है। कालान्तर से राम लोकापवाद को श्रौर रजक के ताने को मुनकर कृतान्तमुख सेनापित के हाथो पुन निर्जन वन में छुडवा देते हैं। लवण श्रौर श्रकुश (लबकुश) मातृ-प्रतिशोध के लिए श्रनेक राजाश्रों की सेना के साथ श्रयोध्या पर चढ़ाई करते हैं। युद्ध के श्रन्त में सीता का परिचय खुलता है। राम उमे पुन श्रयोध्या लाते हैं श्रीर उसकी श्रीन-ररीक्षा करवाते हैं।

^{*} राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त श्रमिनन्दन ग्रन्थ पृ० ६४०

वह कथा-भेद प्राचार्य भी धुवसी ने स्वय नहीं किया है परस्तु जन घौर दैदिक रामायलीं का यह परम्परायत केव है। बोनों परम्पराओं की राम-कवा में शादि से भन्त तक एकरूपता भी है दो भावि से सन्त तक सनेकरूपता भी। सभी पार्थी के पारिक मानार तो वस्त ही बाते हैं, सान-सान उनके प्रवान्तर बटना-प्रसंग भी। वोनों परम्परामों की राम-स्था का तुलनात्मक श्रम्मयन सबस्म एक रोचक मौर ज्ञानववक विषय बनता है परन्तु प्रस्तुत प्रसंस में वह विस्तार क्षाम्य नहीं है। दोनों परम्परामों की कवा में उल्लेखनीय भेद तो यह है कि वैदिक परम्परा में क्रमक राम को बहुर का स्वरूप दे दिया जाता है और जैन परम्पछ अवतारवाद की हिगावती नहीं है. प्रवः वर्धमें प्राकृत चमायलों से से कर वर्तमान की चमायलों तक भी चम एक पुरुष महापुरुष न नासुदेव सदमास के क्योच्छ बल्बू बलदेन ही माने बाते हैं। वे महान राजा ने इसमिने सर्जनीय नहीं सपित बीवन के सन्त में उन्होंने मुनिश्न सम स्तीकार किया और सर्वेश्व होकर गोश्रवाम पहुंचे इसलिये के जैन जबतु के धर्वनीय बौर उपासनीय हैं। वैदिक परम्परा में राम-कवा का बादि प्रस्व बास्मीकि रामायल है। इसके बाद ही यह कवा महासारत व सन्ध प्राण प्रव्यों में बाई, ऐसा नाना बाता है। शस्मीकि ने राम को एक महामानव के क्य में ही प्रस्तृत किया है। मार्कि से अन्त एक एम एक मानव रहते हैं। उनमें ईस्वरता का आरोप कवि में कहीं नहीं होने दिवा है। यास्पारम रामामस में राम के ब्रह्मक्य की म्हांकी मिसती है थीर मस्त कदि तुबसी के एम करित मामस में तो दिया एम सम कद कर बार्ति का साहि से धरत तक निर्माह मिलता है। साम के बुक्ति मानत पुत में की एमायरों बुक्तिस्मत की दियों में सीक्ष मधरत मानी गई है। वहां स्वीकर्षण करनाएं स्वासाविक सोर समझ कर में मिलती हैं। क्यांहरूलाई---वैक्कि एमामरों में रामशु के क्या मुख

१ चरिष्ट्रिय राष-मृहद समुदित्यदे । संगहनित्यदे गु-नरिर्दिश्वः । वेश्वेभित्यः साद बहासस्याः चिर-तारद सरस्य सोवस्यः । संबह्यद्व बहेनिय जासेस क्रिकः चंद्रासस्य क्षेत्र चनिक्रियाणाः।

कथा कहने का भ्रनुरोध करते हैं भीर जिज्ञासा के रूप मे वैदिक परम्परा में चलनेवाली भ्रसगितयों को भी प्रस्तुत करते हैं। उनमें मुख्य जिज्ञासाए हैं—रावण के दशमुख भीर बीस हाथ कैसे हैं? कुम्भकरण छ महीने तक कैसे मोता था भीर करोड़ो महिष कैसे खा जाता था? कर्म ने पृथ्वी को भ्रपनी पीठ पर घारण किया तो वह स्वय कहा था? रावण की पत्नी मन्दोदरी को विभीषण ने भ्रपनी पत्नी कैसे बना लिया भादि। इस प्रकार राम की भ्रवतारवादिता और विविध भ्रस्वाभाविकताभों को लेकर जैन श्रीर वैदिक परम्परा की राम-कथा में बहुत सारे मौलिक भेद आ जाते हैं।

वैदिक रामायगो मे कथा-भेद

रामायण का कथा-भेद एकमात्र परम्परा-भेद पर ही आघारित है, ऐसी वात नही है। एक-एक परम्परा में भी राम-कथा की विभिन्न घाराए हैं। प्रत्येक रचिंदाा प्राय कुछ न कुछ अपनी थ्रोर से जोडता ही है। किन इसे थ्रपना मौलिक अधिकार भी मानता है। मीता को रानण किस प्रकार उठा कर ले गया, इस निषय में किनयों ने थ्रपनी सूभ-नूभ के थ्रनुसार नाना युक्तिया काम में ली। मीता सती थी। स्वेच्छा से ही रानण के साथ जाने के लिए चरण नहीं बढ़ा सकती थी। रानण वलात् उसे उठाकर ले जाता है, तो पर-पुष्प के स्पर्श-दोष से नह दूषित होती है। इस मम्बन्ध में मनसे निराली उनित यह है कि सीता जिम भोपडी में रहती थी, रानण पृथ्वी लण्ड के माथ उम भोपडी को ज्यों का त्यों उठाकर ले गया।

१ पण्विष्पिणु जिणु तग्गय-मर्गेगा । पुणु पुच्छिष गोतमसामि तेगा ॥
परमेसर पर-सासगोहि सुव्वय विवरेरी ।
कहे जिग्ग-सासगो केम थिय कह राहव-केरी ॥
जो लोएहि ढक्क रिवन्तएहि । उष्पाइच भन्तिज भन्तएहि ॥
जइ कुम्मे घरियज घरिग-बोढु । तो कुम्मु पजन्तज केगा गीढु ॥
जइ रामहो तिहुश्रणु उबरे माइ । तो रावग्रु कहि तिय लेवि जाइ ॥
श्रण्णु वि खरदूसरग्ग-समरे वेव । पहु जुज्भइ निच्चु कव ॥
किह तियमइ-कारगो किवबरेगा । वाइज्जइ वालि सहोयरेगा ॥
किह वाग्गर गिरिवर उद्यहन्ति । वन्चेवि मयरहरु समुत्तरन्ति ॥
किह रावग्रु वहमुह बीस हत्यु । श्रमराहिव-भुव-बन्धग्ग समत्यु ॥
विरसद्ध सुग्रइ किह कुम्भयण्णु । महिसाकोडिहि निग् धाइ श्रण्णु ॥
जें परिसेसिज दइवयग्रु । पर-गारीहि सम्ग्रु ।
सो मन्दोवरि जग्गिग-सम, केइ लेइ विहीसग्। ॥

[—]विज्जाहरकाट, सवि ६-१०

वह कमा-भेद धावार्य भी तुमसी ने स्वयं नहीं किया है, परम्तु जन और वैदिक रामापर्शों का यह परम्परागत मेद है। दोनों परम्परामों की राम-क्या में मादि से मन्त तर एकस्पता भी है दो सादि से मन्त तरु धनेकस्पता भी । सभी पात्रों के भामिक प्राचार तो जवन ही जाते 🐉 साव-साथ उनके प्रजान्तर चटना प्रसम भी। बोनों परम्परामों की राम-कवा का चुननारमक भ्रम्ययन सबस्य एक रोचक भीर ज्ञाननक विषय बनता है परन्तु अस्तुत असंग में वह विस्तार क्षान्य नहीं है। दोनों परम्परांचीं की कवा में उस्ते सरीय भेद तो वह है कि बैदिक परम्परा में क्यारा राम को बहा का स्वरूप दे दिना काता है और भेन परम्परा ग्रनतारनाद नी हिमानती नहीं है. घट उसमें प्राकृत समायलों से से कर नर्तमान की रामायलों तक भी सम एक पूक्त महापूर्व व बासूचेव सहमता के क्वेच्ठ अन्य बहादेव ही माने बाते हैं। वे महाबु राजा के इसकिये प्राचेनीय नहीं प्रशितु बीवन के प्रान्त में बनहोंने मुनित्व धर्म स्वीकार किया भीर सबझ होकर मोलवान पहुंचे इसकिये के भीत अगत के सर्वतीय भौर उपासनीय हैं। वैविक परमारा में राम-कवा का बाबि बम्ब बास्मीकि रामामण है। छटके बाव ही यह कना महाबारत व धन्य पुरुख प्रन्तों में बाई, ऐसा माना वाता है। बास्मीकि में राम को एक महामानव के कप में ही प्रस्तृत किया है। साहि से अन्त तक राम एक मानव रहते हैं। जनमें ईश्वरता का बारोप कवि ने कहीं नहीं होने दिना है। माम्पारम रामानगा में राम के बढ़ाक्य की मांकी मिनती है भीर मन्त कवि तुबसी के राम चरित मानस में तो 'सिया राम मब सब बग बानि' का सादि से धन्त तक निर्वाह मिलता है। याज के वृद्धि-प्रवान युग में बैन रामायर्खें वृद्धिगम्बता की विशो में प्रतिक प्रशस्त मानी नहें हैं । वहां प्रतिकाश बटनाएं स्वामाविक और सम्मव रूप में मिलती हैं। छवाहरलार्च-वैदिक रामायलों में रावल के बस युक्त माने यथे हैं इसीतिए इसकन्यद बतानत बस्तमूल बादि नाम संसके प्रवतित हुए हैं ऐसा कहा जाता है। जैन रामायणों में रावण के दखानन कहमाने का वर्णन इस एथी कहा भावत है। बन प्रभावणा न प्रवण्ण क स्थानन कहाना का मध्य कर अप्रवाह में प्रवण्ण प्रकाश के प्रवाह में स्थान प्रवाह कर कार्य के स्थान में प्रवाह में स्थान में स्थान में स्थान में स्थान के स्थान में स्थान स्थान में स्थान में स्थान स्था बातीयता की गई है। स्वयंपूरत परमवरिक में कोशिक मनवानु महाबीर से राज

१ वरिहित एव-नृहुद सनुदित्यई। एं यहतिस्वई हु-परिकिट। वेस्तेनिया साह यहारएकई विर-साहद सरसई सोयएड। से दहनुह वहतिब मरोस किन वंबाएन्ट बेम वर्तिड नज म

कथा कहने का ग्रनुरोध करते हैं ग्रौर जिज्ञासा के रूप मे वैदिक परम्परा में चलनेवाली ग्रसगितयों को भी प्रस्तुत करते हैं। उनमें मुख्य जिज्ञासाए हैं—रावण के दशमुख ग्रौर वीस हाथ कैसे हैं? कुम्भकरण छ महीने तक कैसे मोता था ग्रौर करोडों मिहप कैसे खा जाता था? कर्म ने पृथ्वी को ग्रपनी पीठ पर धारण किया तो वह स्वय कहा था? रावण की पत्नी मन्दोदरी को विभीषण ने ग्रपनी पत्नी कैसे बना लिया ग्रादि। इस प्रकार राम की श्रवतारवादिता ग्रौर विविध श्रस्वाभाविकताश्रों को लेकर जैन ग्रौर वैदिक परम्परा की राम-कथा में बहुत सारे मौलिक भेद ग्रा जाते हैं।

वैदिक रामायलों मे कथा-भेद

रामायण का कथा-भेद एकमात्र परम्परा-भेद पर ही श्राघारित है, ऐसी वात नहीं है। एक-एक परम्परा में भी राम-कथा की विभिन्न धाराए हैं। प्रत्येक रचिंदाा प्राय कुछ न कुछ श्रपनी श्रोर से जोडता ही है। किन इसे श्रपना मौलिक श्रिषकार भी मानता है। मीता को रावण किस प्रकार उठा कर ले गया, इस विषय में किनयों ने श्रपनी सूभ-नूभ के श्रनुसार नाना श्रुक्तिया काम में ली। सीता सती थी। स्वेच्छा से ही रावण के साथ जाने के लिए चरण नहीं बढ़ा सकती थी। रावण बलात् उसे उठाकर ले जाता है, तो पर-पुरुष के स्पर्श-दोष से वह दूषित होती है। इस मम्बन्ध में सबसे निराली उक्ति यह है कि सीता जिम भोपडी में रहती थी, रावण पृथ्वी खण्ड के साथ उम भोपडी को ज्यों का त्यों उठाकर ले गया।

१ पराविष्पिण जिणु तगाय-मरारेण । पुण पुच्छित गोतमसामि तेरा ॥
परमेसर पर-सासर्गोहं सुट्यय विवरेरी ।
कहे जिरा-सासर्गे केम थिय कह राहव-केरी ॥
जगे लोएहं ढक्क रिवन्तर्गहं । उप्पाइज भिन्तज भन्तर्गहं ॥
जइ कुम्मे घरियज घरिंग-बोढु । तो कुम्मु पजन्तज केरा गीढु ॥
जइ रामहो तिहुश्च उवरे माइ । तो रावणु काँह तिय लेवि जाइ ॥
श्रण्णु वि खरबूसररा-समरे वेष । पहु जुज्भइ निच्चु केंच ॥
किह तियमइ-कारर्गे किववरेरा । वाइज्जइ वालि सहोयरेरा ॥
किह वारार गिरिवर उद्यहन्ति । वन्धेवि मयरहरु समुत्तरन्ति ॥
किह रावणु वहमुह वीस हत्यु । श्रमराहिब-भुव-वन्धरा समत्यु ॥
विसद्ध सुग्रइ किह कुम्भयण्णु । महिसाको डिहि निरा धाइ श्रण्णु ॥
ज परिसेसिज दइवयणु । पर-रारोहि समणु ।
सो मन्दोवरि जर्गागि-सम, केइ लेइ विहीसगा ॥

[—]विज्जाहरकाष्ट, सिव ६-१०

वह कया-भेद बाचार्य भी तुलसी ने स्वयं नहीं किया है, परन्तु जन बौर वैदिक रामायहों का यह परम्परागत मेद है। बोबों परम्पराभों की राम-कवा में भादि से बन्त तक एकक्पता भी है तो बादि से धन्त तक बनेकक्पता भी । सभी पार्ची 🤻 थार्मिक बाबार हो बदल ही बाते हैं साब-साब उनके बबान्तर बटना-प्रसंय भी। दोनों परम्परामों की राम-कमा का तुलनारमक सम्ययन सबस्य एक रोचक सीर ज्ञानवर्षक विषय बनता है परन्तु प्रस्तुत प्रतंत्र में वह विस्तार क्षम्य नहीं है। दोनों परम्परामों की क्या में उस्तेवानीय मेद तो यह है कि वैदिक परम्परा में क्रमक राम को बहा का स्वक्रम दे दिवा जाता है और जैन परम्परा धवतारवाद की हिमानती नहीं है. यद बसर्ने प्राइट समायकों से से कर बर्तमान की समायकों दक भी सम एक पूरव महापूरव व वासूदेव सहमात के क्येष्ट बन्धू बतादेव ही माने जाते हैं। वे बहुान राजा ने इससिये पर्णनीय नहीं धरितुनीवन के धरत में सन्होंने मुनित्न धर्म स्वीकार किया भीर सर्वेत्र होकर मोक्षपाम पहुंचे इसक्षित्रे ने जैन जगत् के धर्यनीय भीर बपासनीय है। वैदिक परम्परा में राम-कवा का बादि बन्द बास्मीकि रामायरा है। पतके बाद ही मह कवा महाभारत व चन्य पुराक्त प्रन्तों में चाई, ऐसा नाना भाता है। बारमीकि ने राम को एक महामानव के रूप में ही प्रस्तृत किया है। मार्थि से भन्त तक राम एक मानव रहते हैं। उनमें ईश्वरक्षा का सारीप कवि में कहीं नहीं होते दिया है । भाष्यारम रामायस में राम के ब्रह्मस्य की मांकी मिलती है बीर भक्त कवि तुवती के राम चरित मानस में तो "सिया राम मय सब जय जानि" का साबि से बन्द दक निर्वाह निमता है। भाज के बुखि-प्रवान युग में जैन रागायलें बुखियम्यता की विद्यों में समिक प्रचस्त मानी कई हैं। वहां श्रविकांश नटनाएं स्वाजानिक सीए सन्मन कर में भिनती है। बदाहरलार्च-चेदिक राजायांगों में राजाग के दस मुख माने पये हैं, इसीमिए बराकन्यर, बसानन बसनुस आदि नाम उसके प्रवसित हुए हैं पेखा नहां जाता है। जैन रामायलों में रायल के बचानन कहनाने का बर्लन इस प्रकार है- बचपन में रावण एक बार वेलते-नेसते अव्हार में पहुंच गया । वहां उत दोपदबाहुन का द्वार मिल गया । उसमें नी मिलावां जड़ी हु⁸ वी जिनमें से अस्पेक वित्र ने पहनने वासे का मुख प्रतिविधिकत होता वा । रावण ने बास-सीता ने पर स्रक्ष कर पहन निया भीर तभी से नीन प्रते ब्यानन कहने नने । कुछ एक पैन रामायानों के प्रारम्भ में ही बेदिन रामायानों में कही यह बाजानाविक बादों की धालीचना नी गई है। स्वयंबुहुत पडमचरिड में नोशिन भनवान महाबीर से राज

१ वरिष्ठिक छण-नुहर समुदित्यई। त्यं गहबिन्यई मुनारिद्विक। वेस्त्रेपिय लाक बहाराखई विस्तारक सरमाई सोवदाक। से बहुनुह बहुनिक वालील किक वंबालना क्षेत्र वर्तिक यक।

कथा कहने का अनुरोध करते हैं और जिज्ञासा के रूप मे वैदिक परम्परा में चलनेवाली असगितयों को भी अस्तुत करते हैं। उनमें मुख्य जिज्ञासाए हैं—रावण के दशमुख और वीस हाथ कैसे हैं कुम्भकरण छ महीने तक कैसे सोता या और करोड़ों महिप कैसे खा जाता था किम ने पृथ्वी को अपनी पीठ पर धारण किया तो वह स्वय कहा था रावण की पत्नी मन्दोदरी को विभीषण ने अपनी पत्नी कैसे बना लिया आदि। उस प्रकार राम की अवतारवादिता और विविध अस्वामाविकताओं को लेकर जैन और वैदिक परम्परा की राम-कथा में बहुत सारे मौलिक भेद आ जाते हैं।

वैदिक रामायगो मे कथा-भेद

रामायण का कथा-भेद एकमात्र परम्परा-भेद पर ही श्राघारित है, ऐसी वात नहीं है। एक-एक परम्परा में भी राम-कथा की विभिन्न घाराए हैं। प्रत्येक रचिंदार प्राय कुछ न कुछ श्रपनी श्रीर से जोडता ही है। किन इसे श्रपना मौलिक श्रिषकार भी मानता है। मीता को रावण किस प्रकार उठा कर ले गया, इस विषय में किनयों ने श्रपनी सूभ-नूभ के श्रनुसार नाना युक्तिया काम में ली। सीता सती थी। स्वेच्छा से ही रावण के साथ जाने के लिए चरण नहीं बढ़ा सकती थी। रावण बलात् उसे उठाकर ले जाता है, तो पर पुरुष के स्पर्श-दोष से वह दूषित होती है। इस सम्बन्ध में सबसे निराली उक्ति यह है कि सीता जिस भौपडी में रहती थी, रावण पृथ्वी खण्ड के साथ उम भोपडी को ज्यो का त्यो उठाकर ले गया।

१ परावेष्पिश्च जिल्ल तगाय-मरागेगा । पुश्च पुन्छि उगोत्तमसामि तेगा ।।

परमेसर पर-सासर्गोहं सुख्वय विवरेरी ।

कहे जिर्ण-सासर्गो केम थिय कह राहव-केरी ।।

जगे लोए हिं ढक्क रिवन्तए हिं। उप्पाइउ भन्तिउ भन्तए हिं।।

जइ कुम्मे धरियउ घरिंग-बोढ़ । तो कुम्मु पउन्तउ केरा गीढ़ ॥

जइ रामहो तिहु अर्थ उबरे माइ । तो रावश्च कहिं तिय लेवि जाइ ॥

प्रण्णु वि खरदूसरर्ग-समरे देव। पहु जुज्मइ निच्चु केंव ॥

किह तियमइ-कारर्गो किषवरेगा । वाइज्जइ वालि सहोयरेगा ॥

किह वाग्गर गिरिवर उज्वहन्ति । वन्धेवि मयरहरु समुत्तरन्त ॥

किह रावश्च वहमुह बीस हत्थु । अमराहिव-भुव-वन्ध्या समत्यु ॥

विरसद्ध सुग्रइ किह कुम्मयण्यु । महिसाको हिहि निर्ण धाइ अर्ण्यु ॥

ज परिसेसिउ दइवयग्रु । पर-गारी हिं समग्यु ।

सो मन्दोवरि जगागि-सम, केइ लेइ विहोसग्।।

[—]विज्जाहरकाट, सबि ६-१०

बहु कवा भेद भावार्व भी तुलसी ने स्वत नहीं किया है, परस्तु जन धौर वैदितः रामायलों का सह परम्परागत भेद हैं। दोनों परम्पराधी की राम-क्या में बादि से धन्त तक एकस्पता भी है तो बादि से धन्त तक बनेककपता भी । सबी पार्थों के भामिक भावार तो बदस ही बाते हैं, साव-साव उनके भ्रवास्तर बटना प्रसंग भी। दोनों परम्पराधों की राम-कथा का तुलनात्मक ध्रम्ययन धवस्य एक रोचक धीर बानवर्षक विषय बनता है परन्तु प्रस्तुत प्रसंत में वह विस्तार अस्य नहीं है। दोनों परम्परोमों की कमा में उल्लेखनीव भेद हो यह है कि वैदिक परम्परा में कमत प्रम को बहा का स्वरूप दे दिया जाता है और भौगे परम्परा सबतारवाद की हिमावती नहीं है, बता उसमें प्राइत समावणों से में कर वर्तमान की समायणों तक भी सम एक पूरन महापूरन न वापुरेन सहमता के ज्वेष्ठ बल्ब बसदेव ही माने बादे हैं। वे महान राजा ने इसतिये अर्चनीय नहीं अपितु बीवन के अन्त में उन्होंने मुनित्व यम स्वीकार किया और सबज होकर मोसवाम पहुंची इसलिये ने बैस वयद के घर्षतीय बीर बपास्तीन हैं। वैदिक परस्परा में राम-कवा का बादि प्रश्व बास्मीकि रामायल है। उदके बाद ही वह क्या महानारत व संस्थ पुरास प्रत्यों में साई, ऐसा माना जाता है। वास्मीकि ने पाम को एक महामानव के क्या में ही प्रस्तुत किया है। सारि सं सन्त शक राम एक मानव रहते हैं। जनमें ईस्वरता का बारोप कवि में कहीं नहीं होते दिया है। मान्यास्य रामायल में राम के बहाक्य की भर्मकी निसरी है और मस्त कवि दुवसी के राम चर्चित मानस में तो 'सिया' राम मय तब बन बानि' का साबि से धन्त तक निर्वाह निवास है। साथ के बुद्धि-प्रवान पुग में जैन रामावर्गे बुद्धिनव्यता की विक्रों में धविक प्रसस्त मानी यह हैं। वहां धविकांच चटनाए स्वामाविक सौर सम्मव रूप में निवती है। बदाहरलार्च-चेहिक समायलों में सवल के दत मुख माने नवे हैं, इसीसिए स्वकन्यर, बसानत इसमूब साहि नाम उसके प्रविति हुए हैं पेसा कहा बाता है। भीन रामायणों में रावण के दसानन कहनाने का नर्सन इस प्रकार है — नवपन में रानक एक बार बेसते-बेलते सरदार में पहुंच गना । नहां जसे शोयववाहन का हार मिल क्या । असमें भी मरिएयां कड़ी हु भी जिनमें से प्रत्येक मिस में पहनते वामे का मुख प्रतिविभित्रत होता था। एवया ने बाल-कीना में उसे क्य कर पहन सिया और वसी से सीन उसे ब्यानन कहते सने । कुछ एक जैन रामायलों के प्रारम्भ में ही बैक्ति रामायलों में कही यह प्रात्मानानिक नायों की धालोधना की नई है। स्ववंस्कृत प्रजमकरित में कोशिक अनवान महावीर से राम

१ परिष्ठित छन-मृत्य समृदिस्पर्धः । सं बहुनिस्पर्धं तु-गरिद्धितः । वेनकेपित्वः सार्वे बहुत्सरुष्ठः पिर-सारस्य सरस्यं सोस्स्यः । सं बहुतः बहुनित्र

वारह वर्ष पूरे, होने पर राम राजधानी में ग्राये। उनका राज्याभिषेक हुग्रा। श्रपनी विहन सीता के साथ उन्होंने व्याह कर लिया। सोलह हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। उस जन्म में स्वय वृद्ध राम थे। वृद्ध के पिता राजा शुद्धोदन दशरथ थे। उनकी माता महामाया राजा दशरथ की प्रथम पटरानी थी। वृद्ध की पत्नी मीता थी। उनके प्रधान शिष्य ग्रानन्द भरत थे ग्रीर सारिपुत्त लक्ष्मण।

दशरथ जातक की राम-कथा में सबसे विलक्षण बात राम की अपनी संगी बहिन सीता के साथ विवाह करने की है।

ग्रन्थकार ने इस विवाह सम्बन्ध को हीन भावना से नही लिखा है। इसका कारण यह हो सकता है कि विभिन्न देश कालों में विवाह सम्बन्ध की विविध प्रणा-लिया प्रचलित रही है। जैन मान्यता के श्रनुसार यौगलिक जीवन में संगे भाई वहिन ही विवाह-श्रवस्था पाकर दाम्पितक जीवन में वदल जाते थे। ऐतिहासिक धारणा के श्रनुसार शाक्य वशीय राज परिवारों में राजवंश की शुद्धता सुरक्षित रखने के लिये, भाई श्रीर वहिन को भी परस्पर व्याह दिया जाता था। बुद्ध स्वय शाक्य वशी थे। ग्रत उनके पूर्व जन्म के वृत्तों में इस प्रकार के उल्लेख का होना नितान्त ग्रस्वाभाविक नहीं रह जाता।

जैन रामायरों मे कथा-भेद

जैन रामाय एों में भी राम-कथा के दो रूप मिलते हैं, एक विमलसूरि कृत पजमचिरय व रविषेण कृत पद्मचरित्र का और दूसरा गुणभद्राचार्य के उत्तरपूराण का। प्रथम परम्परा जैनो मे भ्राजकल सर्वमान्य भ्रौर सवविदित जैसी है। उत्तर पुराण की राम-कथा श्रद्भुत रामायण की याद दिला देनेवाली है। उसमे वताया गया है - राजा दशरथ वारागासी के राजा थे। राम की माता का नाम सुवाला श्रीर लक्ष्मरण की माता का नाम केकेयी था। भरत श्रीर शत्रुघ्न की माता का नामो-ल्लेख ही नहीं है। किसी श्रन्य रानी से उत्पन्न हुए, ऐसा लिखा है। सीता मन्दोदरी के गर्म से उत्पन्न हुई थी । नैमित्तिको ने उसके सम्बन्ध मे रावरा के सामने भविष्य वार्गी की कि भ्रागे चलकर यह कुल नाशकारिग्गी होगी। रावगा ने श्रपनी पुत्री सीता को मञ्जूषा मे रखवाकर मिथिला के ग्रास-पास जमीन मे गडवा दिया। सयोगवश हल की नोक मे उलभ जाने से वह जनक राजा को मिल गई । जनक ने उसे पुत्रीवत् -पालापोषा । सीता जब विवाह योग्य हुई तो जनक ने एक यज्ञ किया । राम-लक्ष्मगा को वहा श्राग्रहपूर्वक बुलवाया श्रौर राम के साथ सीता का विवाह भी कर दिया। यज्ञ के समय रावरण को श्रामत्रण नहीं भेजा गया, इससे वह श्रत्यन्त क्षुब्व हो गया। श्रागे चलकर नारद के द्वारा उसने सीता के रूप की चर्चा भी सुनी श्रीर वह उसे उठा ले गया।

इस रामायरा मे राम-वनवास का कोई वर्रान नही है। वारारासी के निकट

मानन्द रामायण भद्भुत रामायण तुससी रामायण मादि धनेको रामायण पन निवे गर्न है। धर्मुत रामायण ना कवा-भेद बहुत संसावारण है। सीता की उत्पत्ति न निपय में उसमें जिल्ला गया है -- ग्रासमद नामक एक ऋषि दश्वकारण्य में एहंदे थ । उनकी हत्री बाहुरी भी कि मेरे गर्म से साक्षात् कक्सी स्वकृपा करवा सरपन हो । उसके भाग्रह पर ऋषि उसी भन्दरान में समे । वे प्रतिदिन दुव को धरिमंत्रित कर बड़े में कामते वे । एक दिन राजागँ इसी बन प्रदेश में भागमाँ। उसनै ऋषि पर जिज्य प्राप्त करना चाहा अतः ऋषि के सधीर में मारण नी नोक भूभा भूभा कर मूर-पूर करन रक्त निकासा और अस बुव के मड़े की पूरा भर तिया। वह वड़ा बसने मन्दोर्टर को साकर दिया भीर कहा-स्थान रसना यह निपक्तम है। मन्दोक्य उन विनो रामण हे प्राप्तस्य भी । उसने सोचा-मेरा पठि प्रत्य स्त्रिकों के साथ रमण तरता है ऐसी स्थिति में सुभे सर जाना ही भक्ता है। उसने बहुरक्त मिश्रित दूर पी सिया । उत्तत बहु गरी नो नहीं प्रस्तुत पर्मवती हो गई। पति की धनुपरिवर्ति से संगर्भा हो जाने से वह उसे प्रकट नहीं कर पाई। प्रमद-भान में वह विमान अध कुस्क्रीय म बसी गई थीर बहा सीता का जम्म दिया । जन्मते ही उसे उसने अमीत मे माइ दिया और पून संका सीट धाई। इस जोतने भी किया में सीठा जगन ने हैं व मनी । उन्होंने उसे पत्री मानकर पाना-गोपा ।

बैविक परम्परा म बाहमीकि रामायण क प्रतिरिक्त ग्राम्यातम रामायस

बौद्ध रामाग्राय में

वारह वर्षं पूरे होने पर राम राजधानी मे भ्राये। उनका राज्याभिषेक हुम्रा। भ्रपनी विहन सीता के साथ उन्होंने व्याह कर लिया। सोलह हजार वर्षे तक राज्य करते रहे। उस जन्म मे स्वय बुद्ध राम थे। बुद्ध के पिता राजा शुद्धोदन दशरथ थे। उनकी माता महामाया राजा दशरथ की प्रथम पटरानी थी। बुद्ध की पत्नी मीता थी। उनके प्रधान किष्य भ्रानन्द भरत थे भ्रीर सारिपुत्त लक्ष्मण्।

दशरथ जातक की राम-कथा में सबसे विलक्षण वात राम की श्रपनी सगी वहिन मीता के साथ विवाह करने की है।

ग्रन्थकार ने इस विवाह सम्बन्ध को हीन भावना से नहीं लिखा है। इसका कारण यह हो। सकता है कि विभिन्न देश कालों में विवाह सम्बन्ध की विविध प्रणा- लिया प्रचलित रहीं हैं। जैन मान्यता के प्रनुसार यौगलिक जीवन में सगे भाई विहन ही विवाह-ग्रवस्था पाकर दाम्पितक जीवन में बदल जाते थे। ऐतिहासिक धारणा के श्रनुसार शाक्य वशीय राज परिवारों में राजवश की शुद्धता सुरक्षित रखने के लिये, भाई श्रीर विहन को भी परस्पर व्याह दिया जाता था। बुद्ध स्वय शाक्य वशी थे। श्रत उनके पूर्व जन्म के वृत्तों में इस प्रकार के उल्लेख का होना नितान्त श्रस्वामाविक नहीं रह जाता।

जैन रामायर्गों में कथा-भेद

जैन रामायगों में भी राम-कथा के दो रूप मिलते हैं, एक विमलसूरि कृत पडमचरिय व रिविपेश कृत पद्मचरित्र का श्रीर दूसरा गुरामद्राचार्य के उत्तरपुराश पडमचारव प उन्हें प्रशास के माजकल सर्वमान्य भ्रोर सवविदित जैसी है। उत्तर का । प्रथम पर पर । पत्तर पूराण की याद दिला देनेवाली है । उसमें वताया पूरासा का रामन्यता तर्जा वताया गया है—राजा दशरथ वारासासी के राजा थे। राम की माता का नाम सुबाला श्रीर गया ह—राजा ५२०० भूषाला ग्रार लक्ष्मणा की माता का नामो केकेयी था। भरत और शत्रुघ्न की माता का नामो-लक्ष्मरण का नाता का का नामा-ल्लेख ही नहीं है। किसी अन्य रानी से उत्पन्न हुए, ऐसा लिखा है। सीता मन्दोदरी त्लेख हा नहा हा। जारा निमित्तिको ने उसके सम्बन्ध मे रावसा के सामने मेविष्य वासी को कि आप प्राप्त । जा के ग्रास-पास जमीन मे गडवा दिया। सयोगवश को मञ्जूषा मे रखवाकर मिथिला के ग्रास-पास जमीन मे गडवा दिया। सयोगवश हल की नोक म उलक जाता. -पालापोपा । सीता जब विवाह योग्य हुई तो जनक ने एक यज्ञ किया । राम-लक्ष्मण को वहा श्राग्रहपूर्वक वुलवाना जार के समय रावण को श्रामत्रण नहीं भेजा गया, इसमें वह श्रत्यन्त क्षुब्ध हो गया। के समय रावण को श्रामत्रण नहीं भेजा के रूप की चर्चा भी सनी श्रीय — के समय रावरा का श्रामतरण गरूर हो गया। श्रागे चलकर नारद के द्वारा उसने सीता के रूप की चर्चा भी सूनी श्रौर वह उसे उठा ले गया।

। इस रामायरा में राम-बनवास का कोई बरान नहीं है। वारासासी के निकट ही विवहर नामक बन से रावस सीडा को से गया था। सीडा को पून बनवाड के की मीर समिल्यदेशा की बटना का भी इब रामायस में कोई उस्तेष्ठ नहीं है। नक्षमण एक महाम्य रोग से पीड़िन होकर स्वीर कोड़ देते हैं। राम इस बटना से पुर्वेचन होकर समेक राजामां मीर मामने सीडा का सिटा रामियों के साथ जैनी सीडा के सीडे हैं।

मुणमानावंहत वत्तरपुण्यु की यह एम-कना क्षेतास्त्र संग्रहाय में प्रव मित नहीं है। विगल्द वरस्त्रा में एम-कना की एक लाए यह पहीं है। यहाकि दिस्कल में भी सपने उत्तरपुराख में बहै राम-कना नित्ती है। कम्ह की बैन रामायल नामृंक एम-पुराख में की एम कना की हुरी परस्या को प्रवासा नहां है। विनयद समान में भी मह परस्यार विरस कम थे रही है। मुख्य परस्या तो सेता सद व दिसन्दर होनों समानों में प्रमण्याप्त सिर व्हमन्दित वाली एम-कना की ही पहीं है।

 प्रश्न हा प्रकार जैस जीद और विदेश इन तीनों ही परम्पदायों के क्या नेर की नहर ही करत थीर रोक्त कहानी है।

काव्य-समीक्षा

यिन-परीक्षा का कवा प्रवंग मृतक विश्वतपूर्त कुठ पश्चमवित्व की पानायए परम्पत ने सन्तव है। जैन पाठकों के सिथे प्रीन-परीक्षा का कथा प्रतंग वित्त विरिचन का है। इसर पाठकों के सिथे सीता के बहोदर प्रामम्बत अरख-नात का संस्कर कृत राजा बनायंव पादि कुछ एक पाद निवास्त नदीन ही होंगे। तथापि कवा-सन्तु भी विश्वतिक के तही है।

यो जैनिकीसरेश गुरू का बहाकास्य साकेत प्रयोग्यायम्य के प्रशंप पर पूर्ण हेगा है और सावार थी जुकती का यह प्रशंत काल्य प्रतिन्नरीका हती प्रवेत से सारास देश होगे ही कालों की मात्रा करता और सरक्ष हिन्दी है। दोनों काल्य की मात्रा करता और हता हिन्दी है। दोनों काल्य जिनकर वालों सनव राजायण के पूर्वार्थ और उत्तरामं का बाति है। वालैक के धिनम सबंग व पानिन्नरीका के सार्वि प्रशंत होगें कालों की पहना वैती की गरगते के सहते उत्तरहरण बनते हैं। सावेत के प्राव भी प्रशंत प्रता परसर विवाद है—

बर विवाद से दूर पवड़ से प्यों प्रयोग्यन

निने नरव से एन सिविब में किला-नान सन ! कि बार्ड तुन तका न तुन से एम लड़ा है तेग पनड़ा कहा भूनि वर पान पड़ा है! पत्र चहुरिय वर्ष वका से नहीं घनता से दिवस गिरि-नन-तिन्यु-गर लंका के रता है। श्रान्त ग्राज एकान्त-रूप-सा पाकर तुमको, उठ, भाई, उठ, भेंट, ग्रक मे भर ले मुमको। में वन मे जाकर हसा, किन्तु घर श्राकर रोया, खोकर रोये सभी, भरत, में पाकर रोया!

मिन-परीक्षा के राम श्रीर भरत मिलते हैं-

ग्राया ग्रवनी पर ग्रभ्र-यान राधव-नक्ष्मण नीचे उतरे, थ्रा मातृभूमि के अचल मे चेहरे निखरे उल्लास भरे, वालकवत् दौड भरत भाई गिर गए राम के चरणों में, खोए-खोए से हृदय हुए पिछले सुमधुर सस्मरगो मे। भविराम राम पादाम्बुज को नयनाम्बज से वे सीच रहे, वाहो मे भरकर ग्रवरज को अग्रज ऊपर को खीच रहे, शर पर रक्खा है वरद हस्त श्रत्यन्त स्नेह से गले लगा. भरतेश विरह सव भूल गए श्रन्तर मे नव श्राह्लाद जगा।

एक दूसरे के प्रति, दोनो श्रनिमिष दृष्टि निहार रहे, बहा-बहा पानी पलको से मन का भार उतार रहे। मुखरित मोद, भावना मुखरित, किन्तु हो रही वाणी मौन, श्रानन्दाव्यि निमञ्जित मानस, दोनो मे कम वेसी कौन?

साकेत के राम चरगों में गिरे भरत को उठाकर बाह भरने का श्रनुरोघ करते हैं तो श्रग्नि-परीक्षा के राम—''वाहों में भरकर श्रवरण को श्रग्नज ऊपर को खींच रहें' यो श्रपनी वाहों में उसे भरने को ही प्रयत्नशील है। दोनों ही काव्यों की मावाभिव्यजना श्रपनी-श्रपनी स्थिति में श्रप्रतिम हैं।

साकेत के राम कहते हैं कि तेरा पलडा भारी है। वह जमीन पर टिका है तो भग्नि-परीक्षा के राम, राज्य-ग्रहण के प्रसग पर कहते हैं—

> इस सारी जनता ने तुमको नैसर्गिक शासक माना है। हमने भी तेरा पूर्णतया अब सही रूप पहिचाना है।

ही विशक्त नामक बन से रावसा सीका को से गया था। सीका को पून बनवास देन की भीर प्रानित्यरोखा की बटना का भी इस रामायस में कोई स्वसेख नहीं है। सबस्या एक प्रसाप्य रोज से पीड़िस होकर स्वरीर कोड़ देते हैं। राज इस बटना से दुनिस होकर मनेक राजामी भीर माननी सीका मादि सानितों के साम बैनी सीका से सैते हैं।

तुरमहावार्यक्रय उत्तरपुराय की यह राम-कवा कीवास्तर एउपवाय में प्रव मिय नहीं है। विरान्तर परम्परा में राम-कवा की एक वारा यह रही है। महाकरि प्रवस्ता में भी पाने करायुराय में यह राम-कवा कि बी है। कलाई की बेग रामायण वार्यूट राम-पुराय में यो राम कवा की हों परम्परा को प्रवस्ता पाने हैं। विरान्तर सामा में भी सहपरमारा किरण करा के रही है। मुक्स परम्परा को विरान्त महर व विवस्तर वोगों स्वावों में पड़मचरित्र और ववृश्वपित्र वाली राम-कवा की है। यह है।

इस प्रकार चैन बीड चौर वैदिक इन गीओं ही परम्पणचों के क्या भेद की बहुत ही चरव मौर रोचक कहानी है।

काम्प-समीका

यिन-परीका का कवा प्रशंस मुलतः विम्तसूरि इट पक्षमवरिक की रामामण परमाप वे शमक है। योग पाठकों के सिये प्राम-परीका का क्या-असंग किर परिविध-का है। हार पाठकों के सिये धीता के शहीदर प्रामायक सर्या-मास का संस्का-वानु रामा व्यवसंद भारि कुछ एक पात्र नितानत नवीन ही होने। त्यारि क्या-वाद् में कीई मीतिक केद नहीं है।

भी भीपितीबरेश गुन्त का बहाकाम्य साकेत प्रयोग्यासमा के प्रधंन पर दूरों होता है और सामार्स भी तुमसी का यह प्रशीत काम्य धीन-परीजा इसी प्रधंस के प्रारम्भ होता है। होनों ही काम्यों की भाषा तरस सीर कहन हिन्दी है। रोगों काम्य विकार बाजों समझ रामायश के यूपीर्च और स्वराध बना बाते हैं। स्थित के धीनत मसंग द सीन-परीजा के माहि सर्गा होनों काम्यों की क्वा से होते हो रापने के समूद्रे स्वाहरण बनते हैं। साकेत के राम सीर मस्त प्रस्तार निकारे हैं—

वर विमान से इव जब है को पुरुरोतन मिले भक्त है चम श्वितिक में सिल्ल-नाल छन ! ज्यु आई, युन छवा न युक्त छे छम बड़ा है तेस जनहां बड़ा नि वर साव पड़ा है! एवं चुक्त वर्ष वन में नहीं अस्म से में विचय विस्थित-तिल्लामार लंडा के रहा है! श्रान्त ग्राज एकान्त-रूप-सा पाकर तुमको, उठ, माई, उठ, भेंट, ग्रक मे भर ले मुमको। मैं वन मे जाकर हसा, किन्तु घर ग्राकर रोया, खोकर रोये सभी, भरत, मैं पाकर रोया। भिन-परीक्षा के राम ग्रीर भरत मिलते हैं—

ग्राया भ्रवनी पर श्रभ्र-यान राधव-नक्ष्मण नीचे उतरे, थ्रा मातृभूमि के भ्रचल मे चेहरे निखरे उल्लास भरे, वालकवत् दौड भरत भाई गिर गए राम के चरणों में, खोए-खोए से हृदय हुए पिछले सुमधूर मस्मरणो मे। श्रविराम राम पादाम्बुज को नयनाम्बुज से वे सीच रहे, वाही मे भरकर अवरज को श्रग्रज ऊपर को खीच रहे, शर पर रक्खा है वरद हस्त श्रत्यन्त स्नेह से गले लगा, भरतेश विरह सब भूल गए श्रन्तर मे नव श्राह्माद जगा।

एक दूसरे के प्रति, दोनो श्रनिमिष दृष्टि निहार रहे, वहा-बहा पानी पलको से मन का भार उतार रहे। मुखरित मोद, भावना मुखरित, किन्तु हो रही वाणी मौन, श्रानन्दा व्यि निमज्जित मानस, दोनो मे कम वेसी कौन?

साकेत के राम चरणों में गिरे भरत को उठाकर बाह भरने का अनुरोध करते हैं तो अग्नि-परीक्षा के राम—"बाहों में भरकर अवरज को अग्रज ऊपर को खींच रहें" यों अपनी बाहों में उसे भरने को ही प्रयत्नशील है। दोनों ही काव्यों की भावाभिव्यंजना अपनी-अपनी स्थिति में अप्रतिम हैं।

साकेत के राम कहते हैं कि तेरा पलडा भारी हैं। वह जमीन पर टिका है तो भग्नि-परीक्षा के राम, राज्य-ग्रहण के प्रसग पर कहते हैं—

इस सारी जनता ने तुक्तको नैसर्गिक शासक माना है। हमने भी तेरा पूर्णतया श्रव सही रूप पहिचाना हैं। ही विषक्षर नामक बन के चाया गीता को से गया था। शीता को तुगः बनकाय देवे की भीर अभि-अधिका की भटना का भी इस समायस में कोई कालेक नहीं है। मध्यस्य एक बसाम्य रोग से पीड़ित होकर सरीर क्षोड़ केते हैं। स्व इस बटना के इवित होकर मनेक समायों भीर अपनी शीता भावि स्तिनहों के साम कैते हैं।

पुणमाष्ममंद्रय वसरपुण्या की यह यक कवा स्वेतामार बायमान में प्रव तित नहीं है। विस्तार वस्त्या में राम-कवा की एक बाय यह पते है। महस्त्रति पृण्यत्य में भी धरने उत्तरपुष्य में यही राम-कवा निस्त्री है। महस्त्रति की चैन रामाच्य वार्ष्य एक-पूराय में भी राम कवाकी हती करान्य की धरवाया समा है। विस्तर समान में भी नह परमाण विराम क्य के रही है। मुख्य परम्पा तो होता नार व विस्त्रत होनों समाकों में प्रमानविस और पद्मानविस वाली एम-कवा की ही पति है।

रंस प्रकार चैन जीव धीर वैदिक इन नीतों ही परम्पराधों के कवर मेर की बहुत ही सरस धीर रोषक कहानी है।

काब्य-समीक्षा योज-रायेका का बना प्रयंत्र मुनदा विम्तवपूरि क्ष्य प्रवस्त्रवादित की रामान्त्र परम्परा से सम्बद्ध है। बीत शरूनी के सिन्ध योजन्यादीका का क्षान्यमुंग पित रायिका साहे । क्षर राजनी के सिन्ध सीका के प्रतिकार आस्त्रवाद्ध प्रत्यानात का रिस्कि वन्त्र पना नयानेक साहि कुछ एक पात निशास नवीन ही होने । स्वारि कर्नान्स्त्

में कोई सीकिक केद नहीं है। भी मैंपिनीसराग गृत्व का महाकाव्य ताकेत स्वोध्यायसन के असंग पर पूर्व होता है पौर भाषार्थ भी तुमसी का यह असीठ कान्य भ्रमित परीत्ता इसी महेन से भारत्न होता है। दोनों ही कान्यों की माना सरस सीन परीत्ता हो। महेन से मिक्कर मार्थे

इता है और भाजारों भी तुमती का यह जारीत कान्य भ्रामित परीला इती महेंच ये भारत्क हैंचा है। दोनों ही कान्यों की माता बत्या और बरक हिन्दी है। दोनों कान्य मिककर यात्रों समझ रामायात के पूर्वीच और उत्तराप्यें कम काते हैं। कोने के भ्रामित प्रतान व मानि-परीया के मादि प्रयोग होगी कान्यों की रचना केनी को प्रस्कर के अपूर्त अवस्थारक नगते हैं। सावेश के राम और परात परस्पर सिक्से हैं—

के बहुंटे व्यवस्त नगते हैं। वास्त्र के एम और क्या प्रस्तर निकसे हैं—

वर निमान से हुर नक्क से क्यों पुक्लोहन

मिले क्या से एक एक सिलिव में दिल्ल-मनन एन !

केट काई पुन एक न्तुप्ति एन बना है

तैरा पानक का मुन्नि पर साथ पड़ा है!

सर्वे क्यांच ने क्या में नहीं क्या में

निमार गिरिनम-निम्न-सर संका के रहा से ;

श्रान्त श्राण एकान्त-रूप-सा पाकर तुमको, उठ, भाई, उठ, भेंट, श्रक मे भर ले मुक्तको। मैं वन मे जाकर हसा, किन्तु घर श्राकर रोया, खोकर रोये सभी, भरत, मैं पाकर रोया।

अग्नि-परीक्षा के राम श्रीर भरत मिलते हैं-

ग्राया ग्रवनी पर ग्रभ्र-यान राघव-नक्ष्मरा नीचे उतरे, मातृभूमि के अचल मे चेहरे निखरे उल्लास भरे, बालकवत् दौड भरत भाई गिर गए राम के चरणों में, खोए-खोए से हृदय हुए पिछले सुमधुर सस्मरगों मे। भविराम राम पादाम्बुज को नयनाम्बुज से वे सीच रहे, वाही में भरकर ग्रवरज को भ्रग्रज ऊपर को खीच रहे, शर पर रक्खा है वरद हस्त श्रत्यन्त स्नेह से गले लगा , भरतेश विरह सव भूल गए थ्रन्तर मे नव भ्राह्लाद जगा।

एक दूसरे के प्रति, दोनो श्रनिमिष दृष्टि निहार रहे, वहा-बहा पानी पलको से मन का भार उतार रहे। मुखरित मोद, भावना मुखरित, किन्तु हो रही वाणी मौन, श्रानन्दाब्धि निमज्जित मानस, दोनो मे कम बेसी कौन?

साकेत के राम चरगों में गिरे भरत को उठाकर बाह भरने का अनुरोव करते हैं तो अग्नि-परीक्षा के राम—''बाहों में भरकर अवरज को अग्रज ऊपर को खींच रहें' यों अपनी वाहों में उसे भरने को ही प्रयत्नशील है। दोनों ही काव्यों की भावाभिव्यंजना अपनी-अपनी स्थिति में अप्रतिम हैं।

साकेत के राम कहते हैं कि तेरा पलडा भारी हैं। वह जमीन पर टिका है तो प्रग्नि-परीक्षा के राम, राज्य-प्रहरा के प्रसग पर कहते हैं—

इस सारी जनता ने तुमको नैसिंगक शासक माना है। हमने भी तेरा पूर्णतया भव सही रूप पहिचाना हैं। की भीर प्रानि-गरीसा की घटना का भी इस रामायल में कोई उस्तेख नहीं है। सब्मण एक संसाध्य रोग है पीड़ित होकर धरीर छोड़ देते हैं। राम इस वटना से दुर्जित होकर पनेक राजाओं और सपनी शीता शादि रानियों के साथ पैनी दीशा में 神音 書 1 दुखनमाबार्वकृत उत्तरपुराण की यह राम-भवा स्वेताम्बर सम्प्रदान में प्रव

ही विनदूर नामक वन से रावरा सीता को से गमा था। सीता को पूनः बनवास बेन

निय नहीं है। विवस्तर परस्परा में राम-क्या की एक बारा यह रही है। यहांकवि पुरुषक्त ने भी अपने उत्तरपूरांगा में यही राम-कवा सिबी है। कन्नड़ की बैन रामायण नामूंक राव-पूरास में भी राम कवा ही दही परम्परा को प्रपताया गया है। दिनम्बर समाज में जी यह बरम्परा किरस कप से रही है। मुख्य परम्परा ही हैस्ता स्वर व विश्वस्य दोनों समाची में परमन्त्रिय और पश्चमधीरन वाली राम-कवा की की श्री है।

रेस मकार बैंग बीख और बैदिक इन रीज़ों ही परम्मराज्ञों के कवा-भेद की न्द्रण ही धरक भीर रोजक कहानी है।

कान्य-समीका मिल-गरीका का क्या प्रसंग मूलतः विश्वनसूरि कृत प्रजनवरित की रामावरा

परान्तरा से सम्बद्ध है। चैन पाठकों के सिये मिल-गरीजा का कवा-मर्चन किर परिवित-सा है। इतर पाठकों के लिये सीवा के सहीवर कामच्छल भरूम-बास का संस्थान वन्तु रावा वन्त्रवंत्र मादि कुछ एक पात्र निवास्त नवीत ही हुनि। तवापि कवा-वस्तु में कीई मौतिक घेर गड़ी है। भी मैनिनीसरस मुख का महाकाव्य शाक्त सयोग्याममा के प्रवीग पर पूर्ण

इता है भीर मानार्य भी तुनशी का नड्ड प्रणीत काव्य प्राप्ति-गरीका इसी प्रसंत थे वारम्य होता है। शेर्तों ही काम्मों की भाषा सरस धीर सरक हिन्दी है। शेर्तों काम्म रिसंकर शानी सनग्र समायस के पूर्वार्व भीर उत्तरार्थ वन वाते हैं। साकेत के मन्तिय प्रक्षेत्र व मलि-परीका के भावि प्रकृत दोनों काच्यों की रचना खेली को वरसने

के क्षेत्रहे व्याहरका बनते हैं। साकेव के राम चीर नरत परस्पर मिकवे हैं---नर विमान से भूव वस्त्र से क्यों पुरुवीत्तम मिने भरत से राम शिक्षित में सिन्धु-ननन सम ।

'बड, मार्ड, तुल सका न तुमसे राम बड़ा है देश पसदाबका भूमि पर धाव पका है! यमें चपुर्वेद्ध वर्ग बका में नहीं अमया में विवस पिरि-वन-सिन्दु-पार बंदा के रहा में । श्रान्त ग्राज एकान्त-रूप-सा पाकर तुसको, उठ, भाई, उठ, भेंट, ग्रक मे भर ले मुसको। मैं वन मे जाकर हसा, किन्तु घर श्राकर रोया, खोकर रोये सभी, भरत, मैं पाकर रोया।

अनि-परीक्षा के राम और भरत मिलते हैं-

ग्राया भवनी पर श्रभ्र-यान राधव-नक्ष्मगा नीचे उतरे. थ्रा मातृभूमि के श्रचल मे चेहरे निखरे उल्लास भरे, बालकवत् दौड भरत भाई गिर गए राम के चरगों में, खोए-खोए से हृदय हुए पिछले सुमधुर सस्मरणो मे। श्रविराम राम पादाम्बुज को नयनाम्बुज से वे सीच रहे, वाहो मे भरकर ग्रवरज को अग्रज कपर को खीच रहे, शर पर रक्खा है वरद हस्त श्रत्यन्त स्नेह से गले लगा, भरतेश विरह सब भूल गए श्रन्तर मे नव श्राह्लाद जगा।

एक दूसरे के प्रति, दोनो श्रनिमिष दृष्टि निहार रहे, बहा-बहा पानी पलकों से मन का भार उतार रहे। मुखरित मोद, भावना मुखरित, किन्तु हो रही वाणी मौन, श्रानन्दाव्यि निमज्जित मानस, दोनो मे कम वेसी कौन?

साकेत के राम चरगों में गिरे भरत को उठाकर बाह भरने का अनुरोध करते हैं तो अग्नि-परीक्षा के राम—''वाहों में भरकर श्रवरज को अग्रज ऊपर को खींच रहें' यों अपनी वाहों में उसे भरने को ही प्रयत्नशील है। दोनों ही काव्यों की भावाभिव्यजना अपनी-अपनी स्थिति में अप्रतिम हैं।

साकेत के राम कहते हैं कि तेरा पलडा मारी है। वह जमीन पर टिका है तो श्रीन-परीक्षा के राम, राज्य-प्रहरा के प्रसग पर कहते हैं—

> इस सारी जनता ने तुमको नैसर्गिक शासक माना है। हमने भी तेरा पूर्णतया भव सही रूप पहिचाना है।

ही बिबकूट नामक बन से रावण सीठा को से प्रमा था । सीठा को पुतः बनवास देने की भीर धानि-परीक्षा की बदना का भी इस रामायण में कोई जल्लेक नहीं है। महम्मा एक संसाध्य रोग से पीडित होकर सपीर सोड देते हैं। यम इस बटना से दुवित होकर यनेक राजाओं और अपनी सीता आहि रानिकों के साथ जेनी बीका में At E कुछमहाचार्यकृत अक्तरपुरास की वह राम-कवा श्मेताम्बर बन्प्रदाय में प्रव

पुष्पयन्त ने भी अपने उत्तरवृत्ताम् में यही राम-कवा निवी है। कनाइ की चेंक रामाबस कार्युक राव-पूराता में भी राम बना की इसी परम्परा की प्रपनाया नया है। वियम्बर समाव में भी गढ़ परम्परा किरल क्य से रही है। मुख्य परम्परा सी स्वेता-म्बर व रियम्बर बोर्नो समाजों में पडमचरित्र और प्रयमचरित्र बासी राम-कवा की धी परी 🕻 ।

निय नहीं है। दिगाबर परम्परा में राम-कवा की एक बारा मह रही है। बहुत्कीर

देस प्रकार चैन बौद्ध चीर बीविश इन नीवों ही चरम्पराओं के कवा मंद की महत ही तरस सौर रोवक बहाती है।

काम्य-समीका यन्ति-गरीला का कवा प्रसंप मूबतः विमससूरि इस प्रतमवरित की रामायण नरमारा हे तम्बद है। वैन पाठकों के सिये बॉल-मरीबा का कवा प्रवेष्ट निर्देशक

सा है। इतर पाठकों के लिये सीवा के सहीवर भामध्यम अरब्य-नास का बंदसक बन्तु राजा बराजन पादि कुछ एक पात्र निवास्त नवीन ही होते। वदापि क्यां-वस्तू में कीई श्रीतिक भद नहीं है। भी नैपितीसरात बुप्त का महाकाव्य साकेत समीच्यागमन के असेन पर पूर्ण

हीता है सोर पातार्य भी नुससी का मह प्रनीत काक्य सीन परीका इसी कर्तन दे भारत्न होता है। बोनों ही कान्यों की भाषा तरत और तरन हिन्दी है। बोनों कान्य मिसकर यानी नमंद रामायाग के पूर्वीचें चीर उत्तराचे बन पाति है। सदित के मित्रम प्रतंत व चन्नि-परीया के मादि वसंग दोनों काच्यों की रचना सेनों का परगते के सनूडे तबाहरण बनते हैं। साकेत के राम और जस्त परस्पर निर्मते हैं---

नर विनात से दूर गरह ने प्यॉ पुरवीतन मिने भरत से सम सिविज में हिला-अमन सक रे किनाई तुस सका नतुकते राम लड़ा है तैश वनदाबका भूमि वर साम पहा है!

गरे चनुर्वेश वर्ष बका व नहीं भ्रमण में विषय गिरिन्यन-सिन्ध-सार संका के राग में । श्रान्त श्राज एकान्त-स्व्य-मा पाकर तृमकी, उठ, भाई, उठ, भेंट, श्रक मे भर ते मुभकी! मैं वन मे जाकर हसा, किन्तु घर श्राकर रोया, खोकर रोये सभी, भरत, मैं पाकर रोया!

अग्नि-परीक्षा के राम भीर भरत मिलते हैं-

श्राया ग्रवनी पर श्रभ्र-यान राघव-तहमगा नीचे उतरे, या मानुम्मि के प्रचल में चेहरे निखर उत्नाम भरे, वालपवत् दीर भग्न भारी गिर गण राम के चरगों में योए-योग में हृद्य पिछते गमपुर सरम्याभी मे। प्रविराम राम पादास्त्रा को नयनाम्बर से हे भीप रहे. बाहाँ में भारत भारत का याग्र कार वा कीच रहे. शर पर क्यां है एक श्रम ग्रमान परेह में गून लगा , भग्नेस विष्ठु गढ़ भूछ गा। यन्तर में रत शाहीर देगा।

एक दूसर के प्रति, टार्टी श्रीनीयप इप्रि निहार यह , बहा-बहा पानी प्रवर्षी छ एन का थार छनार रह । पुलिन मोट, भावना मुल्लिन, किन्नु हो रही घाणी मीन , यानन्दान्त्रिनिमन्त्रिन मान्य, दानी में क्या वेथी कीन ?

माकेत के राम जरमां में गिरं भरत को जटाकर शृष्ट अर्थन मा अनुर्गेष करते हैं तो अग्नि-गरीक्षा के राम—''वाहों में भरकर अवर्थ की अग्र जार हैं लींच रहें' यीं अपनी वाहों में जसे भरने को ही अग्रन्धांत्र है। दीनीं ही कार्यों मावामिक्यजना अपनी-अपनी स्थिति में अप्रतिम है।

साकेत के राम कहते हैं कि तेरा पत्तरा आर्ग है। यह अधीर तो मन्नि-परीक्षा के राम, राज्य-प्रहण में प्रमण पर कार्न है

इस सारी जनता ने तुमको नैगांगुड शायक माना है? हमने भी तेरा पूर्यनया भ्रय गही भ्य पहिचाना है

कर प्रजाजनों का चरकाए। तुमने मारी गौरव शामा। में एक विया की पूर्णतमा अने में ने सुरक्ति रख पाया। राम को धपनी संविमा स्थक्त करने की कैसी बन्दी सकि सुकी है। इस प्रकार 'साकेत' धीर 'धानि-परीक्षा' य दोनों काच्य रचना चनी मीर

भावाभिन्यक्ति की बृष्टि से एक इसरे के बहुत कुछ निकट हैं। मिल-परीक्षा सबमूब ही समामोबना की मिल-परीक्षा में निवार कर उनर याने वाली कृति है। हिन्दी साहित्य का यह एक समर्ग पानेस है। प्रसंप-सर्वय वर

पानार्य थी तससी नै घछते भाव इसमें संजीये है। एक स्थान में दो तसवारें नहीं रह पाठी एक गुफा में दो सिंह नहीं यह नाउँ

एक राज्य में दो सुचालक नहीं एड पांठे इन लोक सत्यों को उसडकर राम-सदमस क राज्य-पदासन के सम्बन्ध से बाधार्यकर ने कितना सन्दर कहा है-एक पुका में बो-दो सक्षपति एक स्यान-में बो तक्तवार

सासने एक जनव संभानक देख हो रहा वित्र सपार। धवरण प्रधान की धाला के बिना न करते कोड़ काम

पद्मार्थं प्रत्येक बात मंसेते सङ्गण का भीराम। मोकापबाद के कारण राम शीता के परित्याग की बात कहते है हो सक्तल वनमन का गढ़दरी प्रवाह-मान ही कह देते हैं ---

मत नाथ से नम्म निवेदन जिन्तन करे दुवारी

उत्तरी सीवी अहती यों ही यह जनमत की वास । धाचार्म विनोबा मादे का कहना है-बोस्वामी तुससीदास प्रपते विद्याच

प्रत्व रामचरित मानस में सम-सीता के विरह प्रमंत्रों का चित्रस वहुत ही संसेप में कर पाये हैं। राम बीर सीता का वियोग बनके निए सर्वत असका एहा है। अस्य उनकी समिती उन्हें मिलाने में उताबती होकर बती है। वाकार्य भी तुसरी अपने भूमि-मरीता काव्य में सबया इसके विपरीत चल हैं। वियोव भीर करणा को सम्बद्ध ही इस्होत माकार बता दिया है। इस विवय पर शतकी सेकिती बहुत सम्बी वहीं है।

गोस्वानी सुनसी भरव्य मुक्त सीता को दो ही बौपाइयाँ में शास्त्रीकि के माध्य म भेज देते हैं—

बागी सिया सकस दिशा देशा नहि एवं धरव नहीं काँद्र संखा। महि दुल प्रवस रहे है प्रारणा पृति सोई चहन न करत प्रमाना ।

१ साप्नाहित हिम्बुस्तान सन् १६६१ फरवरी व वर्षय जैन १४ वृ ४६ के द्याचार दर

२ तुससी रामायण रामाध्यमेय सब्द्रुयानायान्—५ से व

करुणा , करित विपिन अति भारी, वारमीकि आये वनचारी।
पुत्री वाहमीकि कह ज्ञानी, वन आवन निज चरित वखानी।
ग्राचार्य श्री तुलमी अपने इस काव्य मे वियोग और करुणा को ही मुख्यता
देते हैं। जैन क्या के अनुसार राम का सेनापित कृतान्तमुख अपने स्वामी की आज्ञा
से सीता को रथ मे विठाकर भीपण वन मे ले जाता है, यह कहकर कि राम वनक्रीडा के लिए गये है, आपको भी वहा चलना है। उस सिहनाद अटवी मे सेनापित
और मीता के वार्तालाप से वियोग और करुणा का वर्णन प्रारम्भ होता है। रथ के
खडे होने ही चारों श्रीर देखकर सिवय्वता भरी आवाज मे सीता कहती है—

अरे बोलता क्यो नहीं, वता किघर है राम , मुफे कहा लाया यहां, लेकर उनका नाम।

नेनापित ग्रपने भृत्य जीवन को विक्कारता हुग्रा कहता है-

मा मुक्ते कर दो क्षमा, मै पूर्णंत परतन्त्र हू, ममक लो । वस राम के, द्वारा प्रचालित यन्त्र हू। भृत्य जीवन से भली है, मृत्यु ही ससार मे, मैं नियन्त्रित यथा वन्दी, वन्द कारागार मे। नहीं कृत्याकृत्य कुछ भी, सोच सकता भृत्य है, जो कहें स्वामी वहीं बस, कृत्य उसका नित्य है। इष्टि के विपरीत उसका, बोलना भी पाप है, दासता मनुजत्व का, सबसे बडा श्रभिशाप है।

ग्रसहाय सीता वहती है-

राम-राज्य मे सभी सुखी मै ही दुखियारी, कौन सुने मैं किसे कह हा। श्रपनी लाचारी।

वेदना पूरित मानस का कितना मुन्दर चित्रण है— यो आहे भरती हुई फैंक रही नि श्वाम , देख रही घरती कभी और नभी श्राकाश।

> कभी मौन हो मोचती टिका हाथ पर शील , कभी चीख में निकलती प्रन्तर मन की टीस ।

नीता की वेदना से सारा श्ररण्य ही वेदनामय हो जाता है। हिंसक पशु भी क्लेय-कारए। न होकर सीता के प्रति सवेदनाझील दिखाई देते हैं। सचमुच ही कवि कर प्रजापनी का भंदशता तुमने भारी मौरव नाया। मैं एक सिमाको पूर्णतया वर्गमें न मुरक्तित रखपामा।

राम को भवनी कविमा स्वक्त करने की क्षेत्री भनूनी वर्तित सुमी है। इस प्रकार 'साकत' भीर 'मिनि-परीक्षा' से दोनी काम्म रचना वसी मीर

भावाभिध्यक्ति की बृहि स एक दूबरे के बहुत कुछ निकट हैं।

पन्नि-परीशा सबसुब ही समाभोबना की धनि-परीशा में निकर कर करर साने वामी कृति है। द्विन्दी साहित्य का यह एक चमर्र पायेन है। प्रसंन-प्रयंब वर

बानार्य भी तुमसी ने ब्रापूर्त भाव इसमें संबोधे है। एक स्थान में बो तमनार्रे मही रहपाती एक गुद्ध में बो विद्द नहीं रह करें एक राज्य में बो समावक नहीं रह पाते कर बोक सत्यों को उनकर र राम-वस्मत

क राज्य-संवासन के सम्बन्ध से सावार्यवर में फितना मुख्य कहा है— एक पुष्टा म दो-तो मुक्पित एक स्मान-में हो तकवार वासन एक उपस संवासक देख हो रहा वित्र स्थार ।

चासन एक उभय सचानक वेच हा रहा एक स्थार (प्रवरण संग्रज की साहा के बिता न करते कोड़ काम परामर्थ प्रत्येक वात में नेते सहमण का बीराम !

परागण अल्लक बात म नत नक्सण का भागम । सीकापवाद के कारणा राम ग्रीता के परिस्थाण की बात कहते हैं तो नक्सण जनमा ना परवरी प्रभार-मान ही नड़ देते हैं —

६०९ प्रवाह~नाग्रहान्द्र व⊍ ह — - भ्रतः शाव क्षे नक्क निवेदन विस्तृत करेद्रशास

चसदी सीमी महती याँ ही महभागत की गए।

गोस्त्रामी युक्तती प्ररूप-मुक्त गीता को वा ही चौपाइमों में बारमीकि के धाराम म फेक वैते हैं—

नागी सिना सकल विधि देखा नहिं एक मक्त नहीं कहि सेका। सप्ति क्रक प्रमुन रहे है प्राप्ता पुनि तोई कहत न करने प्रमुना।

१ साप्ताहिक हिम्बुस्तान तन् १६६१ करवरी व वर्ष व वंश १४. वृ अह के

२ तसती रामायल रामाध्यमेव सवकुताबारवन्-- ४ ते व

करुगा करित विपिन ग्रिन भारी, वाल्मीिक ग्राये वनचारी।
पुत्री बाल्मीिक कह ज्ञानी, वन ग्रावन निज चरित वखानी।
ग्राचार्य श्री तुल्मी भ्रपने इस काव्य में वियोग ग्रौर करुणा को ही मुख्यता
देते हैं। जैन क्या के अनुसार राम का सेनापित कृतान्तमुख ग्रपने स्वामी की ग्राज्ञा
से सीता को रथ में विठाकर भीपण वन में ले जाता है, यह कहकर कि राम वनक्रीडा के लिए गये हैं, ग्रापको भी वहा चलना है। उस सिंहनाद ग्रटवी में सेनापित
ग्रीर सीता के वार्तालाप से वियोग ग्रौर करुणा का वर्णन प्रारम्म होता है। रथ के
खंडे होते ही चारी ग्रोर देखकर सदिग्वता मरी ग्रावाज में सीता कहती है—

श्ररे बोलता क्यो नहीं, वता किघर हैं राम , मुभे कहा लाया यहां, लेकर उनका नाम।

नेनापति ग्रपने भृत्य जीवन को धिक्कारता हुग्रा कहता है-

मा मुक्ते कर दो क्षमा, में पूर्णंत परतन्त्र हू, समक लो । वस राम के, द्वारा प्रचालित यन्त्र हू। भृत्य जीवन से भली है, मृत्यु ही ससग्र में , मैं नियन्त्रित यथा बन्दी, वन्द कारागार में । नहीं कृत्याकृत्य कुछ भी, सोच सकता भृत्य है, जो कहे स्वामी वही वस, कृत्य उमका तित्य है। इष्टि के विपरीत उसका, वोलना भी पाप है, दासता मनुजत्व का, सबसे वडा श्रभिशाप है।

यसहाय सीता वहती है-

राम-राज्य मे सभी सुखी में ही दुखियारी, कौन सुने में किसे कह हा। श्रपनी लाचारी।

वेदना पूरित मानस का कितना मुन्दर चित्रगा है— यो त्राहे भरती हुई फैंक रही नि स्वाम , देख रही घरती कभी श्रीर कभी श्राकाश ।

> कभी मौन हो मोचती टिका हाथ पर शीश , कभी चीख मे निकलती श्रन्तर मन की टीस ।

नीता की विदना से सारा ग्ररण्य ही वेदनामय हो जाता है। हिंसक पशु भी क्लेश-कारण न होकर सीता के प्रति मवेदनाशील दिखाई देते हैं। सचमुच ही किन

की अक्षिती वेदना-वित्रस्त के स्थितर पर पहुच गई है-

बस बेस बिनसर्थ सानन को साथी वमस्वनी रोती है उन निकल बन्म बीमों के भी मानस में पीड़ा दोती है। करने में मूक सहानुमूर्ति सब बेर सती को सेते हैं। कर रहे प्रस्थित सहब स्नेह संबन्ध न किनियू देते हैं।

बोस्तामी तुनवी धौर धावार्य भी तुनवी के बीच ध्वाव्यियों की काका-वी है। इस बीच सामाजिक पूर्वों में माता उठार-वहाद था चुके हैं। रामचीरत मानस की सीता धाव के पारक को बीन मनने सावी है। राम द्वारा अपने कर किये परे प्रकार ध्यवहारों पर भी उठके यूंड से कोई ऐसी बात नहीं निकलती जिस से नारील अपर घठता है। राजस विकार के पश्चाद सीता-राम के सम्मूच बाई बाती है। थितन की उठ मधुर बेचा में बी राम उसके प्रति दुर्वाक्य कहते हैं। उसके आति का प्रमास मांसर्व है—

> वेहिकारल कस्लायतम भन्ने ककुक दुर्वाद भूमत यातुमानी सकस भागी करन विभाव।

> > —र्मकाकाण्ड २७

गोरवामी जी 'अपू के बचन छोड जरि छोछा' क्वूकर कवा को मार्थ वहा रेखे हैं पर विचारी अपनानित छोडा को कुछ जी क्वूले का बवसर नहीं देते । समानव निर्मान में निकारण ही पान गौता को सांखिता कर छुड़ा बेखे हैं पर गोरवामीओं की छोडा छो पान के मति मुक हो पहती हैं। बचनुक बोर पान-क्षमण के पुढ क पावजूर एम की पहुंबा प्रमान्तर छोडा उनते दिना मिले ही बच्छी में सा बाधी है। भीन-परीवा को छोडा परी वर्ष के मार्थामां को समुग्य एक्टी हुए एक के कर्जवार्थ पर भी निवाह उठा केरी हैं। बच-कुछ-मिनन के पश्चाद वस पूरीव पान की भीर से उछे प्रमोक्ता माने को मार्गनिक करते हैं, तब परि-वस्ता छोडा के हुएम की मति हो हो के निव बात स्वापनान गी उछकी विमोनपूर्व वाणी के साम दूर पड़ा है। वह परि-वस्ता छोडा के उपना करते हैं, वह परि-वस्ता छोडा के हुएम की

> कपिपित में मूली नहीं वह भीवल कालार नहीं भीर प्रव वाहिए स्वामी का तत्कार ! हाव कोवती पूर से जनको में महाराव स्था करना प्रव सेव हैं हता रहे को भाव।

सकेए में कहा जा सबता है कि बोस्तानीजी हाए नाएँ-जीवन को मनावस्तर क्य से दब-मा बसा है वह प्रक्ति-परीज्ञा में धावामें भी शुक्ती हाए पर्वान्त वर ऐ कपर चठा दिया गया है।

भ्रग्नि-परीक्षा के भ्रवसर पर सीता कहती है-

जीवन की यह स्विंिंग वेला मेरे भ्राग्नि स्नान की, विल्दानों से रक्षा होगी नारी के सम्मान की। श्राग्नि परीक्षा में प्रमग-प्रसग पर कही गई वार्ते शास्वत सूक्तिया भी वन गई हैं। प्रमग विशेष पर कहा गया हैं —

जो भ्रोरो को दु ख पहुचाते सुख मे न उन्हें वसते देखा , जो भोरो का जी तडफाते उनको न कभी हसते देखा ।

सीता ग्राग्न-परीक्षा के लिये उद्यत हो चली है। दशंको के मन मे करुणा का ज्वार उमड पड़ा है। उनकी ग्रनुभूति को कवि ने कितने सुन्दर शब्दों मे वान्वा है —

जब से इस घर मे श्राई उपने दुख ही दुख देखा, पता नहीं बेचारी के कैसी कर्मों की रेखा।

कुल मिलाकर भ्रग्नि-परीक्षा साहित्यिकता श्रीर धार्मिकता के सगम का एक भ्रनूठा ग्रन्थ है। इस मे श्रद्धाशील लोग राम भ्रौर सीता के श्रादशों को सहज ही हृदयगम कर सकते हैं भ्रौर साहित्यान्वेषी थिरकती साहित्यिकता का पान कर भ्रपने भ्राप को तृष्त कर सकते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रण्यन भाचार्यवर ने स० २, १७ के राजनगर चतुर्मास में किया। कनकत्ता चतुर्मास के पश्चात् भ्रपनी दो सहस्र मील की ऐतिहासिक पदयात्रा पूर्ण कर श्राचार्य श्री राजनगर (राजस्थान) पहुचे थे। चरणो का विश्वाम मस्तिष्क की यात्रा वन गया। तेरापथ द्विशताब्दी समारोह की व्यस्तता में भी भाचार्य श्री ने श्रीन-परीक्षा की रचना के लिए भ्रतोखा समय निकाला। प्रार्थना के पश्चात् भाष दश्चा बजे तक रात को सघन वृक्ष की छाया में बैठकर पश्च-रचना करते। इस प्रकार समय वचा-वचा कर भापने प्रस्तुत रचना सम्पन्न की। भ्रन्वेरी रातो में भी भापका कार्य भ्रवाघ गित से चलता रहा। मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' तथा दिवगत श्री सोहनलाल सेठिया इस तूतन प्रयोग में भ्रमिन्न सहयोगी रहे। मुनि श्री मागरमलजी की तमो-लेखकता श्रीर श्री सोहनलाल सेठिया की स्मरण-प्रखरता इस ग्रन्थ-प्रण्यन का इतिहास वन गई। इस ग्रन्थ-प्रण्यन में सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी श्राचार्यवर के प्रेरणा-स्रोत थे।

भी भाषा सी भाष्य समभता हू कि भ्राचार्यवर की कृतियों के साथ मेरा भी सम्बन्ध जुड़ा है। सम्पादन कार्य में बचपन से ही मेरी रुचि रही है। उसका भ्रारम्भ हस्तिलिखित जय ज्योति पित्रका के सम्पादन से होता है। उसके मासिक सम्पादन के भ्रतिरिक्त हिन्दी भ्रीर संस्कृत के भ्रनेको विशेषाको का सम्पादन भी मैंने किया। उस

समय सरी प्रसम्भा सगमय १० वर्ष की थी। १सके बाद में प्रकृत दिया-निर्देशक स्मिति ने नराजकी के साद अणूवत दासकर स सवा। वह भी जीविक पिर्देशकर सम्मान करा देशी की स्वतिर्धित नंगरिक में उरा सिवित माहित का समान करायें मैंने उरा निवा साहित का समान करायें मैंने उरा निवा साहित का समान की साव प्रकृत है कि समान की साव प्रकृत के का समाम कर साव प्रस्ता है कि साव प्रमाण की साव प्रकृति की सम्मान की साव प्रकृति की साव प्रकृति की साव की साव की साव की साव प्रकृति की साव की साव की साव की साव प्रकृति की साव की

वि में २ १८ भाइयक्षणणा १२ वृद्धिकाद जैन स्मृति सवन नया वाजार किस्ती _,मुनि म**इ** इन्नमार् प्रतम

अनुक्रम

१ जुभागमन	ε
२ षड्यन्त्र	१६
३ परित्याग	88
४. अनुताप	çξ
५ प्रतिशोध	e3
६ मिलन	१२१
७ ग्रग्नि-परीक्षा	१५१
द प्रशस्ति	१७५



मंगल वचन

जय मग्लमय परम प्रभु, ग्रहंन् श्रात्माराम । स्वीकृत हो श्रद्धा-प्रग्तत, सविनय कोटि प्रग्राम ।



ः १ : शुभागमन



* जय जय रघुपति, जय जय लक्ष्मरण जय जय सीता का शील महा। यो जनता के जय-घोषो से भू-मण्डल सारा गूज रहा। सौधमं सभा-सी लिए विभा लका मे जुडी विराट सभा। प्रासाद दिव्य दशकघर का दिखलाता भ्रपनी नव्य प्रभा। सिहासन पर रघुवर लक्ष्मगा रिव चन्द्र तुल्य थे चमक रहे। प्रतिपल प्रमोद की धारा मे थे जाते सबके हृदय बहे। म्ग्रीव, बिभीषरा, भामण्डल, नल, नीलाङ्गद, हनुमान सभी। सूरपति के सम्मुख सामानिक ज्यो बैठे सह सम्मान सभी।

† विस्मित करते ससद को नभ-पथ से नारद श्राए, हो स्वागत की मुद्रा मे उठ सबने शीश भुकाए। पूछा सविनय रघुवर ने 'भक्तो को कैसे भूले ? क्या पता श्राप इतने दिन किस दिव्य लोक मे भूले ? ऋषिवर। जो घटित हुई है ये बडी-बडी घटनाए, सिय-हरएा, मरएा रावएा का, बोलो क्या-क्या वतलाए?'

^{*} सहनारगी

[ौ] लय--- तू बता-बता रे कागा



🍍 जय जय रघुपति, जय जय लक्ष्मरग जय जय सीता का शील महा। यो जनता के जय-घोषो से भू-मण्डल सारा गूज रहा। सौधर्म सभा-सी लिए विभा नका में जुडी विराट सभा। प्रासाद दिव्य दशकघर का दिखलाता श्रपनी नव्य प्रभा। मिहासन पर रघुवर लक्ष्मग् रिव चन्द्र तुल्य ये चमक रहे। प्रतिपल प्रमोद की वारा मे थे जाते सवके हृदय वहे। म्ग्रीव, विभीषरा, भामण्डल, नल, नीलाङ्गद, हनुमान सभी। मुरपति के सम्मुख सामानिक ज्यो बैठे सह सम्मान सभी।

† विस्मित करते ससद को नभ-पथ से नारद ग्राए, हो स्वागत की मुद्रा में उठ सबने शीश भुकाए। पूछा सिवनय रघुवर ने 'भक्तो को कैसे भूले? क्या पता ग्राप इतने दिन किस दिव्य लोक में भूले? ऋषिवर! जो घटित हुई है ये वडी-वडी घटनाए, सिय-हरएा, मरएा रावएा का, वोलो क्या-क्या वतलाए?'

ौ लय—तू वता-वता रे कागा

ग्रीन-परीका

मेरे से बहो ! खुपा क्या ? देविष मधुर मुस्काए विस्मित करने संमद को नम-पर्य से मारद बाए ।

यदि भाप उपस्थित होते भागन्य भीर ही भाता
रेख देश भापना मन भी भर्यन्त मुदित हो जाता।
'नस-नस रहने दो भपनी यह गौरनमरी कहानी
भेरी भी कुछ तो सुनसो भ्रम सुमा-फ़ादिनी नासी।
तुम सो मानन्य मनाते रोती है वे माताए '
विस्मिन करन ससद को नअ-पम से नारद भाए।

 माता के मन की ममता को मैं तुम्हें बताने धाया हू माता के मन की क्षमता को मैं तुम्हें बताने धाया हूं माता के मन की क्षमता को मैं तुम्हें बताने धाया हूं।

वास्परम भगामो केसन में साधुर्य भरामो केतन में उस स्तेह-सुवाकी सरिताकारस पुर्स्हेपिकाने सामाहू⊁

उदरस्य पुत्र होता अब से मी सरकाश करती तब से उसके कहों की मूककथा में तुम्हें सुनाने सामा हु।

क कहा का मूककथा म तुम्ह सुनात साया हू स्लेहाकुल भार उठाती है

फिर किननी पीडा पाती है उस मातृ-ह्युदयके सुभ दर्शन में तुम्हें कराने साया हू।

सब सकट स्वयं फ्रेज केती सूत को न पांच माने वेती उस सफल रक्षिकानी सुनभुर स्मृतियां सरसाने भाषा हु।

सन--- महाबीर प्रयुक्ते चरलीं में

ग्रग्नि-परीक्षा

सुनती जब सुत का किचित दु.ख , पीला पड जाता उसका मुख , उसकी उद्वेलित ग्रात्मा को मै तुम्हे दिखाने ग्राया हू।

माता ही भाग्य-विधाता है, माता ही जीवन-दाता है, लो । कान खोल कर सुनो, करुण सन्देशा मा का लाया हू।

गीतक छन्द

ग्रा रहा हू मैं ग्रभी साकेत से सीधा यहा, विलखती है, विलपती है उभय वृद्धाए वहा। राम-लक्ष्मण, राम-लक्ष्मण, एक ही वस ध्यान है, ग्रीर सीता के लिए उलभे नसों मे प्राण है। सुख कर काटां हुम्रा तन, रह गया ककाल है, नीद, भोजन सभी छूटे हुग्रा हाल-विहाल है। सतत सेवारत भरत, फिर भी न उनको चैन है, सिक्त होकर श्रासुश्रो से हुए निष्प्रभ नैन है। वह त्रियामा राम । उनको लक्ष-यामा हो रही, विरह-व्याकुल बनी कौशत्या-सुमित्रा रो रही। दु ख-सागर मे निमज्जित वे कही दह जाएगी, तो सभी उनके हृदय की, हृदय मे रह जाएगी। ग्रधिक दिन की वे नही, विश्वास क्या इस श्वास का, कहो भभा मे पता क्या ? क्षीरण दीप-प्रकाश का। म्रत मिलना हो तुम्हे तो शीघ्र ही जाम्रो वहा, मिटा ग्रार्त्तंध्यान उनको शान्ति पहुचाग्रो वहा।

कहते स्रागम पुत्रो पर है स्रकथ, स्रतुल मा का उपकार,
 पुत्र करे कितनी परिचर्या नही उतरता फिर भी भार।

[•] रामयरा

प्रमि-परीक्षा

भवसर है यह भव यत्कि भित् उश्र्रणता को पानेका, कहते वेद → माहुन्देवो भव उसको सफल बनानेका।

देकर उन्हें समाधि भानिक भव शुभयोग वहाना है सफल ताभना में सहयोगी पूर्णतमा बन जाना है। कहने के पश्चिकारी हम फिर उपित जने सो करना काम महीं प्रयोजन है शुनिया से भाई! हम तो रमते राम।

बोहा

कोले कौश्चस्या-सनय धन्य हुए हम भावा, दे दर्सन सक्षेतना जायुत की महाराजा।

ां नहीं कभी भी हम भूसेंग्रे माता के उपकार की बागुत किया जिल्होंने सारिवक मैसरिंगक संस्कार की।

बीवन के करए-करए में जिनका रसा हुमा मामार है प्रतिपम स्मृति पटलों पर मंकित रहता प्यार-बुतार है बढ़े बढ़ रहे और बढ़ेंगे के उनके प्रापार की !

इधर उत्तमनों में उत्तमे हम रहे कार्य में स्थरत से भगवन् ! कहीं-कहीं बुटियां भी हो जातो सद्मस्य से करना पड़ा स्थवस्थित इस लंका के सासन भार को !

सबस्य पर दी हुमें प्रेरित्ता मां से सिसना चाहिए साते हैं हम शीझ झाप का उनको धेर्म बंधाइए सुस्थिर रक्तमा निर्मामक बन भाशा की पतवार को।

गीतक छन्द

मा गए नारद भयोष्या उद्यक्तते भानन्द में मातृ-मन के मोद को शान्या न जाता इतन्द में ।

[†] सब—बानव बीलो मानवता के

राम का शोघ्रागमन मुन सभी हर्ष विभोर है, भरत-मन प्रमुदित ग्रमित उल्लास चारो ग्रोर है। सुखद स्वागत की नगर में हो रही तैयारिया, पुरुष कार्य-व्यस्त सारे, थी न पीछे नारिया। स्वच्छ वातावरए। पुर का, मधुर सौरभ से सना, मभे द्वारो पर सुवर्णाक्षराकित शुभ भावना। स्वागत स्थल में हुग्रा माकेत ग्रा समवेत है, लोक-मानस हो रहा ग्रद्वैत भिक्त उपेत है। भरत भ्राता शत्रुघ्न नह ग्रा गया उद्यान में, थी सभी की दृष्टि केन्द्रित एक पुष्पक यान में।

* उत्सव का दिन है श्राज राम घर श्राए।

श्रव उतर रहा है यान नील श्रम्बर से,

जय-घोष तुमुल सब करते एक स्वर से।

पृष्पक विमान की प्रभा सूर्य मण्डल-सी,

लहराती ऊर्घ्व पताकाए चचल-सी।

श्रालोक विलोक दूर से जन हर्षाए,

उत्सव का दिन है श्राज राम घर श्राए।

नभ से देखा है राघव ने जनता को,
ग्राकी उनके श्रन्त स्थल की ममता को।
साकार हुई वर्षों की म्मृतिया सारी,
जागी भावुकता सहज हृदय मे भारी।

ां स्राया अवनी पर अभ्र-यान राघव-लक्ष्मरा नीचे उतरे,

^{*} लावग्री

^{ां} सहनागी

ग्रामि-परीक्षा शा मातुभूमि के शक्स में

बेहरे निकार उत्सास मरे बातकवत् दौड़ भरत भाई गिर गए राम के बरएों में कोए-कोए ये हृदय हुए पिछले मुमपुर सस्मरएों में। भविराम राम पादाम्बुक को नयनाम्बुक से वे सींव रहे बाहों में मरकर भवरक को प्रभा करार को बींव हो, घर पर रहा है बरह हस्त सर्थन्त स्नेह से गले सना भरतेष विरह सब मूल गए मन्तर में नव भाक्काद कगा।

 एक दूसरे के प्रति वोनों भितिमित्र दृष्टि निहार खें बहा-बहा पानी पलकों से मन का मार स्वतार खें। मुखरित मोद मावना मुखरित किन्तु हो खी वाणी मौन भान-वाकिय निमञ्चित मानस दोनों में कम बेसी कौन?

बोहा

भाकरके शकुष्त ने सविनय किया प्रशास बरसकता से दे रहे भूमाधीय श्रीराम ।

 गंगा-यमुना की बारा ज्यों मिले भरत मक्ष्मण के साय कुशान प्रदम सब मूप भरत से पूला रहे प्रमुदित रकुगाय।
 स्यों भाई! तुम सकुशन तो हो? बीक रहे हो क्यों कृषकाय प्रमुदित मन माताए होंगी? सकुशन होना जन-समुदाय।

गीतक छन्द

प्रश्न मुनते ही भरत का गला महसा भर गया, हो गई पलके छलाछल ज्वार-सा ग्राया नया। चैर्यं कर एकत्र सविनय ज्येष्ट से कहने लगे, भाव मन के स्रोत वन वदनाद्रि से वहने लगे।

* मभदार नाव को छोड चले, क्या पूछ रहे है ग्राज कुशल ? वच्चो से नाता तोड चले, क्या पूछ रहे हैं ग्राज क्शल ? नन्हे-नन्हे इन कन्धो पर, साम्राज्य-भार इतना रख कर, मेरे से मुखडा मोड चले, क्या पूछ रहे है ग्राप कुशल ? ली पुज्य पिताजी ने दीक्षा, परी न पा सका मै शिक्षा, (मुभे)इस भवर जाल से जोड चले, क्या पृछ रहे है आप क्राल? मैं रोया कितना विलख-विलख. कितना था मेरे मन मे दुख, कर उसे उपेक्षित दौड चले , क्या पूछ रहे है ग्राप क्राल ?

ं हरण हुम्रा भाभी का फिर भी मुभे स्मरण तक नही किया, श्रीर कुशल सन्देश हमें लक्ष्मरणजी का भी नहीं दिया।

^{*} लय---एक दिल के दुकडे

र्ग रामायगा

ररा में सबको कुला सिया पर मेरी याद नहीं मार्द उसी पिताका पुत्र कही क्याचान मापका ही मार्दि?

कमी किसी के साथ न करना जीसी की है मेरे साथ टुकके-टुकके हुदय हो रहा किसे उसाहना दूं में नाथ। की न करपना जैसी वैसा मेरे साथ हुमा व्यवहार तबन सुनी सकतो सुन सेना पीड़ित मन की करण पुकार!

बोहा

मैंने इतमें दिन किया धार्ये ! धापका काम धव सम्भानों भाग ही तब बोसे श्रीराम ।

> स्यों हू करता है भात भरत ऐसी बच्चों की सी बावें कैसे मिलती यह विश्वता जो हम नहीं प्रयोध्या से जाते इस सारी जमता ने तुमकती नेसर्गिक सासक माना है इमने भी तरा पर्गत्या पत्र सही रूप पहिचाना है।

नर प्रकाजनों का संस्थाए तू ने भारी गौरक पाया मैं एक सिया को पूर्णतया वन में न सुरक्षित रक्त पाया मां कैकेयी की सूम्बूम का ही यह तो मुक्तर फन है श्री भरतराज के रक्षण में साम्राज्य ग्रवच का ग्रविचल है।

यदि तुभे वुला लेते तो कह
सम्भाल कौन पीछे करता?
बूढी माताग्रो की सेवा कर
ताप कौन उनका हरता?
तेरे रहते हम पूर्णतया
निश्चिन्त वहा पर थे भाई!
वया होगा ग्रहो! ग्रयोध्या मे?
यह मन मे कभी नही ग्राई।

उलभे थे इतने उलभन में हम ग्ररे तुभे क्या बतलाए हैं जिसके कारण ही हम कोई सन्देशा भेज नहीं पाए, लका की करके विजय विकट कितने धागे सुलभाए हैं, ग्रब करने को विश्राम यहां हम भरत-राज्य में ग्राए हैं।

* उत्सव का दिन है श्राज राम घर श्राए। यो मधुर-मधुर सब्राद पन्थ मे चलता, सब भूल रहे हैं श्राज विरह-व्याकुलता। जनता की भारी भीड उमडती जाती, मानो नगरी मे भी वह नही समाती।

> जन पक्तिवद्ध है पथ में दाए वाए, उत्सव का दिन है स्राज राम घर स्राए।

^{*} लावगी

44

ध्वतों ध्रतों मे सुमन दुष्टियों होनीं स्योधावर मर-मर बाल हो रहे मोती। विनेता की बनिताए सम-मोद मनातीं वेती धाषीणें सुमग्रुर संगम गातीं। धानम्क विमोर सभी वासक-वालाएं उत्सव का दिन है मान राम पर बाए।

नम गूज रहा वार्षों की धूंनारों से भू बचिर हो रही जय-जय के नारों से। देते दशरय-मुत दान मुक्त हांगों से करते सबका सम्मान मधुर वार्तों से। ग्राते क्लिके मन-मुदित हुई माताए उत्सव का दिन है भाज राम कर ग्राए।

गीतक छम्द

राजमहम् सम्प्रेहुए वे नव कसारमक इस्स से कर रही सेनामिवादन समित हम उसंस से । उसक्ते जन भ्रारहे हैं उधर सिन्धु-तरंग से रक्त में सबके हुदस श्रीराम ही के रगसे।

मानामों को दब दूर से उतर गए हाथी से राम सदर गति से किया मानु-चरणों में सिननय सविधि प्रणाम । हृदय मरा हुपोतिरेक से बचन सुमा मुख से ऋग्दी माता के मन की ममता की माता ही बाना करती । पैगों में गिरणी सीता को बोली पपराजिता सगब बेटी! सदा मुखी रुक तेरी गद्धम कामताएं हों सर्व । यम भीर सदस्या में विजयी पुत्र रुक कामताएं हों सर्व मात्र के गीरक की रसा म ही पूर्णव्या सम्पन्त ।

[•] समायग

लक्ष्मिंगा ने ज्योही कौशल्या के चरणों में रखा शीय, पकड वाह गोदी में विठला, देती हैं मगल श्राणीय। सर पर घर कर हाथ पूछती वेटा। कहा हुश्रा था घाव? लालन क्या वतलाऊ कैसा उभरा था तव ममता-भाव।

वार-वार तन को सहलाती, कोमल हाथो से सस्पर्श, श्रस्फुट शब्दो मे श्राता वाहर रह-रह श्रन्तर का हप। कभी देखती है चेहरे को, कभी वक्ष की श्रोर सगोर, जहा हुश्रा था महाशक्ति का प्रलयकार प्रहार कठोर।

दोहा

वेटा । वन मे तो बहुत, भेले होगे कष्ट , नही, नही मातेश्वरी । वोले लक्ष्मगा स्पष्ट।

* अनुभव वतलाता हू, सस्मरण सुनाता हू, अनुभव वतलाता हू, अरने वनवासी जीवन के माताजी हो जाएगी आनिन्दत उनको सुनके। अनुभव वतलाता हू, सस्मरण सुनाता हू। पूज्य पिताजी तुल्य प्रेम पाया था भाईजी का। मिला आपसे भी बढकर वात्सल्य मुभे भाभी का। वे वन के प्राकृतिक दृश्य लगते थे कितने प्यारे। बन स्वतन्त्र आगे से आगे बढते चरण हमारे इच्छा होती जहा, वही हम वर्षावास बिताते। ले आते फल-फूल, पका देती भाभी, हम खाते। स्थान-स्थान पर लोक हजारो ग्रामो के आ जाते। घण्टो उनसे होती रहती, मीठी-मीठी बातें।

लय—म्हाने चाकर राखोजी

25

वहों विसावाद समून लेते (तो) रामवहीं पर बाते। रूर समुचित प्रतिकार शान्त भन बन ही में भा जाते। भागव जाता तो मैं उसको परा स्वाद वसाता। बहु रबुबर की बरण-शरण में ही बटकारा पाता। भाग भाग करती भागी में सक्तपर्वक सी जाते। प्रात उठते दशा हुमा हम नगर मनोहर पाते। राम जहां है वहीं प्रयोच्या यह प्रत्यक्ष निहास। जगल का भी मंगसमय हो जाता करण-करण सारा। माताओं । हमने कितने ही अजबेदेश बसाये। विसन्त-विसम्भ करके भरते कितमों के प्रारा बचाये। भागों पर से म्सेच्छों का सारा भावक हटाया ! पापों का बदमा पापी को हाची हाच चुकाया। किया पार्मिकों का संरक्षण दकर सहज सहारा। पराधीनका से कितुमों को दिसदाया छटकारा। सव दूख ठोक हुमा पर मरी एक भूल से सारी। स्खमय स्वितियां बदलीं पाये माईजी दृक्त भारी। हरण हुमा भाभी का मासिक करनी पढ़ी सदाई। क्षेत्र कंपरा दशकपर की विजय समर मंपाई। हम इके की चाट सनी सीता को लौग लाए। माज मापकी दयामया स नुशी-नुशी भर माए।

सुन मधुर संस्मरण ये सारे माता प्रानस्य विभोर हुई नगरो की धामा खिली नर्ट हर्प-व्यति कारों मोर हुई स्वागत के मगल गीतो से मुखरित पुर की गलिया गलिया, घर-घर मे दिव्यालोक लिए जगमगा रही दीपावलिया।

सव तरह प्रजा को देख सुखी-सन्तुष्ट , राम सन्तुष्ट ,हुए, सन्देश देश के नाम दिया जन-हृदय भिक्त से पुष्ट हुए, श्रव भरी सभा मे भरत भूप रयुवर श्राज्ञा ले हुए खडे, 'सम्भालो श्रपना राज्य देव ।' ये शब्द सहज ही निकल पडे।

दोहा

तेरा ही यह राज्य है, तू ही कर सम्भाल। क्यो तू मेरे डालता, व्यर्थ गले मे जाल।

* राज्य छोडना भरत चाहते, राम न लेने को तैयार, ग्राज राज्य लेने देने की श्रापस मे होती मनुहार। कहता भरत 'न मुक्ते चाहिए, जाने ग्राप ग्रापका काम', राम—मैंने तो कह दिया यहा, हम श्राए हैं करने विश्राम'।

† 'यह राज्य भरत है तेरा, तू ही निभा इसे।' भरत—'मैं नही चाहता करना, सौपे मन हो जिसे।'

> उस समय भापकी मीठी बातो मे ग्रा गया। मोठो के साथ नहीं ग्रव घुन जाएगे पीसे।

^{*} रामायरा

[†] लय-प्रमु पाइवंदेव चरगा में

राम---धोँपा जब पिष्टुप्रयर ने तेरे को सार है। बतला साई सब तू ही सींपूरा में किसे? सरत---साईबी! तीबे ताने सामिक क्यों कसते हैं?

क्या छुपा भाषसे बोसो, सब भव सक भादि से।

राम--सून भाई ! छोड तुके हम वनदास न जाएंसे। ग्रह यही रहेंगे, कर सू साआज्य समाधि से।

> कहना न राम के रहते मैं राज्य नहीं सूंगा। रहना भाइते हम तेरे द्यासन में द्यान्ति से।

भरत--- यह राज्य भापना ही है सम्भाने भाप ही। भनकास चाहता हु मैं इस भाषि-स्थापि से।

सिहासन पर नो होंने घोमित श्रीराम ही। मैं जीवन-पुत्रत बनूंगा सबस उप कादि से

इन शासन-संवासन का मेरे को त्यान है भूषित होंने सब राम राज-राजेश उपाधि से।

बोहा

तुन भाई की बात यह सारे पहे सवाक। ऐसे भीते राज्य को देवे सही तक्षाक। एक इस भू ने लिए सङ्क्ताइ मरत भाता। राज्य मीपना हास से यह निस्मय की बान। मरत स्वरित्त मुनि बन कर करवानृत गुनिकेक। बानुदेव-बनदेव का हुआ प्राज्य समिनेक

ः २ ः षड्यन्त्र



* राज्यारोहण की मगल वेला मे प्रमुदित है साकेत, जिल्लाव को जत्साहित करने भूप सहस्रो हैं समवेत। स्वर्ग सभा-सी सभा प्रभा खिल रही दिव्य सिंहासन की, हुई व्यवस्थित नई घोषणा वासुदेव-अनुशासन की।

गीतक छन्द

घरा-घन देकर सभी का मान राम बढा रहे, दान ले अवधेश का उत्फुल्ल सारे जा रहे। राम-लक्ष्मरा का समूचे देश मे साम्राज्य है, राम-राज्य अखण्ड छाया सरस-रस सुख प्राज्य है।

दोहा

राम ग्रौर सौमित्री का जैसा ग्रन्तर-स्नेह। सूक्त सार्थ वह हो रहा, एक जीव दो देह।

- एक गुफा मे दो-दो मृगपित, एक म्यान मे दो तलवार,
 शासन एक उभय सचालक, देख हो रहा चित्र श्रपार।
 श्रवरज श्रग्रेज की श्राज्ञा के बिना न करते कोई काम,
 परामर्श प्रत्येक बात मे लेते लक्ष्मगा का श्रीराम।
 - ं जय राम राज्य, जय राम राज्य घुकार समूचे भारत मे । श्रविकल प्रभुत्व सीतापति का श्रधिकार समूचे भारत मे ।

^{*} रामायरा

[†] लय—घनव्याम तुम्हारे द्वारे पर

ग्रनि-गरीका

77

प्रविरल प्रानन्द स्रोत बहता पा कहीं किसी को क्सेश नहीं सुख शान्ति समृद्धि सिद्धि सम्पन साकार समने भारत में।

असभर मन इम्ब्युत देते अस, वहां सड़ी फसस सहराती थी सम्तोप-स्तेह सच्चाई क संस्कार समये भारत में।

क्त हित केसाबन सभी सुरूम या राज्यप्रजा में एकापन प्रामाणिकता से यूद्रिगत व्यापार समूचे भारत मे।

सास्विकता श्रद्धा सञ्जनता सारत्य विनय बास्सस्य भरा ऊचा धाचार विचार विमल स्यवहार समुचे भारत मा

तब त्यायोचित शासन प्रबन्ध सम्बन्ध परस्पर ध मुक्त जनना पर हस्क से हत्ना बरभार समुख भारत मा

गोसक छन्द

नहीं करने कभी छोटे बड़ा भी बक्तनना मानत करम्या है बारून उनका भेगमा। कड़े छोटा को उपशा नहीं करने थंकभी कार्यहालाकों क्रिमन पूर्णसम्बद्धानाथी। त्याग को पावन प्रतिष्ठा, सत्य-निष्ठा थी महा; त्यागियो के चरण मे नत-शीश जन-मानस रहा। विनय और विवेक बढता, उच्च शिक्षा साथ में, उलभते थे वे न कोई व्यर्थ मिथ्या बात मे।

नारियों का स्थान पुरुषों से न कि चित् हीन था, ग्रांत्म-निर्ण्य मे रहा, चिन्तन सदा स्वाधीन था। पूर्ण था ग्रधिकार, केवल भोग सामग्री नहीं, किन्तु होने दिया उसका दुरुपयोग नहीं कहीं।

भिक्षुस्रो के सिवा भिक्षा मागना तो पाप था, पराश्रित जीवन बिताना घोरतम स्रभिजाप था। दान लेना स्रौर देना, रूप था सहयोग का, स्पष्ट था प्रतिकार पुण्य-प्रलोभनो के रोग का।

दोहा

राम-राज्य मे हो रहे सब ग्रानन्द विभोर। ग्रब थोडा-सा भाक ले, ग्रन्त पुर की ग्रोर।

- * रमिएाया राम की सब मिल सोच रही है, सीता रहते किचित सुख हमे नही है। उससे ही रिजित नाथ। रात-दिन रहते हमसे हसकर दो बात कभी ना कहते।
 - जलता रहता मन भीतर ही भीतर मे, यह कैसा घोर श्रन्धेर राम के घर मे। श्रालोक जहा से फैला भारत भर मे, यह कैसा घोर श्रन्धेर राम के घर मे।

^{*} लावगी

द्मानि-वरीवा

R¥

है गर्माधान किया सीता ने अबसे प्रभु भौर विरक्त हो गए हैं हम सबसे। ग्रह जाती हम तो बदन ताक्सी सारी उमको तो एक बही प्रार्थों से प्यारी। सगती है मन को ठेस होष धन्तर में यह कैसा घोर सन्वेर राम के घर में।

क्या पता कीनसे भक्त कालेती वयला उक्त्यक्स भविष्य करदिया हुमारा चृंबता। स्वामी को वस्त करस्वयं बनी पटरानी किर गया इमारी घाणाओं पर पानी। सक्तेस भर दिया सारे घन्तपुर में महक्तेसा भोर घन्तेर राम के वर में।

भव ऐसा एक उपाय भ्रष्टक निकामें हम क्यों-त्यों इसे वहिष्कृत करवा दाओं। यदि एक बार भी विमुक्त राम हो जाएं कुपपाप हमारा सभी काम हो जाए। फिर देको कैसे पूल किमें भ्रम्बर में यह कैसा भोर भ्रम्वेर राम के वर में।

बोहा

सक्ते सीता से धमा करके सभा स्वद ज । रचा कात ही कात में एक नया पड्यक्त । कपट पिटापी नारियां उच्चि हो पही सार्य । पर मुत्त में हो दुवैता कोती हैं परमार्थ । पहती मारी द्वय में सदा सोत से वाह । व्यॉन्यों उसके नाय की कह निकासती राह। शूली से भी कप्टदा, होती स्त्री को सौत। 'सौत न देना सावरा, दे दे चाहे मौत'। वहु-पत्नी की वस्तुत प्रथा कलह का हेतु। कितने इससे दटते स्नेह-सिन्धु के सेतु।

- * ज्यो ज्यो वढा राम के ग्रागे वैदेही का ग्रित सम्मान, त्यो भड़की विद्रोह-भावना, चला एक ग्रिमनव ग्रिभयान। हुई सगठित सभी रानिया रचित योजना के ग्रनुसार, कार्य-सिद्ध करने ग्रपना श्रव होकर पूर्णतया तैयार।
 - ं सीघी सीता के महलो में ग्राई सब मिलकर एक साथ, उत्फुल्ल हो गई जनकसुता ग्रपने घर सबको देख साथ, स-स्वागत उन्हे बिठाती है देकर सबको समुचित श्रासन, ग्रब कुशल प्रश्न के साथ-साथ प्रारम्भ हो रहा सभाषए।।
 - * क्या कहना वाई । सीता का यह हम सबमे भाग्यवती, पित-सेवा-रत रही निरन्तर दुर्लभ ऐसी महासती। घोर बनो मे गई, सही विपदाए घृति के साथ सदा, होता है रोमान्व, श्रवरा जव कर पाती हम यदा-कदा। बोली वैदेही बहिनो । क्यो करती हो थोथी स्तवना । परम हिषता हू मैं तो, यह प्रेम देख करके श्रपना। समय-समय पर श्रा-श्राकर तुम करती हो मेरी सम्भाल, तत्क्षरा बोल उठी वह मुखिया जो उन सबमे थी वाचाल।

^{*} रामायरा

[†] सहनागी

44

माई हम कुछ माज मापसे पान के लिए।
 विटस उसमनें जीवन की सुसमाने के लिए।

चाहनी हैं हम समय-समय पर सव मिसकर एकत्र हों, नारी जागृति की क्वीए यत्र तत्र सर्वत्र हों मार्ग-दशिका बनो मार्ग दिखसाने के लिए। जटिस उसम्प्लें जीवन की सुसम्बने के लिए।

रही धवेली मार्सो तक उस राक्षस रावस्य के महाँ विविध याननाए महक्तर भी मित्रधक्त माप रहीं वहाँ क्या करे वे मनुभव हों मुनाने के लिए। जटिस उसमम जीवन की सुसमाने के निए

ा इसी पीच में नहा एन न सबकी चिर-धनिसापा है । बाई! दशनपर नैसा था ? यह प्रन्तर-जिज्ञासा है। सुनने में भाता है उसना मुख्दर, प्रमितन रूप निधित्र छहत्र समस्क में था जाएगा धगर दतादी रेलाचित्र।

भावान वभी मैन उसको भवित कर कस दिससाऊं? भावान कभी मैंन उसका छवि कैसे विजित कर पाऊं?

> मै नयन मुकाय रहती भी मन मार नभी कछ सहती भी भागन भावों में दशनी भी वे क्या-व्या धनुभव बतलाऊं? भौवा न कभी मैंन उसको छवि क्या विश्वन कर पाऊं?

सय-प्रापुत्रत है सावा संगार प्रतान

नय-नर देती ध्ययं त्यारं हो

क्या सकट का भी पार रहा, इस मन पर दुस्सह भार रहा, हा । जीना ही दुश्वार रहा, स्मृति मे ग्राते ही घवराऊ।

दोहा

जिसने ग्रा ग्राकर किये नित्य नये उत्पात। उसे कभी देखा नहीं, कम जचती यह बात।

कहती हू विहिनो संही-सही,
 सवत्सरार्ध मैं वहा रही,
 पर देखा उसको कभी नही,
 वह कैसा था, क्या समभाऊ?

दोहा

नही देखा हो पूर्णत चित्र न खीचो खर। पर ग्राते-जाते हुए देखे होगे पैर।

चतुष्पदी

समभन न पाई जनक-दुलारी, उनकी कपट-क्रियाए सारी। ग्रागे-पीछे कुछ न विचारा, है भावी की निश्चित धारा।

^{*} लय-नर देही व्ययं गमाई ना

हां हां वहिनों! भाते-जाते चरण इष्टि में तो पढ आते। किन्तुन उन्हें गौर से देखा कैसे सींचूं उनकी रेखा।

भो देखा है नहीं दिसाधी हार्षिक इच्छा एफल बनाधी। हुम सब मत तानी जाने दो कभी प्रसग धौर धाने दो।

हम सबकी उत्कट है माशा जीजी [|] कर दो पूर्ण विपासा। मति माग्रह को टास न पाई पत्र-पूसिका तुरत मगाई।

बोहा

चरण-चिन्ह विक्रित किये रावण के साकार । भवनोकन का स्वीग रच पत्र कर दिया पार ।

> बस तत्काण बातों-बातों में सामस्य समा सम्मन्न हुई भीता कुछ भेद न जान सकी बेमन में परम प्रसन्न हुई मस्कुट रेजांकित वरण-विन्त का रीम विच वैचार हुमा किर मागे के विस्तृत वार्यका पर भी पूर्ण विचार हुमा।

रक्खा वह चित्र पीठिका पर पूजा सामग्री साथ-साथ, ससद से ग्राते रघुवर का हो गया सहज ही दृष्टिपात, रावण के से ये पैर यहा विस्मित हो, बैठे पूछ ग्रार्य! 'हम क्या जाने' यह तो प्रभु की

दोहा

क्यो करती हो तुम सभी व्यर्थ, ग्रनर्गल बात। सहज उपेक्षा कर चले त्वरित ग्रयोव्यानाथ। चल न सका इस बार यह राघवेन्द्र पर वार। ग्रयमानित होना पडा, किन्तु न मानी हार।

गीतक छन्द

सभी अपनी दासियों को सौपती यह कार्य है, पूजती रावण-चरण, सीता सदा अनिवार्य है। दे प्रलोभन भेज घर-घर में बढाई बात को, कर दिया है रवि-उदय साक्षात आधी रात को।

कैसा कूर कर्म है, यो मढ देना औरो पर अभियोग।
 औरो पर अभियोग, है यह भीषएतिम क्षय-रोग।
 देख नहो पाते जो औरो के शुभ का सयोग।
 मत्सरता मे मरते, करते वे ऐसे उद्योग।

^{*} लय—म्हारा सतगुरु करत विहार

91m 10m

जैसे को तैसे काही फिर मिल आता सहयोग। सबतो क्याकड्नाडायन को मिलाजरक्त कायोग।

छलनामय कलना का पूरा होता है उपयोग। किन्तु ग्रन्त में क्या होगा यह नहीं जानने सोग।

> इस प्रस्थाक्यान महापातक का कोई भी प्रतिकार नहीं इस महारोग का मन्त्रे के श्रतित्क्ति सौर उपकार नहीं, मचप संपट सूंटाक हिस्स भवने पापों को भो सकते, इत प्रस्ट संविधि प्रायदिकत्त कर, तप-कप से पावन हो सकते।

पर धन्मास्थानी की बोई निष्कृति का धौर उपाय महीं वापित धनियोग विका अुगते कुक सकती धन्तर-साय नहीं, कर सुनि को लोक्ति सोता यह उसका यों प्रतिफल पाती है (पर) इनका क्या होगा को इतना मारी पहयन्त्र कमाती है।

वोहा

र्मो फूर्लो की चाह म योगी हाय ! यदून । रिन्तु मिर्नेग घर्टमंतीक्ष्ण मुक्तीले छूल । गित विधि करने ज्ञात प्रजा की थे नियुक्त कुछ चर विश्वस्त,
 समय-समय देते रहते, जो रघुपित को सवाद समस्त।
 किया रानियो ने प्रोत्साहित उनको विछा प्रलोभन पाश,
 देख राम को एकाकी, सब ग्राए उनके पास उदास।

चतुष्पदी

चेहरे पर चिन्ता की छाया, शोकाकूल मुखडा मूरभाया। थर-थर काप रहा तन सारा, बरस रहे लोचन जल-घारा। घबराए-घबराए राघव ने श्रासन्त बुलाए। श्राक्वासित कर पास विठाया . मधुर स्वर से धैर्य बधाया। ग्ररे । ग्राज यो क्यो करते हो . बोलो ग्राहे क्यो भरते हो ? है तुम सबकी यह स्थिति कैसी ? क्या दारुए घटना है ऐसी ? रुद्ध कठ क्यों बोल न पाते ? क्यो नयनो से नीर वहाते ? धैर्य घरो, क्या हुम्रा बताम्रो ? मत सकुचाश्रो, मत भय खाग्रो ?

गीतक छन्द

क्या कहे हम भ्रार्य । कुछ भो नही जाता है कहा, वेदना से व्यथित हो जतखण्ड मानस हो रहा।

^{*} रामायरा

38

बाध्य हो कर्तस्य से झाना पड़ा प्रभुवर सहा , झापके झतिरिक्त स्वामिन् । त्राए हमको है कहां ?

चतुष्पदी

भीर नहीं भागे कह पाए रसना रकी हृदयं भर भाए। पुनरिप भीरधुवर समभक्षे भन्तर का उद्वर्ग मिटाते।

तुम सव ही मेरे विश्वासी स्वामिमक्त! शाक्रा श्रविवासी। माई। विना कहे क्या जानू? सत्य स्थिति कैसे पहवानूं?

वित ध्यान मैं उस पर दूंगा यवाशीझ प्रतिकार करूंगा। यो हो सही-सही बतलायो, मेरेसं कुछ भी न हुपाया।

देव ! नगर में जो चर्चाएं ।
फैनी हैं नया-नया अतसाएं ।
कहना चाहते कह मां पाते ।
हम सबके घन्टर भक्ताते।

क्या कहें मुर्ने कर्मों की धशक्त कहानी। कसतीकभी न इसके बागे मनमानी।

जिसक निए देव ने इतने भीषणु कष्ट उद्घाए। सतत परियम कर संगर के साथन सभी बुटाए।

सव-पना धोर है बेरा

सेतु वाध कर महासिन्धु पर प्रखर शौर्य दिखलाया। कितने घीर-वीर सुभटो का रए मे रक्त वहाया। महाशिक्त श्राधात भयकर लक्ष्मराणी ने भेला। प्राण हथेली मे रख जुभा प्रएा पर वीर श्रकेला। श्रीर श्रन्त मे दशकधर को यम का ग्रास बनाया। सीता को लौटाकर मन मे भारी हर्ष मनाया। सर्वीधिक सम्मान वढाया श्रपने श्रन्त पुर मे। तथाकथित उस महासती का श्रपयश है घर-घर मे।

दोहा

लका में एकािकनी रही सतत छ मास। उसके ग्रंडिंग सतीत्व पर कैसे हो विश्वास। श्राकित दशमुख हृदय रहा सदा उस ग्रोर। बना वासना-पूर्ति को, कोमल ग्रौर कठोर।

- * बिठा अकेली पुष्पक में रावरण ले जाया करता था, निर्जन उपवन में प्रमोद से जी बहलाया करता था। विद्या, यन्त्र, मन्त्र से जिसने लिए देव-देवी भी कील, क्या सम्भव है उसके आगे ? रहा अखण्डित उसका शील।
 - † ये ऐसी तकें हैं जिनका सिवतर्क न उत्तर दे पाते, ग्रात्मीय ग्रापके जो ठहरे, दिल को कचोटती ये वातें,

^{*} रामायरा

^{ां} सहनासी

बौद्धक सामाधिक शावनिक सब क्षेत्रों में हैं चर्चाए गित्तर्यों-गित्तर्यों में घर-घर में स्थामिन!किस-किस को समध्यए।

बोहा

भीर रमिणायां हैं बहुत सुन्दर रम्याकार। क्यों न छोड़ देते उसे रखने सोकाचार

> प्रस्थक्ष बड़ों के सम्मुक्त मा कोई भी महीं कहा करता, इरके मारे छूप-छूप कर हा विप्तत का स्रोत बहा करता भ्याउँ के मंह पर कीन कहें यह सबसे बड़ी पहेंसी है मागे स्तवना पीछे मिन्सा सामारस्स जन की श्रीकी है।

> क्या किसे कहें ? क्या उत्तर दें ? युत-पुत कर ही रह आते हैं जनमत के माये जोर नहीं अल-पुत कर ही रह जाते हैं कस सुनें कहां मपबाद यही विज्ञोनित कातावरसा हुमा, जिसका मपबाद करती जनता उसका मपबाद करती जनता उसका मोते भी मरसा हुमा।

यह नीति वाक्य सुन राघवेन्द्र जनता को भ्रान्ति मिटाएगे, ग्रागे-पीछे चिन्तन पूर्वक ग्रत्युत्तम कदम उठाएगे, उत्तेजित, उद्वेलित ग्रन्तर क्षण भर मे चेहरा बदल गया, चर खिसक गए हैं एक-एक जब देखा खिलता रंग नया।

गीतक छन्द

सुन भ्रकित्पत कल्पना यह, राम दु खित हो गए, खिन्न मन विश्राम गृह मे क्लान्त होकर सो गए। ज्वार विविध विचार के हृदयाब्धि मे भ्राने लगे, लहर बनकर भ्रोष्ठ तट से शब्द टकराने लगे।

दोहा

ऐसे कैसे लोग ये करते हैं बकवास। सहसाहो सकता नही कानो को विश्वास।

*सुन के छिछले लोगो की ऐसी बात, सीता को ऐसे कैसे छोड दू। होता चिन्तन से मन पर वज्राघात, उस कल्प-लता को कैसे तोड दू।

बोल रहा है स्वय शील, जिसके जागृत जीवन मे। शौर्य भलकता है सतीत्व का, दीप्त युगल लोचन मे।

#लय—मिन्दर मे काई ढूढती फिरै

रावरा क्या सूरपति भी भाए तवपि म विचमित होती। भरा बदय दे रहा साझी भटम पतिवृत ज्योति । ताफिर थों भपवाद भयकर मधों अनजा में छाया। क खन समक्र में प्राता किसने भारी भ्रम फैलाया। बहुते हैं जो चर, उसम भी मलक रही सजवाई। विना सस्य हार्दिश देख इतना देता मही दिसाई। उनके कहन स क्या हो जो कहते सुनी-सुनाई। धत प्रतिधत है सदी जानकी सहाय है ना पाई। पर घर नासक श्रीक-दोक ये सही बाद क्या जानें। विना विचार निये भौरों पर कसते दीसे दाने। महीं नभी भी सीता बन संपर की बोछा करती। उत्तट जाम चाहे प्रमार भी पत्तटे चाहे धरती। होन की क्या होनी सम्भव हर मानव की गलती। नयान पष-प्युत हो बाती है गाड़ी चलती घसती। ऐसीभूस कर वैदेही बात न प्रवासी मन म। मैं को परस धुकाह जिसको सपन सहजीवन में। प्रसामन मं प्राकर घर, ये इधर-उधर हो सकते। या भरताय जान पर भी मानवता हो सबते।

> भावस्यक ग्रह मैं ही जाऊं गत्य स्थिति का पता सगाऊं। वर्ष गति विस्वाम पराया निवर्तों न ही योगा नाया।

• नव-नी ही रे नवाना

है सीता प्रागो से प्यारी, सती गुगावती वह सन्नारी। फिर क्यो ये भूठी चर्चाए, जन-मानस मे ग्राशकाए।

में इसका नित्कर्ष निकालू, कानो मे यो तैल न डालू। करू भ्राज ही निर्णय सारा, रोकू इस विप्लव की धारा।

है प्रवाह गडरी जनता का, ग्रस्थिर ज्यो शिखरस्थ पताका। क्षरा मे इधर-उधर हो जातो, नही सही चिन्तन कर पाती।

दोहा

तमा भ्रमा की यामिनी पहने कपडे श्याम।
एकाकी तलवार ले निकल पडे श्रीराम।
*सूमते गली-गली, ग्राज श्रकेले राम।
एक ही हवा चली, नही राम मे राम।
जहा जाते सुनते वही, वे राम नाम बदनाम।
सूमते गली-गली, ग्राज श्रकेले राम।
मानो जनता के रहा हो ग्रीरन कोई काम।
खुली निन्दा कर रहे सब ले सीता का नाम।
हाय कलकित हो रहा है सूर्यवश श्रीभराम।
दुराचारिग्गी के बने हैं रघुकुल-तिलक गुलाम।

[#] लय-हिर गुरा गायले

₹¤

उसमें ही मासकत वे रहते हैं माठों याम । जिसने संका में किया छ-छ मासिक भाराम ।

नहीं सममते हैं भ्रमी भागे का दुप्परिशाम । समके भी क्षेत्र कहो अब होता है विधिवास ।

बोहा

ज्मोंही कुछ भागे बड़े खिल्ल मना रघुनाय। सहसा कार्नों में पड़ी गृह-माता की दात।

त हो निवृत्त सारे कार्यों से बैठा है समुख परिवार सबको सन् शिक्षा देती है बुद्धिया करती प्यार-दुक्तार। देखो सावधान रहना, रखना कृत-मर्यादा पर ध्यान ध्यर-स्वयर हो मत बन जाना कोई सीता राम समान।

रही नहीं कोई मर्यादा रहा नहीं कोई भाषार पत्नी के पीछे पागल वन राघव ने लोपी कुल-कार। सर्वेसर्वी बने हुए, काई म टॉकने कामा है। मन पाने क्यों करी उनने कोई म रोकन बाला है।

महासदी का जामा पहने कभी म परिद्रा स्थिप सकती। कितमा कोभी काक-कालिमा नहीं कभी भी धुल सकती। सदी-साम्बिमां भीर राजियां बैठी-बैठी रोती हैं। उस्टा भूग सामा देकों कुलटा पटरामी होती है।

जिसके इंगित पर ही रहुबर एक-एक इग अरते हैं प्रपन्ने प्राणों से भी बढ़कर प्यार हुवय से करते हैं। पर वे देशीजी राज्ञण के करणों की पूजा करती इन पायाचारों से कैसे टिक पायेगी यह करती।

[†] रामायण

दोहा

दे कानो मे अगुली, ले लम्बा निश्वास। चले राम सहसा रुके, वृद्धजनो के पास।

* देखो भाई । दीख रहे हैं किलयुग के ग्रासार रे। राजघराने में भी पलते ऐसे पापचार रे। नई हव। की लहर राम पर सबसे ज्यादा ग्राई, घुमा वनो में साथ-साथ उसको ग्राजाद बनाई, बेचारी बूढी माताए तो करती रही पुकार रे। देखो भाई । दीख रहे हैं किलयुग के ग्रासार रे।

यो उच्छ खल रहने वाली, मर्यादा क्या जाने? कुल की ग्रान ग्रौर घर की उज्ज्वलता क्या पहचाने? रावरा के साथ रहा निश्चित उसका ग्रनुचित व्यवहार रे। देखो। भाई दीख रहे हैं कलियुग के ग्रासार रे।

मनमानी मौजें की, सोचो । कौन देखने वाला, दशरथ नृप होते तो कभी न लगने देते काला, घर मे भी पैर न रखने पाती, बिना करे प्रतिकार रे। देखो भाई। दीख रहे हैं कलियुग के श्रासार रे।

राम-राज्य मे बूढो की तो होती नही सुनाई, भले, ग्रनुभवी, विज्ञ, विवेकी सबको मिली विदाई, हा मे हा भरने वालो की, ही बनी ग्राज सरकार रे। देखो भाई । दीख रहे हैं कलियुग के ग्रासार रे।

^{*} लय-कोटि-कोटि कठो से गाए

मन्त्रियसेता बोहा

चुपके से चलते बने करते उन्हापोह। भागे भाषा साममे युवकों का विद्रोह।

मब मधिक न घलते पायेगा
मनमाना मस्याचार यहाँ
मब मधिक न चलते पाएगा
छोता का पापाचार यहाँ
यह वडे केंद्र की बात मनी तक
कुते राम के कान नहीं
बह राजा क्या जिसके कर का

वह धासक क्या जिसके घर
में भी हो ऊचा प्राचार नहीं
वह त्यायी क्या जिसके घर
घत्यायों का प्रतिकार नहीं
धाकेत भूमि यह है जिसमें
मधिकार प्रजा को भी धारे
को त्याय-शीष्टि के साम कमे
के ही नुप प्राणों से प्यारे।

हो जनता में सम्मान नहीं।

पत्र से होते का इधर-उघर क्या समझो उनकी और नहीं घटना धौदास गरेरकर की हमको करती श्राङ्कान यही धपनी इस मातृभूमि पर हम झम्याय महीं होने क्री भारत् के गौरव को खोकर सोए न, कभी सोने देगे।

गीतक छन्द

जहा मिलते एक से दो, वात करते है यही, श्राजकल की नई चर्चा, सुनी तुमने या नहीं? कौनसी? क्या उसी सीता के लिए तुम कह रहे, चित्र कैसे राम जन-श्रपवाद इतना सह रहे?

श्राज घर-घर मे बना यह विषय वार्तालाप का, पूर्ण भर कर घडा श्राखिर फूटता है पाप का। बडे घर की बात भाई। कहे तो किसको कहे, यही श्रच्छा है श्रपन तो, मौन होकर ही रहे।

अयश सुन-सुन राम के तो कान वहरे हो गए, दुख से घायल हृदय के घाव गहरे हो गए। चल्पुर बाहरा जरा, गतिविधि वहा की भाक लू, अल्प शिक्षित निस्व जन की, भावना भी ग्राक ल।

दोहा

पहुचे ग्राघी रात को राम वहा सविषाद। भोबी-भोबन मे जहा, चलता वाद-विवाद।

भोबी भटपट खोल।
 खोल-खोल दरवाजा,
 बाहर खडी ग्रकेली रे।
 नही है साथ सहेली रे,
 घोबी भटपट खोल।

^{*} लय-पनजी मुद्दे वोल

यिक-मरीक्षा प्रतिदिन ऐसे नाटक करना यह क्या सेरी धीक्षी रे.

¥3

मुक्ते पता क्या इससे बढ़ती देल विश्वनी रे चनमन्त्री झौर पहेसी रे

कितनी देर हुई, भावाजें मैंने कितनी देसी रे, भवतक लगान सगता बोतल श्रीयक उड़िली रे (मा) बंटी ज्यादा लेसी रे!

देना व्यर्थे दुस घवसा को यह क्या धादत मैकी रे या घर में बिठलाई कोई सई नदेती रे इस्प रमा असबेसी रे

> * जातू भाई अहां जा तू भाई अहां देरे लिए महीं स्वान मही।

> > ग्रपनी कुस सर्यावा सूस कुलटा चाली घर घर घूम फिरती रहती जहाँ-तहां। तेरे सिए नहीं स्वान महां।

> > जान चुका सब तेरे परिम होने न बूंमा घर धपविम (कह) इतनी देरलगाई कहां? तेरे मिए महीं स्वान सहां।

ति क्या जाने नगर केठ की किछनी दूर हवेसी रे, बर्चों वैठी रही वहां तब मिसी प्रमेती रे भीर यह पुत्र की मेनी रे।

सय-पैसी बाबुपित † सब-पत्जी मुंद्र बीसे

भूठी घौस जमाता मानो सौपी हो कोई थैलो रे, तेरे साथ सदा से ही विपदाए भेली रे, फट गए पाव-हथेली रे।

- * पितता रहने दे बकवास, जा उस नव प्रियतम के पास, होगा तेरा सम्मान वहा, तेरे लिए नहीं स्थान यहा।
- ं तेरी मा, दादी, नानी की महिमा घर-घर मे फैली रे, किस मुह से दे रहा चुनौती कटुक कसैली रे, (हू) मैं भी चतुर चमेली रे।

दोहा

वक-भक कर क्यो कर रही मेरी नीद खराब। निकल यहा से पापिनी सौ का एक जबाब।

‡ बोल जरा सम्भाल वदन से, छाती पर रख हाथ विचार, इस घर मे तेरे समान ही है मेरा पूरा अधिकार। देखा तेरा उच्च घराना, देख लिया तेरा कुल-वंश ? श्ररे ! राम से भी ऊचा क्या है, कोई मानव अवतश ?

नहीं सुना क्या उनके घर में सीता का कितना सम्मान ? पूज रही है जो रावरा के चररा मान करके भगवान। तू बेचारी किस गिनती में बोल रहा वढ-बढ क्या बोल? बस रहने दे डींग हाकना, उठ, भटपट दरवाजा खोल।

^{*} लय-ऐमो जादुपति

[†] लय-पनजी मुडै बोल

[‡] रामायरा

योहा

री ! पापिन ! क्यों कर राष्ट्री मुक्ते राम के सुस्य । विसने पत्नी के लिए क्षोया भ्रपना भूल्य

> है समरदार को यहां दूसरी भार राम का नाम निया जिसने राजा होते ही इस सिंहासन को बदनाम किया मयभीत बड़ा वह नायर है पत्नी का मोह न खोड़ सका सस दुराजारियों से अपना किचित् सम्बाधन तोड़ मका।

होती मेरे घर ऐसी तो तरसाण ही मैं दुकरा देता घरसे निकाल बाहर करता साठों से ओवन से नेता यदि मुक्ते राम की उपमादी हो मारे किना न सोक्षा मागी से बदन मुक्तस दूंगा जिसर निका मीठ से फोक्सा।

बोहा

भव न वहांपर टिक सके एक पसक भी राम। सीचे का विभाग-गृह में पासा कियान।

ः ३ : परित्याग

वोहा

री ! पापित ! क्यों कर रही मुक्ते राम के सुन्य । जिसने परनी के सिए कोया धपना मूल्य

> है सबरदार जो यहां दूसरी बार राम का नाम निया बिसमे राजा होते हैं। इस सिहासम को बदनाम किया मयमीत बड़ा बहु कायर है पत्नी का मोह न छोड सका उस दुराचारिसी से भपना किंपिस सम्बन्धन तोड़ सका।

होती मेरे घर ऐसी तो तरकास ही मैं दुकरा देता घरसे निकाम बाहर करना मार्चों से जीवन से लता यदि मुक्ते राम की उपमावी तो मारे किना न खोड़गा भागी से स्वता न खोड़गा भागी से स्वता न सुलस बूंगा णिर भिड़ा मील से पोडूंगा।

बोहा

मजन वहांपर टिकसके एक पलक भी रागः सीचे भा विश्वास-मृह में पासः विश्वासः।

गीतक छन्द

विश्व-वातावरए। सारा तम निमज्जित हो रहा, जन-समूह अनूह निशि के व्यूह मे था सो रहा। टिमटिमाते तारको की क्रान्ति ज्योति-विहीन थी, प्रकृति ध्वान्तावरण मे तल्लीन सर्वाङ्गीरण थी। अभ्र, अवनी, सर, सरोरुह, श्रान्त-शान्त नितान्त थे, सरित्, सागर-शब्द रह-रह हो रहे उद्भ्रान्त थे। विहग, पन्नग, द्वय-चतुष्पद, सर्वत निस्तब्ध थे, हुई परिशात गति स्थिति मे, शब्द भी नि शब्द थे। किन्तु राघव का हृदय ग्रान्दोलनो से या भरा, घूमता ग्राकाश ऊपर, घूमती नीचे धरा। तल्प-कोमल, निशित सायक तुल्य-दु खद लग रही, स्वय उनको हा । स्वय की भावनाए ठग रही।

* कर्मों की कैसी माया,
मैं श्रव भी समफ न पाया।
हा । कितना कब्ट उठाया,
कर्मों की कैसी माया।
राजपाट को छोड प्रवासी,
वर्षों बना फिरा चनवासी।
हा । सूख गई यह काया,
कर्मों की कैसी माया।

^{*} लय-करमन की रेखा



उग्र लोक-विचार ये दवने न पाएगे ग्रभो, विना पलटे हृदय पड़ने का प्रभाव नहीं ग्रभो। ग्रत सीता को गहन में छोड़ देना चाहिए, मोह के इन वन्धनों को तोड़ देना चाहिए। लोक-हित के सामने, हित प्रेयमी का गौगा-सा, ग्रव रहा ग्रतिरिक्त इसके दूसरा पथ कौन-सा। बैठते-सोते कभी वे बोलते उद्वेग से, हो रहे हैं किन हृदय की कल्पना के वेग से।

दोहा

निशि का दुखद दृश्य वह रहा हृदय को तोड।

ग्रगडाई लेकर उठे रघुवर शय्या छोड़।

उदित प्रकम्पित-सा ग्रह्ण, ग्रह्ण प्रभ्न को चीर।
देख ग्रनिष्ट उदर्क यह, निष्प्रभ हुग्ना शरीर।

लगते है ग्रसुहावने विहगो के क्ल गित।

पावन दृश्य प्रभात का ग्राज हुन्ना ग्रस्फीत।

कोध-वलेश मे कापते ग्राए बाहिर राम।

कर सत्वर सोद्विग्न मन सब ग्रावङ्यक काम।

* सामन्त्रण श्रम्हित सभ्यो की बुलवाई श्रान्तरिक सभा, सन्न रह गए सभी सभासद देख राम की उग्न प्रभा। रग् उत्तर श्राया श्राखों में, श्रग हो रहा श्रस्त-व्यस्त, शब्द न कोई बोल सका, बैठे निम्नानन मौन समस्त।

दोहा

श्रोष्ठ काटते दसन से बोल उठे श्रवधेश। श्रपने मन मे कर चुका निर्णय एक विशेष। सम्बादिरहसहा मारी ना, ज्यों साधाद महामारी ना। नया विधि ने जान विद्याया कर्मों नी कसी साया।

¥ε

पागस वी सी कर-वर मातें री-पो वाटी कितनी रातें। वह मक्तित है प्रति-सामा वर्षों वी कैसी माया।

द्रकि-परीक्षा

करवी कितनों को क्रुवीनी रए में चून वहाण्यों पानी। रावए। को मार गिराया कर्मो की कैसी माया।

सीताको घरसाया धपने देख रहा पासुक के सपने। हा! यह पुदिन क्यो भाषा कर्मी की कसी साया।

गीसक छन्द

धोषम् भव कौनसा पम मुग्ते सेना चाहिए (क्या) जन-कर्माकत जानकी को खोड़ केना चाहिए। मोह मन में मेकिसी का इपर जन-विद्रोह है किस खोड़? क्या करू? कर पहे उद्धापोई हैं।

हो उपेक्षा प्रका-कन को नार्य प्रस्पवहार्य है प्रत उस पर प्यान देना हो गया प्रनिदार्य है। सूर्य-कुत का पदा गौरदमय रहा इतिहास है क्षम्य उपेमें नहीं यह मासिन्य का घानास है। भाईजी में सच कहता हू, महामती है सीता। जिसके ही सतीत्व पर हमने लका का रए। जीता। सूर्य, चन्द्र, श्रम्बुधि चाहे, प्रपनी मर्यादा छोडे। तो भी कभी न जचता भाभी ग्रटल पतिवृत तोडे। चाहे विना निर्जरा कोई कर्म-कटक को मोडे। तो भी कभी न जचता भाभी अटल पतिवृत तोडे। ग्रभवी मुक्त वने, ग्रलोक में चाहे पूद्गल दौड़े। तो भी कभी न जचता भाभी ग्रटल पतिवृत तोडे। साडम्बर जल-मथन कर चाहे नवनीत निचोडे। तो भी कभी न जचता भाभी ग्रटल पतिवृत तोडे। मेरु भले डिगे, पर सीता डिग न सकेगी प्रगा से। पूछो उसकी गौरव-गाथा लका के कगा-कगा से। टुकडे-टुकडे हृदय हो रहा, सुन बचपन की बाते। सीता । सीता कर रोते क्या ? भूल गए वे रातें। होगा यह श्रन्याय, गई यदि महासती ठुकराई। यो कहते-कहते लक्ष्मराजी की श्राखे भर श्राई।'

दोहा

तमक उठा लकेश तब कौन कह रहा नाथ। वैदेही के विषय मे करले मुभसे बात।

'लका का करा-करा बोल रहा
 है महासती सीता माता।
 लका का जन-जन बोल रहा
 है महासती सीता माता।

^{*} लय-महावीर प्रभु के चरणो मे

प्रमि-परीका

सौमित्री, मुप्रीव विभीषण सुन लेना हुनुमान । सोता को मैं छोड रहा हु रखने कुल-सम्मान । प्रभाजनो में पैला है वितना नेरा भपवाद दूषित वासावरण हो रहा भारी बढ़ा विधाद शासक कहलात तुमसब क्या दिया किसी ने स्थान । सीता को मैं छोड़ रहा हु रखने कुम-सम्मान ।

1.

वर घर में चर्चा है सीठा का कांधिश माचार सहन महीं होते मुक्ते ये तीचे शस्त्र प्रहार करना होगा स्वय स्वयं ने स्वायों का विभाग । सीता को में खोड रहा हू रखने कुल-सम्मान ।

जान रहा हूं समक्त रहा हूं सीता है निर्दोष पर मैं विश्वसदेशकर हूं यह जनता का भाकोश भवे: उक्त निर्योग पर पहुचा बन करके पाथाए। नीना को मैं खोड रहा हूं रखने कुल-सम्मान।

धोहा सदम्रण के दिल पर हमा मानी वि**यु**त्पात ।

माईजो | नर्यों नह रहे, यह प्रमुहामी बात।

' भैया | राम | यों सीठा को नहीं छोड़ें।

विस्व विभाम ! यों सीठा को नहीं छोड़ें।

नारी रतन प्रमुख्य भारता तुख्य स्थामी सीठा।

गृह-सबसी मायुर्य मृति-सी सब्दुल्य गौरव मीठा।

सहज सुकोमस सरक ग्रन्स को समृत करती सीता विषम परिस्कितियों में जो कभी नहीं भय भीता।

सय-भंदन भाव मनाएँ वाएँ † सय-धन्त्रों में नहीं साह

दुर्दिन आते तभी देव । ऐसी दुर्मित है आती। गर्भवती, गुरावती सती, वया वन मे छोडी जाती ?

त्रत नाथ से नम्न-निवेदन, चिन्तन करें दुवारा। उलटी-सुलटी बहती यो ही,यह जन-मत की घारा।

दोहा

होठो मे करने लगे, राघव स्वर सन्धान। इतने मे ही बीच मे, बोल उठा हनुमान।

* 'सबको तो प्रभु ने पूछ लिया क्यो मूफे पूछना भूल गए, जाकर लका मे प्रथम बार ला मैंने ही सवाद दिये, देखा मैंने इन ग्राखो से जब राम-राम वह करती थी, ग्रलके विखरी थी गालो तक टप टप टप ग्राखे भरती थी। जब गिरी मुद्रिका गोदी मे उस समय दृश्य कुछ श्रौर मिला, सवाद दिया जब प्रभुवर का मानो वह मुरभा सुमन खिला, जब श्राई मन्दोदरी वहा किस तरह उसे भी फटकारा. इस नारी के ग्रागे न कभी टिक पाता रावरा बेचारा।

सहनागी

स्राप्त-परीका सम्म से इति तक मैं नहां रहा

क्या-क्या उसने वालंक सहा करताहु अब मैं स्मरस्य मरस्य का अय-सा मन में छा जाता।

कैसे फटकारा करती थी कसे मलकारा करती थी कसे दुस्कारा करती थी जब जब सम्मुक रावण भाता।

अगवधा वह अगदस्या है कुल की साधार स्तम्या है उसके प्रति ऐसा चित्तन क्यों मैं तो कुछ समक्ष नहीं पाता (

वोहा

बेमें किपपित धार्यकर ! होकर चतुर चकोर ।
किसकें कहते से बने इतने धार्य कठोर ।
ये मोन बोक हैं इनको बार्तो में धार्यन धाइए ।
सों बिना विचारे, ऐसा मत अनुभित कवम उठाइए ।
मोर्गो का क्या ये तो गोवर के कीमे के साथी ।
नहीं धरिचयां रसना में यह इधर-उधर हो जाती।
मोच-कथन से इरने वामे जीवित रह ना पारे ।
चुने घौर पैदस दोनों की सोच मजाक उड़ाते ।
मून गए न्या वह दिन जिस दिन सुभक्षो पा मुनम्प्रया ।
ग्यापिय ! सब धर्म को ही मों कैंगे जनकाया ।
पर्मी चाहे कैंगी भी हा बया जाती दुरराई ।
जिसमें ऐसो महसती जो इस घर की पुष्पाई ।

नय-न्द्रारी रत सेनदियां

दृदिन ग्राते तभी देव । ऐसी दुर्मति है ग्राती। गर्भवती, गुरावती सती, नया वन मे छोडी जाती?

ग्रत नाथ से नम्र-निवेदन, चिन्तन वरे दुवारा। उलटी-सूलटी वहती यो ही,यह जन-मत की धारा।

दोहा

होठो मे करने लगे, राघव स्वर सन्धान। इतने मे ही वीच मे, बोल उठा हनुमान।

* 'सवको तो प्रभु ने पूछ लिया क्यो मुभे पूछना भूल गए, जाकर लका मे प्रथम बार ला मैंने ही सवाद दिये, देखा मैंने इन श्राखो से जब राम-राम वह करती थी, ग्रलकें विखरी थी गालो तक टप टप टप ग्राखे भरती थी। जब गिरी मुद्रिका गोदी मे उस समय दृश्य कुछ श्रौर मिला, सवाद दिया जब प्रभुवर का मानो वह मुरभा सुमन खिला, जब ग्राई मन्दोदरी वहा किस तरह उसे भी फटकारा, इस नारी के ग्रागे न कभी टिक पाता रावरा बेचारा।

^{*} सहनाग्गी

भपने संस्मरर्गों के द्वारा मैं बतनाता हू स्पष्ट विमो ! उसके तो लक्षरण सारे हीं होती जो स्त्री पच भ्रष्ट विमो ! सीता के सिए कड़ी से भी मैं कड़ा छपब खा सकता हू इसके सतीस्व को सम्मारण

व्यक्ति अभिका

¥¥

अब चाहे बतना सकता है।

जो बिना विचारे सोगों के
कहम से कदम उठाठे हैं

बे मेरे पूज्य पितामह ज्यों
माजिक रोसे पछताते हैं
महनाएं। विकास पर भी
मेरी माता का बहिष्कार
कहता है उद्देश बग म करो

वोहा

किकर्तम्य विमुद्धः से बोत उठै श्रीराम । च्या तुम सब को पूछने का महर्हि परिएगम ।

भवना का ऐसे दिरस्कार।

नमा तुम सब को पूछने का मह है परिस्तान।

मैं सीता को छोड़ूगा नाहे कछ भी हो आए।
निक्ष्य न बदस पाएगा चाहे को उसकन साए।

न्या नहते हो तुम सबसे ज्यादा में जान रहा हू निक्षंपण भूपए-कम की है यह भी मान रहा हू मैं न्या नोई बामन हूं मेरा भी कुछ किन्तन है कर मिया पूर्णुत मैंने सम्बेदण समुरीनन है

नव--तू बता-बता रे बागा

मुनकर यह श्रन्तिम निर्णय सबके मानम मुरभाए। मैं सीता को छोडूगा चाहे कुछ भी हो जाए।

दोहा

चुभे हृदय मे ये वचन, जैसे तीखे तीर।
स्रा करके कुछ जोश मे, वोले लक्ष्मरण वीर।

'कुछ सोचो विचारो रे । हृदय पर हाथ धरो ।
 थोडी गरमी उतारो रे । मेरा विक्वास करो ।

करता हू मैं श्रभी-श्रभी अपवाद प्रजा का बन्ध, जो न करू तो श्रार्य । श्रापके चरगो की सौगन्ध, इन्द्र मे मत उतरो।

जो कोई भी कही करेगा एतद् विषयक बात, प्रारा-दण्ड दूगा मैं उसको निश्चित निर्व्याधात, बात यह मत विसरो।

गए शहर में श्राप मुभे तब क्यों न ले गए साथ, वक-बक करने वालों को दिखला देता दो हाथ, भ्रात कर्तव्य स्मरो।

जनता के पीछे क्या हम हो जाएगे बरबाद , ज्ञान्त चित्त हो, दूर हटाग्रो, ग्रब ग्रपना उन्माद , विषाद विवाद हरो ।

कहे-कहे करते रहने से क्या चलता है राज्य, किस-किम का मुंह देखे, हमे चलाना है साम्राज्य, प्राज्य सुख सुयग वरो'।

^{*} लय-शर वाघे कफनवा रे

दोहा

मोन दवाना है उचित सार्वजनिक विद्रोह। प्रम्ह्या है हम छोड़ दें धीताका ही मोह। सेनाध्यक्ष कृतास्त्रमुख! या कर दूयहकान। बन में उसकी छोड़ था यों बोले धीराम !

सोरठा

भर नवने में नीर राज्य का मुह्दाकत । बोले सक्ष्मण बीर रेभैगा क्या कर रहे ? भी भैगा ! मरे ! मानी को मत ठुकराभी भैगा मेरे ! सबक्षा की साज क्याभी कृत की ना ज्योति कृष्माओं कृत्मामो ।

र्मया मेरे! धवसा की सात्र वचायो। शोसवती है मरी मानी सक्यों सती है मेरी मानी! सद्गुल-गौरव सुल सम्मत-सम् जीवन के ताले की पावी।

इसको न वोँ हीं गंबाधो गंबाधो । रो-रो पीछे पछ्ठाधोने सब कहता हू इक पायोगे। सीता! सीना! रटते-रन्त पूरे पासक बन आधोगे। पहिलाही मनको समक्ताधो समस्त्राधो

कहना मानो समिक न तानो धपनी भावी को पहुंचायो र साग कर क्या दुष्पल होगा विश्व विकक्षण उसको जायो। विगयो को एक सी कतायो समासी

यों धनुतापित नयों नरते हो नयों यह धनुमित क्या भरते हो । धन्तर-चर मंत्रानर बैठों को इस जनता छे करते हो ।

प्रस्तर-वर मं जाकर बैठों को इस बनता है करते हो। युत्पी को धव मत उसभायों उसभायों। सब-यो बैठा: केरे सभी के बन्दन को प्र

दोहा

'चुप रह लक्ष्मिएा, क्या मुभे देता है तू सीख। बोलेगा यदि ग्रौर तो नहों रहेगा ठीक। ग्रव न सुनूगा एक भी श्रनुज । किसी की बात। गरज उठे राघव पुन, मार धरा पर लात'।

* क्रोध क्लेश से उद्देलित हो श्रविरल श्रासूबरसाए, तत्क्षरा लक्ष्मरा छोड सभा को उन्मन, घर को श्रा पाए। भाभी का श्रपमान इधर है, उधर ज्येष्ट है तात समान, कभी न पहुचो जैसी, वैसी श्राज लगी है ठेस महान। 'क्या करता है रे! कृतान्तमुख! बैठा-बैठा श्रभी यही, दी श्राज्ञा जो मैने, क्या तू ने कानो से सुनी नही? घोर विपिन मे उसे छोडना, सहज बला टल जाएगी। नहीं रहेगा बास श्रौर बासुरी न वजने पाएगी।

दोहा

स्खिलित चरगा, किम्पित वदन, आकृति श्रिधिक उदास । पहुचा सेनानी सपिद महासती के पास । 'उपवन मे श्रामोद से करने दोहद पूर्गा । बुला रहे प्रभु श्रापको बैठो रथ मे तूर्गा ।'

> ं ज्योही चलने को सज्ज हुई, फड-फड फडका दक्षिएा लोचन , यह क्या [?] इस मगल वेला मे , क्यो होते हैं ऐसे ग्रशकुन

^{*} रामायरा

^{ां} सहनाग्री

बोहा

यान दवाना है उचित सार्वजनिक विद्रोह। पम्बाहै हम छोड वें सीता का ही मोह। सेनाम्यक कृतान्त्रमुख! जा कर तूयह काम। वन में उनको छोड़ बा यों बोसे थीराम।

सोरठा

भर नयनो म मीर रामव का मृह्यांकते। योसे सक्मणा बीर रेभैया! क्या कर रहे? यो भैया! मेरे! भाभी को मठ टुकराभी भैया मेरे! प्रवक्षा की साथ वधाओं

कुम की ना ज्योति सुमासा कुमामो। भैया मेरे! सबमा की साज क्वाप्रो। धीसवती है मेरी भाभी सक्वी सती है मेरी माभी!

सद्गुण-गौरव सुद्ध सम्पत प्रय जीवन ने ताम की पानी। इसको ग यों हीं गवामी येवामी।

रा-रो पीछे पछतामोगे सच नहता हु दुवा पामोगे। स्रोता! सीना! स्टहेस्टल पूरे पागल वन आमोगे। पहिलाही मनाको समस्रामो समस्रामो

कहना मानी प्रमिक्त न तानी प्रपत्ती भाषी को पहचानी । प्राम चन चमा दुष्फल होगा विज्ञ विचक्षाण उसकी जानी। विगको को घड भी बनाया बनायी।

यों धनुतापित क्यों करत हा क्यों यह सनुक्तित कम भरते ही । सन्तर पर में जाकर कैंटों को इस जनता से करते ही । गुल्की को यक मत उसमाधी उसमाधी ।

तय—पो त्रेया केरे शाली व इत्यक्त को "

भ्राग्नि-परीक्षा

ऐसा लगता है भाग्यदेव देते हैं मेरा साथ नहीं।

जव चली वहा से प्रथम-प्रथम
शकुनो ने मेरा पथ रोका,
क्या पता मुक्ते मिल जाएगा
यह अनायाम ऐसा मौका,
जीवन मे पहली वार हुआ
मेरे से यह विश्वासघात,
जो कुछ होना था हुआ भ्रात!
वतलादे अव तू सही वान।

गीतक छन्द

'मा। मुक्ते करदो क्षमा, मैं पूर्णत परनन्त्र हू, समक्त लो बस राम के द्वारा प्रचालित यन्त्र ह। भृत्य जीवन से भली है, मृत्यु हो ससार में, मैं नियन्त्रित यथा बन्दी बन्द कारागार में। नहीं कृत्याकृत्य कुछ, भी मोच सकता भृत्य है, जो कहें स्वामी वहीं बस कृत्य उसका नित्य है। दृष्टि के विपरीत उसका, बोलना भी पाप है, दासता मनुजत्व का सबसे वड़ा ग्रभिशाप है। दीन से भी दीन होना, श्रेष्ठ ग्रपर ग्रधीन से, हीन से भी हीन होना, श्रेष्ठ ग्रपर ग्रधीन से। भली सूखी रोटिया, परतन्त्र के पकवान से, भला है बलिदान, इस परतन्त्र के वरदान से।

दोहा

जिसको करते कापने लगता है चाण्डाल। वह करना पडता मुफ्ते, विवश काम विकराल। प्रीम-गरीका

होने वो मेरा क्या खेंगे जब कुमा रहे हैं प्राखेश्वर कुछ विन्तित-सी कुछ विस्मित सी सीघो वैठी रच सं धाकर।

2 5

गीतक सून्य समस्रक्ष पार्ड नहीं सीता शहन-सक्त को

बड़ा स्थम्बन घोझ यदि से सायदा मानेन नो । नदी मार्लो पर्वतों को पार कर घसता गया । सहस सरल स्वमादिनी नो देव हा ! छसना गया । सिहनाद सरस्य गया तीर पर रच रक गया स्थमित सेनानी सती के सामने सा मुक गया । सनस्य पक्कें मूक वाली हुदय मुंह को सा रहा फट रही छाती न कुछ भी वा सका उससे कहा ।

बोहा

वारुण हुदय विमोक कर धीता रही प्रवाक। 'चेनामी' क्या हो रही मेरे धाद मजाक। मरे!बोमताक्यों नहीं बता कियर है राम। मुक्ते कहां साथा यहां सेकर उनका नाम।

> सेनामी साध्य न कह याया धर-वर करता भाई भरता बोमी भैदेही भीरक स भाई दू ऐसे क्यों करता ? कहदे को दुख भी कहना है दरने को कोई बान महीं

च्ह्नाची

ऐसा लगता है भाग्यदेव देते हैं मेरा साथ नहीं।

जब चली वहा से प्रथम-प्रथम
शकुनो ने मेरा पथ रोका,
क्या पता मुभे मिल जाएगा
यह श्रनायाम ऐसा मौका,
जीवन मे पहली वार हुश्रा
मेरे से यह विश्वामधान,
जो कुछ होना था हुश्रा भ्रात ।
वतलादे श्रव तू मही वान।

गीतक छन्द

'मा । मुक्ते करदो क्षमा, मैं पूर्णत परतन्त्र हू, समक्त लो बस राम के द्वारा प्रचालित यन्त्र हू। भृत्य जीवन से भली है, मृत्यु हो समार में , मैं नियन्त्रित यथा बन्दी बन्द कारागार में। नहीं कृत्याकृत्य कुछ भी सोच सकता भृत्य है, जो कहें स्वामी वहीं बस कृत्य उसका नित्य है। हिष्ट के विपरीत उसका, बोलना भी पाप है, दासता मनुजत्व का सबसे वडा श्रभिशाप है। दीन से भी दीन होना, श्रेष्ठ श्रपर श्रधीन से, हीन से भी हीन होना, श्रेष्ठ श्रपर श्रधीन से। भली सूखी रोटिया, परतन्त्र के पकवान से, भला है बलिदान, इस परतन्त्र के वरदान से।

दोहा

जिसको करते कापने लगता है चाण्डाल । वह करना पडता मुभे, विवश काम विकराल ।

प्रनि-दरीका

 'वाचवान्य कर प्रयुक्तटी पर वना हृदय पापाए। समान । स्रोड रहा हू यहां धापको मैं रचुवर की धाझा मान । 'हैं! क्या मुक्ते यहां छोड़ोगे ? हाय राम! यह क्या घादेशा गिरी मूर्तिका हो स्यय्यन से सहन सकी व क्लेश विशेष ।

1.

बोहा

वैदही को मृत समक्ष रोताकर घनुताप। मांतूने भी मढ़ दिया मेरसर यह पाप। कौन मुने विससे कहू घपनी कब्छा पुकार। परवाश भीवन को घड़ों! सास्त-साम्व विक्कार।

सीता हुई स्थेत सगने से मृदु बन-पवन। होकर पुन प्रचेत सहसा घरती पर गिरी।

सोरठा

बोहा

किर सजा पा पूछती 'मरा क्या घा बोव ?

जिसके कारण राम ने किया भयंकर रोव।

'पाकर मोगों की बालों में प्रभु ने ऐसा कबम सलाया !
कोई क्या जाने मालाजी ! जाने राम राम की माया !
पता नहीं किसने जनता में मारी प्रम फैनाया !
क्षेत्र में भाषित होने का मुखा कर्लक लगाया !
रोपास्स्य हो यम पायको स्त वन में खुड़वाया !
हाय ! प्रमागे इन हाजों से यह पहुरम करवाया !
'व्या कमकिया बना मुखे यों रखुवर न ठुकराया !
सकमस्त्री क्या करते थे ? माई को नहीं मनामा !

चमायण 1 सय-⊶दुनिमा चम नाम नहि वाच्नो 'बातें कही नहीं कहने की, भान्ति-भान्ति समकाया। एक न मानी तो रोता अवरज अपने घर आया।'

† 'ले चल मेरे को एक बार कहनी है, उनको दो बाते, ठुकराना था तो कर कलक से मुक्त खुशी से ठुकराते, क्या मैं कोई ऐसी-वैसी, क्या मेरा कुछ श्रस्तित्व नही, यह स्पष्ट दीखता है पुरुषों में होता कुछ श्रपनत्व नही।

यदि कुछ ममत्व मन में होता करते न कभी विश्वासघात, वयो हाथ पकडकर लाए थे जो निभान सकते नाथ । साथ, सबकी सुनली पर बात जरा मेरे से भी तो कर लेते, विश्वास न होता तो पीछे जो चाहे श्राप दण्ड देते।

दोहा

'वापिस जाने में नहीं, माताजी । कुछ सार। प्त्थर के आगे सभी विनति है वेकार।' 'मत ले चल, यदि रामं का तुभी नहीं आदेश। पर कह देना तू उन्हें, यह मेरा सन्देश।

[†] सहनाणी

नहीं कहेगा तो तुक्ते मेरी हैं सौगन्छ।

क्या मेरे सम्बेख पर भी कोई प्रतिबन्ध ? रिमेरी धाद्या के प्रमर सहारे प्रास्त्रप्रिय नयन सितारे टूटे जीकन-तन्त्री के तार हैं.

atta-eria-

दूटे जीवन-सन्त्री के तार हैं, होस्वामी ! सबसावा कीन कहो सामार है? मैंन वान्य रक्षी भी किठनो सागे की सामाए, सन की सन में रहीं साथ वे सारी समिसावाएं

षयमैं किसको क्या कहू सुनार्छ? बुक्त के दिन कहां विदार्छ। सूना-सूना कगता संसार है।

मैं गौरव से भूच रही भी भुभन्नी मुझी न नारी भरे घर में ठीन सम्ब को सत्ता विभुता सारी भारी रचुवर से प्रियतम मेरे

भारी रहुकर से प्रियतम मेरे स्टम्सासे देवर मेरे उसका प्रभुता का पारावार है। यगस पुत्र के जन्मोत्सव का देखा स्वप्न सुप्तका

होंनो पूर्ण कामनाएं सब है यह सबसर पहसा सबका समुचित सम्मान कक्यी वी मर कर बान कक्यी

वी सर कर दान कर्क्सी कितना विस्तृत सेरा परिवार है। साठाओं की धुमाधीव का गुम फस मुक्ते मिलेगा मुक्तरित मगन गीठों से ग्रुट-गोगस कुद किसेगा

नुसारत नगम याता छ बुहुआगण सुनामनगा होगा हर्गोत्सन मारत मर में यमिनन सुशियां नर-मर में बाधों-जयनारों सी द कार है।

10

किन्तु ग्रापने फेर दिया उन ग्राशाग्रो पर पानी, हाय । भिखारिन ग्राज बनादी जो कल थी महारानी, कसी की है मेरे से छलना, कलना इसकी करना दुश्वार है।

भी न बिचारी रे! * राम कुछ क्या ऐसे ठुकराई जाती अबला नारी रे। नाथ | कूछ भी न विचारो रे | कुछ भी न विचारी रे। कहा सुखो मे पली, कलो-सी राजदुलारी रे[।] कहा अकेली भटक वाह । बालिम बलिहारी रे। कहा स्वर्ग-सी सत्ता विभुता, प्रभुता भारी रे! कहा अकेली भटकू वाह । बालिम बलिहारी रे। सब मेरे प्रिय थे, लगती मैं सबको प्यारी रे! ग्राज वसन भी बेरी, वाह । बालिम बलिहारी रे । मन की थाह रही मन में सारी की सारी रे! चढा शिखर पर सीघी ही पाताल उतारी रे! राम-राज्य मे सभी सुखी, मैं ही दु खियारी रे! कौन सुने ? मैं किसे कहू अपनी लाचारी रे। † कितना श्रच्छा रहता थोडा पहिले बतला देते . श्रपनी शकाश्रो का समुचित समाधान कर लेते. बोलो ! इतना क्या मेरा भय था . होता ,क्या महाप्रलय था, किसने की खडी वडी दीवार है।

^{*} लय-मनवा नाय विचारी रे

[†] लय-भूठी-भ्ठी दुनिया की प्रीत है

चरिक्र-सरीका TY

कोई धनकम नप्रवास स वरती

करके प्रपंधान न मस्ती अंदेशस का अभा माचार है।

परम हुएं होता यदि धपनी मुझ समक में पाती स्वीकत करने में न कभी भी विद्या परित्र दिसारी

धन्तर-घर में क्यों न मार द्वासा अपने हाथी स क्यों लांकिन कर छोशी ऐसे भीगों की बालों से मेरी इंग्ज़त में घल मिलाई सिवत सब भाव गमाई

हाय राम ! स्या नारी का काई भी मृहय नहीं है क्या उसका भौदार्य शौर्य पुरुषों के तुस्य नहीं है उसने ऐसा नगा पाप किया है किसको सताप दिया है विससे मिनती पग-पग इस्कार है।

परुषों का कैसा श्रदमाचार?

बोहा

यों माहें भरती हुई फैंक रही नि स्वास। देख रही वरती कभी भौर कभी भाकाश। कमी मौन हो सोचती टिका हाथ पर शीधा। कभी चीचार्ने निक्ताती सन्तर समाकी टीस।

री सीठा! क्यों कर रही क्या राम पर रोप। बास्तव में तेरे सभी इन्त-कर्मों का दोय। क्या ै इस जीवन में यों दुक्त ही दुक्त पाना ? तिन-तिस बन-बस सन में रो-रो-कर मर बामा ?

सय-हेमो बुत्तती समायका

था जन्म लिया जव से,
भाई विछुडा तव से,
ग्राए सकट नाना, क्या है इस जीवन मे।

परिण्य की शुभ वेला, उसमे भी दुख भेला, क्या उसका बतलाना[?] क्या है इस जीवन मे।

भटकी मैं जगल मे, वर्षों तक जल-स्थल मे, है किससे अनजाना, क्या है इस जीवन मे।

हा । मेरा हरण हुआ , जीवित ही मरण हुआ , महाभीषण रण ठाना, क्या है इस जीवन मे ।

जब इतना दुख भोगा, श्रव तो कुछ सुख होगा, यह मैने था माना, क्या है इस जीवन मे।

दूटे सारे सपने,
कोई न रहे भ्रपने,
श्रब क्या होना जाना, क्या है इस जीवन मे।

† जो होना वह होगा मेरा कोई सोच नही है, (पर)गर्भ-सुरक्षा करू कहा, बस चिन्ता एक यही है, ग्रव मैं जाऊ भी तो कहा जाऊ? कैसे ये प्रारा बचाऊ? दो-दो बच्चों का पूरा भार है।

लय-भूठी-भूठी दुनिया की प्रीत है

1Y प्रकि-गरीका

> परम हर्ष होता यदि भपनी भूम समक्त में पाती स्बीकृत करने में न कभी भी त्रिया चरित्र विज्ञाती कोई धनश्रम उपबास म करती करके प्रपन्नात न मरती

उचे कम का उच्चा भाषार है।

धन्तर-घर में क्यों न मार डाला धपने हाचों से क्यों शांक्षित कर छोड़ी ऐसे सोगों की बातों स मेरी इञ्जत में भूस मिलाई सचित सब धाब गमाई

पुरुषों का कैसा सध्याचार? हाय पाम ! क्या मारी का काई भी मुस्य नहीं है क्या उसका भौदार्य शौर्य पुरुषों के तुस्य नहीं है उसने ऐसा क्या पाप किया है किसका संताप दिया है जिससे मिलती पग-पग इत्कार है। वोहा

देश रही परती कभी धीर कभी बाकाया। कमी मौन हो सोचती टिका हाथ पर शीध । कमी बीक्स में निकसती धन्तर सन की टीस । री सीता । नयों कर रही स्थर्भ राम पर रोग। बास्तव में तेरे सभी इन्त-कर्मों का दोप। वया है इस जीवन में यों दुन्त ही दुन्त पाना ?

यों माह भरती हुई, फैंक रही निश्वास।

वित्त-तिस जस-जस मन में रो-रो-कर मर जामा ?

नय-देवो तनती बद्धाराला

था जन्म लिया जव से,
भाई विछुडा तव से,
ग्राए सकट नाना, क्या है इम जीवन मे।

परिग्गय की शुभ वेला, उसमे भी दुख भेला, क्या उसका वतलाना ? क्या है इस जीवन मे।

भटकी मैं जगल मे, वर्षों तक जल-स्थल मे, है किससे श्रनजाना, क्या है इस जीवन मे।

हा । मेरा हरएा हुग्रा,
जीवित ही मरएा हुग्रा,
महाभीषएा रएा ठाना, क्या है इस जीवन मे।

जव इतना दुख भोगा, श्रव तो कुछ सुख होगा, यह मैने था माना, क्या है इस जीवन मे।

ट्टे सारे सपने, कोई न रहे भ्रपने, अब क्या होना जाना, क्या है इस जीवन मे।

ां जो होना वह होगा मेरा कोई सोच नही हैं, (पर)गर्भ-सुरक्षा करू कहा, बस चिन्ता एक यही हैं, प्रव मैं जाऊ भी तो कहा जाऊ? कैसे ये प्रारण बचाऊ?

दो-दो बच्चो का पूरा भार है।

लय-भूठी-मूठी दुनिया की प्रीत है

प्रजापाल भूगान सूब धपना कर्तस्य निभाया, भागो पीक्षी को भागुक बन भागी पाठ पक्षाया , सन में भेरी मत चिन्ता करना ये रो भागों सत भरना , बस भपना इतना ही संस्कार है।

बोहा

रेक्तान्तमुख! है यही मेरी ग्रन्तिम बात। कहना समिनय राम से मूल न जाना भात।

† रविन स्थागी**है** प्रकार-प्रमा बाबाबर ने शीतलता स्रोधी धम्बज ने धपने सौरभ से सम ने व्यक्ति से मैत्री तीडी क्या पता कौनसे प्रवर्शित कर्मों की भीवरण मार टुई की महीं कस्पना विसकी भी बह भाग स्पष्ट साकार हुई। धनभिक्त रही मैं इतने दिन वहबातनाय! घव जान गई बहकावे में भा परिस्थाय करना धपनाई प्रकृति नई इस सञ्चाबियकत होसी का मेरे पर प्रथम प्रयोग हवा इन प्रविभिन्नम संयोगों का पस भरमें हाय[।] वियोग हुमा।

[†] सहगारी

परनास्तिकता के भ्रमर जाल में श्राप कही मत श्रा जाना, मिथ्या तत्त्वों के चंगुल में फस सत्य-धर्म मत ठुकराना, चल सकता मेरे बिना काम, पर नहीं चलेगा धर्म बिना, सुख-शान्ति-सम्पदा सुर तरुवर यह नहीं फलेगा धर्म बिना।

मेरी अनुपस्थिति मे क्रथमा प्राग्रेश्वर । बने रहे घामिक , जीवन मे कभी नही भूले हृदयेश्वर । ये बातें मार्मिक , हैं आप सूर्य कुल कमल सूर्य , वैडूर्य तुल्य नव ज्योतिर्घर , हो चिरजीव जय-विजय वरें , आनन्द करे भारतशेखर ।

लक्ष्मणा को कहना शुभाशीष,
रखना श्रघीश का पूर्ण ध्यान,
वे ही तो श्रपने सब कुछ हैं
तुम स्वय विज्ञ हो विनयवान,
मेरे पर सत्य सहानुभूति
इस सकट स्थिति मे दिखलाई,
उसका श्राभार भार मन पर
जीवन भर क्या भूलू भाई।

1 मेरी सारी प्रिय बहिनों को यथायोग्य कहना छोस्लाछ, प्रश्न के इगित पर सब चलना करना प्राप्त पूर्ण विद्वास । समत-सम्पा सबसे मेरा जाना सकुशन स्वामी पाछ कहती-कहती गिरो परा पर फैंक एक लम्बा निक्वास ।

प्रक्रि-परीक्रा

15

ः ४ : श्रनुताप

uferar/mi

ं मेरी सारी प्रिय बहिनों को यथायोग्य कहना सोस्सास

۱.

प्रभ के देगित पर सब प्रमान करना प्राप्त पूर्ण विश्वास ।

'क्षमत-क्षमणा' सबसे मेरा, बाना सङ्ग्रहाल स्वामी पास , कइती-कहती गिरी घरा पर फैंक एक सम्बा निक्वास।

चिमानह

गीतक छन्द

विषम वन की वीथिका पर जाल काटो के पड़े, रोकने चलते चरण को व्यय हो वैसे खड़े। भयोत्पादक विकल-भी वे तुमुल कल-कल नादिनी—वह रही उन्मत्त निदया विविध भावोत्पादिनी। गहन भगी, शिखर जगी, पूर्ण तम का राज्य है, सघन सावन घन घटा से हो रहा वह प्राज्य है। हृदय मे सीदामिनी उत्पन्न करती सनसनी, चल रहा शीतल पवन, ज्यो प्रेयसी हो उन्मनी। वारिदो के व्यूह से लगती सुनील वनस्थली, यात्म-गुण को यथा भ्रावृत कर रही कर्मावली। भटकतो व्याकुल मृगी ज्यो, हा। श्रकेली जानकी, है न कोई भी सहारा, वस शरण भगवान की।

दोहा

भय-भ्रान्त-सी भामिनी भरती है डग एक। फिर रुक जाती, सामने वन्य जन्तु को देख। सघन विटप के वक्ष मे छुपती है ले श्रोट। आहत हो गिरती कही, खा पत्थर की चोट।

गीतक छन्द

चन-विडाल, शृगाल, शूकर हैं परस्पर लड रहे, विद्याल करते कही दन्तूशलों से भिड़ रहे।



गीतक छन्द

विषम वन की वीथिका पर जाल काटो के पड़े, रोकने चलते चरग को व्यग्र हो वैसे खडे। भयोत्पादक विकल-सी वे तुमुल कल-कल नादिनी-बह रही उन्मत्त नदिया विविध भावोत्पादिनी। गहन भगी, शिखर जगी, पूर्ण तम का राज्य है, सघन सावन घन घटा से हो रहा वह प्राज्य है। हृदय मे सौदामिनी उत्पन्न करती सनसनी, चल रहा शीतल पवन, ज्यो प्रेयसी हो उन्मनी। -बारिदो के व्यूह से लगती सुनील वनस्थली, श्रात्म-गुरा को यथा श्रावृत कर रही कर्मावली। भटकतो व्याकुल मृगी ज्यो, हा । ग्रकेली जानकी, कै न कोई भी सहारा, बस शरए। भगवान् की।

दोहा

भय-भ्रान्त-सी भामिनी भरती है डग एक। फिर रुक जाती, सामने वन्य जन्तु को देख। सघन विटप के वक्ष मे छुपती है ले ग्रोट। श्राहत हो गिरती कही, खा पत्थर की चोट।

गीतक छन्द

वन-विडाल, शृगाल, शूकर हैं परस्पर लड रहे, द्विरद मद भरते कही दन्तूशलो से भिड रहे। ग्रानि-यरीका प्रवल पुरुद्धाच्छोट करते कहीं मृगपनि घूमते

भेडिय मासू भयंकर मोर द्वापद मूमते। बोहा

'Q' .

स्ती दूंडती फिर रही नहीं सुरक्षित स्थान । स्पान मना निम्नानना कोप रहे हैं प्राए) आए तो जाए नहीं कीन सुने चिस्कार) प्रपन इस नारीस्व को देती है चिक्कार)

धन्य भपमानो सं भरा हुमा है नारी-आवित

अपनानां सं नरा हुआ है नारा-वावन धरमानों से भरा हुआ है नारी-वीवन । धर्मियानों से बरा हुआ है नारी-वीवन विवदानों से विराहुआ है मारी बीवन । नारी का परिशल्प रहा गर के हाथों में

नारी का मस्तिरव रहा गर के हाचों में नारी का स्थानतत्व रहा नर के हाचों में। नारी का भ्रपनत्व रहा नर के हाचों में नारी का सब सत्व रहा नर के हाचों में। पूरवों में नारी का कोई स्थान नहीं है

पुरुषों में नारी का कोई स्थान नहीं है! पुरुषों का नारी पर कुछ भो भ्यान नहीं है! पुरुषों का नारी पर कुछ भो भ्यान नहीं है! हिसाने हुक में भी पुरुषों का साथ निभाषा

बिसने दुक्त में भी पुरुषों का साथ निभागां प्रभोक्तिनी रही जित तन के पीखे छाना। पर पुरुषों ने यह उसका प्राभार कुकाया मुक्त में बूठी पत्तम ज्यों उसको उकराया। प्रवामा उसे बनाकर रक्ता प्रमिकारों में अकद सिया हा! कृतिम लज्जा के तारों में। पलने नही दिया निसर्गज सस्कारो मे, फलने नही दिया यहच्छा व्यवहारो मे। है पुरुषो के लिए खुली यह वसुधा सारी, पर नारी के लिए सदन की चारदिवारी। सूर्य देखना भी होता महाभारत भारी, किसे कहे ग्रपनी लाचारी, वह बेचारी। मार मार वह अपने मन को सब कुछ सहती, जैसा होता, नही किसी से कुछ भी कहती। चिन्ता सदा चिता बन उसको दहती रहती, व्यथा हृदय की छल-छल कर पलको से बहती। पुरुष-हृदय पाषागा भले ही हो सकता है, नारी-हृदय न कोमलता को खो सकता है। पिघल-पिघल उनके श्रन्तर को घो सकता है, रो सकता है, किन्तु नही वह सो सकता है। जिसने जन्म दिया है, अपना दूघ पिलाया, स्वय दु खिता रह पुरुषो को सुख पहुचाया। समय-समय वीरत्व जगा सम्मान बचाया, हा । उसको ताडन का ग्रिधकारी ठहराया। चल न सकेगा पुरुषो । अत्याचार तुम्हारा, पल न सकेगा पुरुषो ! पापाचार तुम्हारा। फल न सकेगा पुरुषो । दुर्व्यवहार तुम्हारा, छल न सकेगा पुरुषो । भूठा प्यार तुम्हारा। नारी क्या तेरे मे भी कुछ ज्ञान नही है ? नारी क्या तेरे मे भी कुछ भान नही है? नारी क्या तेरे मे श्रपना मान नही है? क्या तेरे चिन्तन में कुछ भी प्रारण नहीं है ?

घपने यस पर नारी तुके आगना होगा कृतिम घावरलों को तुके स्यागना होगा। को सन्तुसन भीत हो नहीं भागमा होगा। सरम क्रान्ति का घीमनव घस्त्र दागना होगा।

वोहा

र्यो किन्तम करते विविध जाग उठा वीरस्य। समाववन में भलकते वह सतीस्य का सस्य।

> र्गधनजाने धति बीहद्द यथ पर धारों से धारे सती ससी कोटों मे बीम्बे चरण यूगल घोरिएत की भारा सी निकसी उस भाग भाग करती भंगी-में मानव का तो माम नहीं भीवरासा बढती जाती है कायर मन को विकास नहीं। करती है कभी भारम-चिन्तम भग्तर भावेग हटाने की रटवी जाती है 'सामूनकार महामन्त्र शास्त्रि सहापाने को प्रस्कृतत सुभूर सर्ज्ञम विना है कोई भी सब वारगमहीं बिग बाता ग्रेसी स्थितियों में निसकी भवा सप्रास नहीं।

> > उस देश विलयते भागम को सारी वमस्यसी रोती है

[ी] शहनासी

उन विकल वन्य जीवो के भी
मानस में पीडा होती है,
करने वे मूक सहानुभूति
सव घेर सती को लेते हैं,
कर रहे प्रदर्शित सहज स्नेह
सक्लेश न किंचित् देते हैं।
तरु-वल्लिरयो से घिरे सघन—
कुजो में रात विताती है,
ग्रमुक्तल फूल, फल तोड-तोड
जो मिलते उनको खाती है,
जव मन ग्रति उद्देलित होता
वरवस रोती-चिल्लाती है,
होते हो स्मरगा गर्म का फिर
रोती-रोती हक जाती है।

दोहा

होता है अति दुख के पीछे सुख-सचार। अत्युष्मा मे दीखते वर्षा के श्रासार।

इर दिखाई पडे सती को कुछ सशस्त्र मानव ग्राते, जिघर स्वय है, उधर वे सभी ग्रविरल गति बढते जाते। होगा यहा दस्यु-दल कोई, जो ग्राता है मेरी ग्रोर, ग्राने से पहिले ही रख दू सम्मुख गहने सभी बटोर।

दोहा

यो चिन्तन कर भ्राभरण तत्क्षण दिये उतार, उच्च स्वर रटने लगी महामन्त्र नवकार।

.

 मस्त्रित्त सिद्धे साष्ट्र वस्म शर्रणं सुपवज्यामि विध्य-कुरण मगसमय तेरा स्मरण सदा बन्तर्यामी। वन में बाई फिर भी बव तक नहीं भाषदा का धवसान क्या जान क्या होना बाकी अब भी मेरा है भगवान्!

गीतक छन्द

त्परित गति से इक्षर के सल्तद्ध सैतिक क्या गए इंगिलों से लगा ऐसा लक्ष्य को वे गा गए। दूर रहना कन पक्षा ते सो तुन्हें जो पाहिए कहा नायक ने वहिनजी ! घाप गत कमराक्रए।

बोहा

कौन भ्राप ? कैसे यहां ? क्या है पायन नाम ? परिस्थाप मों भ्रापका किस निष्कुर का काम ? हिसक बाक़ नीच जन बसते चारों भ्रोर । स्वापय-यकल श्रीत विकट 'सिहनाय' यन भीर । पर्मेवती लगती सती प्रसन-काल भ्रासन्न । विति ! कहा दितवुस सब मत रक्ता प्रकासन !

सोरठा

गही कोनतो भीग सती धानत सब मुन रही? पता गही य कीन ? दुःक कहू कैसे इन्हें? मुक-पुत्र उनके पास निर्भय कहते मुझ-अन। जिमके प्रति विदेशास होता भ्रात्मा में घटत। * वोला मधुर स्वर मन्त्रीय्वर मा । पूर्णतया निश्चिन्त रहो, ये पुडरीक पुर के स्वामी इनके ग्रागे सव स्पष्ट कहो, है दयावान् धार्मिक शासक न्यायी, सुविवेकी, महाभाग, पर-प्रिया-बन्धु ग्रपने उज्ज्वल कुल पर न लगाया कभी दाग।

श्राए करने मृगया वन में सुन पढ़ा श्रापका श्राक्रन्दन, तत्क्षरा करुगार्द्र नरेश्वर के—
मानस में हुश्रा सहज स्पन्दन, ऐसे सकट में देख कहों किसका होता दिल द्रवित नहीं, श्रावश्यक सारे काम छोड़ नरवर को श्राना पढ़ा यहीं।

दोहा

हुम्रा परम सन्तोष मुन ये वाते विश्वस्त । वैदेही कहने लगी स्वस्य-मना म्राश्वस्त ।

* दोनो ग्रिखिया सजल ,
 टूटा घीरज का वल ,
 गद्गद् वाग्गी ,
 क्क-क्क कर कहती है करगा कहानी।

[†] सहनागी

^{*} लय-गम दिए मुस्तकिल

```
७८ व्यन्ति-परीक्षा
```

मैं हूं मिथिसा की राजदुकारो , अनक विदेहा की पुत्री प्यारी सातों सुच में पत्नी कोमस कृसुम कली वाह! पुष्पवानी

रक-रक कर कहती है करुए कहायो। राजायसरय के पर में ब्याही विभुता प्रभुता मिली मन चाही, वासदेव प्रकर

सब्मए मेरेदेवर हुरापव रामी रुक-रुक कर वस्ती हैक्टल कहानी।

† समझा दुःसः का आवार है सारेचित्राकारहैं

पत्पर को पिथमाने वास सीता के उद्गार हैं। सम्बर से मैं गिरी हाथ! सब महीं फैनती घरती

सम्बर से मैं गिरी हाथ ! सब महीं फैनती घरती टुकड़े-टुकड़े हृदय हो रहा रो रो घाहें भरती हूटा मन का तार है छटे सब घाषार हैं

भूट पर सागर ए परुपर को पिपसान वामे सीता के उद्गारहैं। कोक-क्यन परवर कर्लकिता घरसे मुफेनिकासी

सीना के अमती है होनी घर घर घाज दिवासी निया यह समस्पार है सही डोड पनवार है

परमा का विधनाने बाले सीता के उद्गार है।

¹ सब-विका बेक्सर है

भूल रही हू मैं इसमे, श्रौरो को दोषी ठहरातो, 'श्रत्त कडे दुवसे न परकडे' श्रागम वाणी वतलातो, सब कर्मों की मार है, रोष-दोष बेकार हैं, पत्थर को पिघलाने वाले सीता के उद्गार हैं। मान रही हू श्रपमानित, इस जीवन से श्रच्छा मरना, पर इन उदरस्थों का भी होगा समुचित रक्षण करना, सबसे बडा विचार है, पूरा मन पर भार है, पत्थर को पिघलाने वाले सीता के उद्गार हैं।

* जो हुआ सो हुआ तुम जाओ , दुखिया के पीछे मत दुख पाओ , कोई चारा नही , अन्तिम घडिया यही है बितानी , रुक-रुक कर कहती है करुए कहानी । इससे आगे कुछ कहने न पाती , रोती जाती औरो को रुलाती , करुएा रस से सना , वातावरएा बना पानी-पानी , रुक-रुक कर कहती है करुए कहानी ।

दोहा

सन्त रहे सुनकर सभी कुछ क्षण तक निस्तब्ध। बोला महिपति चरण छू, बद्धाञ्जलि मृदु शब्द।

लय—गम दिए मुश्तिकल

```
७८ द्यनि-यरीका
```

मैं हू मिथिमा की राजदुसारो जनक विदेहा की पुत्री प्यारी साठों सुख में पत्ती कोमल कृसून कली वाह! पुष्पवानी

पारुः पुष्पवानः स्कः-रक कर कहती है करुण कहानो ।

राजा दशरय के घर में ब्याही विमुता प्रमुता मिसी मन चाही वासुदेव प्रवर सक्मए मेरे देवर

हू रामव रानी स्क-स्क कर करती है कस्ए। कहानी।

† उमझा दुक्त का ज्यार है सारेचित्राकारहैँ पत्परको पियमाने वाले सीताके उदगारहैं।

मन्यर स मैं शिरी हाय! यस नहीं फैनती घरती दुकड़े-दुकड़े हुन्य हो रहा रो रो माहें भरती टूना मन का तार है

हुने सब मामार हैं परंपर को पिपलान बान सीना के उद्गार हैं।

पर्या का प्रभाग का सामा के प्रभाग है सोक क्यन पर कर क्यकिया घर से मुझ्ने निकासी सोना के जसनी है होगी घर घर साज स्वासी सेवा यह सम्बद्धार है

नया यह मन्यारह नहीं सोद प्रशास

पत्यर का रियमान बाने शांता के उद्गार है।

[।] सद-विशा देगगर है

भूल रही हू मैं इसमे, श्रीरो को दोपी ठहरातो, 'श्रत कडे दुवने न परकडे' श्रागम वाणी वतलातों, सव कर्मों की मार है, रोप-दोप वेकार है, पत्थर को पिघलाने वाले सीता के उद्गार है। मान रही हू श्रपमानित, इस जीवन से श्रच्छा मरना, पर इन उदरस्थों का भी होगा समुचित रक्षण करना, सबसे वडा विचार है, पूरा मन पर भार है, पत्थर को पिघलाने वाले सीता के उद्गार हैं।

* जो हुआ सो हुआ तुम जाओ , दुखिया के पीछे मत दु.ख पाओ , कोई चारा नही , अन्तिम घडिया यही है वितानी , रक-रक कर कहती है करुए कहानी । इससे आगे कुछ कहने न पाती , रोती जाती औरो को रुलाती , करुए। रस से सना , वातावरए। बना पानी-पानी , रक-रक कर कहती है करुए। कहानी ।

दोहा

सन्त रहे सुनकर सभी कुछ क्षरण तक निस्तब्ध । बोला महिपति चरण छू, बद्धाञ्जलि मृदु शब्द ।

^{*} लय-गम दिए मुश्तिकल

* बाईजी! प्रपने घर धामो देकर सेवा का सुम भवसर, मेरामन उपवन सरसामो। भाईजी! सपने घर गामो।

भारतमां भाग भेती विदुषी साम्बी पर यह दूपित सांहन , राधव की निष्कुरता विभोक हम सबके काम्म रहे हैं मन , भमहोनी ऐसी सांहम मी हस हो जाती थग में कभी-कभी हस हो नहार के भागे हो मुक्ते मानक सुर-समुरसभी।

> यह संकट महीं कसौटी हैं भीरज से मन को समस्त्रमा। कार्रजी ! स्पने पर सामी।

पा महासती के धुम दर्शन इससे कहन र क्या हो सकता भेरे जीवन का उल्लुग्ध्या भो कांगे देर मत करो करो— उस मणुकुटिया को भी पावन कह पर है कहिंग! तुम्हारा हो मन में न भीर करना विस्तान

मैं भन्य हुआ इस कानन में

भामण्डस तुष्य पुत्रे समभी पीहर *धाते मत सर्वासी (* बाईजी ! सपने घर सामी । चेहरे की चमक बताती है गलती न तुम्हारो रत्ती भर , लगता है वडा कुचक चला दुष्टो का दाव लगा जी भर , तुम पूर्णतया निश्चिन्त रहो ये लोक हमें तो हसने दो। हलवा खाते भी दान्त घिसे— तो बडी खुशी से घिसने दो,

> भाई की भाप भावनाए वात्सल्य सुवा रस वरसाम्रो। वाई जी। ग्रपने घर ग्राम्रो।

वाई। मै निश्चित कहता हू

ग्रव जीजाजी पछताएगे,

वे उन्मन तुम्हे ढूंढने को

शोध्रातिशीध्र ही श्राएगे,

पर तुम्हे नही जब पाएगे,

ग्रकुलाएगे, घवराएगे,

धीरज देते लक्ष्मण जी श्राम्—

पौंछ-पौछ थक जाएगे।

सञ्जित शिविका तैयार पड़ी

लो बैठो, श्रिष्ठक न तरसाश्रो।

वाई जी। श्रपने घर श्राग्रो।

सोरठा

सीता को सानन्द, वज्ज्ञजघ लाया स्वगृह। ग्रति घनिष्ट सम्बन्ध, जुडा एक परिवार-सा। वाईजी! प्रपने घर मामो
 देकर सेवा का ध्रुम मवसर,
 मेरा मन उपवन सरसामो।
 वाईजी! मपने घर मामो।

सारक्यं पाप जेसी विदुपी साम्बी पर यह दूपित मोदन , राघव की निष्ठुरता विमोक हम सबके काम्य रहे हैं मन पनहोंनी ऐसी बातों भी हा जाती जग में कमी-कभी इस होनहार के धाने तो मुक्ते मानव सुर प्रसुरसभी।

> यह संकट नहीं कसौटी है घीरज से मन को समकायां। बाईजी। प्राप्ते कर प्राप्ते।

मैं साय हुमा इस कानन में पा महास्त्री के सुम वर्धम इससे बड़कर क्या हो सकता भेरे जीवन का उत्कर्षण को बसो बेर मत करो करो— उस सबुकृटिया को भी पावम कह कर है बहिन । तुम्हारा ही मन में न स्त्री करना जिल्हान

> मामण्डल तुस्य ट्रफेसमको पीहर पाठे मत सन्नामी। नाईमी! घपने पर धामो।

चेहरे की चमक वताती है गलती न तुम्हारो रत्ती भर, लगता है वहा कुचक चला दुण्टो का दाव लगा जी भर, तुम पूर्णतया निश्चिन्त रही ये लोक हसे तो हसने दो। हलवा खाते भी दान्त घिसे— तो वडी खुशी से घिसने दो,

> भाई की भाप भावनाए वात्सल्य सुधा रस वरसाग्रो। वाई जी। श्रपने घर श्राग्रो।

बाई । मैं निश्चित कहता हू अव जीजाजी पछताएगे, वे उन्मन तुम्हे ढूढने को शीघ्रातिशीघ्र ही श्राएगे, पर तुम्हे नही जब पाएगे, अकुलाएगे, घवराएगे, घीरज देते लक्ष्मण जी श्रासू— पौछ-पौछ थक जाएगे। सज्जित शिविका तैयार पडी लो बैठी, श्रिषक न तरसाश्रो। वाई जो । अपने घर शाओ।

सोरठा

सीता को सानन्द, वष्त्रजघ लाया स्वगृह। श्रति घनिष्ट सम्बन्ध, जुडा एक परिवार-सा।

दोहा

मानो दुव में सुब्ब मिला तम में नया प्रकार । ज्ञान ध्यान स्वाध्याय रत करती धर्मास्यास ।

गीतक छम्ब

वहाँ भाषायमन सहिनों का सतत रहने सया स्रोत भृत-साराधना का भनकरत वहने सया। एक खोटी ज्ञानशासा-सी सहज ही बन गर्फ प्रेरणाएं मेंथिलों देती सर्वेज नई-मई।

सुगम प्रकार कोष हे नह तत्त्व भी विकास रही।
पूर्य नारी-मेतना को पुम जायुत कर रही।
सुर्य नारी-मेतना को पुम जायुत कर रही।
सादगी अम सगठन की भावनाए भर रही।
कभी मजनों का सरस रस टमकता संगीय में
विकारती सब कभी सोरयुक स्वानुभूत प्रतित में।
कभी सह स्वाध्याय तो होती कभी अन्यावारी
नभी वकती संपुक्ष क्या विविष्य विकास से गरी।

कभी होता था विशेषन वया-वान विषाद का कभी विश्लेषण विश्वव धाषाद का स्थवहाद का। कभी रहता विषय भाषण में समाज सुषाद का कभी विश्वत हुमा करता मगुब्द परिवाद का। भूमते को दुझ के दिन यही साधन सेक्ट हैं। वरोम्नति के साथ मिला शास-वास्ति यथेस्ट हैं। कीन हैं ? कैसे ? कहां वर्षों ? जानता को ई नहीं वहिमणी ! के नाम से प्रकात पर में हा रही।

सोरठा

प्रतिपल हर्ष विभोर, सुखपूर्वक सीता यहा। अवधपुरी की ग्रोर, ग्रव थोडा-सा भाक ले।

दोहा

भृक्टी चढी ग्रवधेश की जलते ज्यो ग्रगार।
प्राची के रिव सा,वना ग्राखो का ग्राकार।
विविध चिन्तनो मे विकल, है ना कोई पास।
सभो सभासद दूर ही वैठे मौन उदास।
ग्राकृतान्तमुख ने निकट विधियुत किया प्रणाम।
'रे सेनानी। ग्रा गया?' पूछ रहे श्रीराम।
'हा ग्राया कर काम सब प्रभु ग्राज्ञा ग्रनुसार।
छोडी ले जा जानकी सिंहनाद कातार।'

* वह घोर भयावह जगल है जहा छोडी मैंने महासती, यह पराधीनता का फल है। वह घोर भयावह जगल है। उसमे श्रागे रथ चला नहीं घोडो की टापे रकी वहीं, काटो, उपलों में चल न सके थे भूखे-प्यासे श्रौर थकें, हो गए हाथ लोहू-लुहान हाके द्रुत मारुत के समान,

बोहा

मानो दुस में सुख मिला तम में नया प्रकाख। ज्ञान ध्यान स्वाध्याय रत करती धर्मास्यास।

गीतक छन्व

वहां भाषायमन बहिनों का ससत रहने लया स्नात श्रुत-साराधना का धनवरत बहने लगा। एक छोटी कानधामा-ची सहब ही वन गर्ध प्रेरणाए मैथियों देती सर्वंव नर्ध-गर्ध।

भुगम भ्रमर कोम दे नव तस्व मी सिक्समा रही ।
भर्म का स्थवहार में सत्यम् उन्हें दिख्यमा रही ।
भुग्य गारी भेतना को पुन आगृत कर रही ।
सवगी स्थम सगठन की भावनाए भर रही।
कभी भवनों का सरस रस टपकता सगीत में
विभारती सब कभी सोरसुक स्वानुभूठ प्रतीत में।
कभी सह स्वास्थाय हो होती कभी सन्याहारी
कभी चलती क्षणु कथाए विविध शिशा से भरी।

कमी होता था विवेचन दया-दान विचार का कमी विश्लेषण विश्वद धाचार का स्थवहार चा। कमी रहता विषय भाषण में समाज सुधार का कभी चित्तन हुमा करता मणुदत परिवार चा। भूकने को दुःस के दिन यहो शायन सेष्ट है,

भूकने को दुक्त के दिन यहाँ शायन अध्य है, पराक्तिके साथ मिसती भारम-सान्ति यसंप्य है। कौन है ? कैसे ? कहां वर्षों ? जानता को ई महीं वहिनजी ! के नाम से प्रक्यात पूर में हा रहीं। श्राखो में रोष लगा वहने वागी में जोश लगा वहने, श्रात्मा में होश लगा वहने मन में श्राक्तोश लगा वहने,

वह नगरी कितनी दूर श्ररे । कहा बेठे राघव कूर श्ररे । मेरे से किया वडा छल है वह घोर भयावह जगल है।

जाकर उनसे लोहा लूगी सब प्रश्नो के उत्तर दूगी, पुछ्गी क्यो ऐसे छोडा? क्यो मेरे से नाता तोडा? वे पुरुष-पात्र कहलाते हैं अबला को यो ठुकराते है,

> क्या पैरो की जूती नारी जो सहे यातनाए सारी, क्या सीता इतनी निर्वेल है वह घोर भयावह जगल है।

दोहा

मैंने घीरज से कहा जाना है निस्सार।
अब इतना ही मानिए राघव से सस्कार।
भैया अच्छी बात है, लेजा यह सन्देश।
मैं चाहे जैसे रहू, सुखी रहे प्राग्णेश।
सुनते ही अवधेश का उतर गया आवेश।
आगे उसने क्या कहा? बतला जरा विशेष।

धमिन-मरीहा अवह-सावह टेबी घरती दिन में भी सांग-सांग करती . **करती निर्कारियी क्स-कल है** वह भोर भयावह जंगल है। धापभाकाकोई पतामहीं इति समानाकोई पतानहीं ज्योंही का स्यन्दन को रोका तत्तारा माताची ने टोका. मैंने जब सच्ची बात कही मुन्धित हो रय से गिरी वहीं **बाक्सिक मृत मैंने आ**ना द्प्कर है वह स्यिति बतसाना ट्टासद भीरव का यस है बह बोर भयाबह श्रंगस है। तय किन्तव्य विमुद्र हमा सताप युद्ध सं युद्ध हमा

बहु कोर प्रधावह लंगन है।

तम किवतस्य विमुद्ध हुमा
सताप पूढ़ स पूढ़ हुमा
वैतस्य पवन प्रेरित पाम
तो मेरे जो में जो मामा
पिहाम-सी के विशिष्ठ करी
मांगों मे मा साई रवती
कहा काहती कह भाषाठी
परामी साम सिक्द मुस्तिती,
प्रामी साम से कर मुस्तिती,

बहु धार भयावह जंगत है। उपान्यामन को मञ्जून बना केरिक कर निया द स्रायका

= 1

वागा में जोश लगा वहने, म्रात्मा मे होश लगा वहने मन मे श्राक्रीश लगा वहने वह नगरी किन्नी हुर हुने कहा बैठे राष्ट्र हुए 🚉 मेरे में किए इस इसई वह धीर मण्डम होना है जाकर उनमे रोहा 🛫

सब प्रथमों के उत्तर 💤 पुळ्गी सा मंद्रे होता वयो मेरे हे हता है हैं वे पुरपनार हरू है श्रवला हो है हिन्हें かながずず ý 17 🤝 🚗 から対象を言 St. The root شيت

Marine and a comme Marks & Same in the second

ती रही। वा कहा? भूगा कहा ? अस्ति कहा ? 3 Ava. 3- - - - - - - - - - - - - - - - - -

e E

सीताओं ने कहलाया है
 माताओं ने कहलाया है
 पय-निम्नी का घप्रतिम प्रेम
 प्रमुक्त ने सूत्र निमाया है।
 एक कहती हू भात । तुमे
 राम कहती हु भात । तुमे कहती हु

सक कहता हू भात । पुक होता घोड़ा भी जात सुके मों प्रियतम प्रेम पराक मुक्त है क्यों समता मह मामात मुक्ते होती म गर्मे की यो किन्ता करसेती निरिष्त भारसमात पाती न बिगड़ने कभी बात यह मही देखती काम रात।

पर विधि की उक्टी मामा है कोई न समक्ते पासा है। माताची में कहनाया है।

क्यों किया गाय ! विश्वास्थात यो कहुनी कहुते स्पष्ट बात सीता ग कमीमी वी दुतनी क्यों रक्ता ईस म परापात यव तक बितम मी किये बाम यम सक्षे उठण्डम हुमा नाम योवन की है पहुणी घटना सन्धान को दिया हाय राम !

किसने यह चक्र चनायाहै। क्यों ऐसा कत्म उठायाहै। माठावी ने कहनायाहै। कैसे प्रतिक्तल प्रवाह वहा कुछ भी जा सकता नही कहा, नस-नस में उनकी जान रही ग्रित भावुक-भद्र स्वभाव रहा, जो हुग्रा दोप सव मेरा है निर्दोष निरन्तर रहे राम, कृत कर्मी का ही कुपरिगाम जिससे उनकी मित हई बाम।

> भूठा कलक यह स्राया है । रिव के रहते तम छाया है। माताजी ने कहलाया है।

ममता की गाठे शिथिल हुईं
भावों को गगरी फूट गई,
निर्यामक का मुह फिरते ही
पतवार हाथ से छूट गई,
सीता की सरिता सूख गई
सपनों की रजनी रूठ गई,
ग्रब क्या जीने में जीना है
जब श्राकाक्षाए टूट गई।

सब गतरस किया कराया है न्यारी काया से छाया है। माताजी ने कहलाया है।

सोरठा

यो करती अनुताप, तत्क्षरण मूच्छित हो गई। सज्जा पा चुपचाप, आहे भर रोने लगी। ले प्रभुवर का नाम, उपालम्भ देती रही। पूछ रहे श्रीराम, ग्रागे उसने क्या कहा?

EF

की तम से संबी क्यों ? यदि मा---रौरव से मभी गिराना था क्यों वे सुझ के दिन दिसामाए-यदि यह दृदिन दिस्तामा था ब्रामो से मार गिराना मा

धारित-परीका

विस्कर विषमके पिशाना बा लका में ही मैं मर जाती भाकरके नहीं जिल्लानाया।

क्यों गृत्वी को उसकाया है

भीवन को मटिल बनाया है। माताची में कहताया है। गीतक छन्द

फिर गिरी हो मिल्सका चैतस्य पारीने सगी। भासमां से बार्ड मानो मेदिनी होने सगी। बन्य पद्म भी बागए बति जिल्ल होकर स्तान से सून छहे बार्ते सभी प्रबंधेश पूरे प्यान से।

! रामजी हो ! रामजी ! भी रामजी ! जीवन की शाव बढ़ामा हो ! मेरा धन्तिम नम्र निवेदन इसे मूल मत जानाही।

सर किया सो किया प्रापने एक काम मत करना। बड़े विषम इस भामक यूग में फूंक-फूंक पग भरता।

ऐसे मामव जन्म गए जो पर-सुक्त दुर्वस होठे। स्वय दूबते भीरों की नैया ममन्पार दूबाती। वस में नक्ष्या कासी धपती धपतित को प्रीति।

सम्बज्ज उगा दिया सम्बर में कैसी हास ! भनीति। * सहनाली

मय-संबंदी स्वेदश

सत्य-धर्म को नही छोडना सुनकर उनकी वातें। नास्तिक मिथ्यात्वी-जन पग-पग रहते जाल विछाते। सूर्यवश के सूर्य निभाना अपने कुल की रीति। चिरजीव चिरकाल रहो प्रभु, फलो सदा सन्नीति।

दोहा

पूरी भी होने नही पाई उसकी वात । वज्राहतवत् गिर पडे, मूच्छित हो रघुनाथ ।

सोरठा

कर शीतल उपचार, किया सजग सबने उन्हे। उमडा दुख का ज्वार, लम्बी श्राहे भर रहे।

* ग्राखो मे ग्रासू श्राते हैं, रह-रह पछताते हैं। उठ-उठ कर दौडे जाते हैं, रह-रह पछताते हैं। सुध-बुध भूले ग्रर्ध ग्रथिल से करते सीता। सीता।

भरी । प्रेयसी बिना तुम्हारे मैं न रहूगा जीता, मन ही मन करते बाते हैं।

ध्यान नही लगता था उसका कभी व्यर्थ वातो मे , नही निकम्मी रहती, रखती काम सदा हाथो मे ,

यो दिल को खोल दिखाते हैं।

श्राकृति में श्राकर्षण नव, श्रमृत वर्षण वाणी मे , कोमलता थी सहज सौम्यता मेरी महारानी मे ,

कहते-कहते रुक जाते हैं।

नहीं एक भी श्रवगुरा था जो किव कहते नारी के, उसके बिना श्राज जीवन के रग राग सब फीके,

किंचित् मन को ना भाते हैं।

[†] लय-मत बनो शराबी रे

द्यमि-परीक्षा

.

फीनम से ऊंधी क्यों ? यदि यों—
रीरव स मुक्त गिराना वा
क्यों वे सुझ के दिन विक्रमाए—
यदि यह दुर्दिन विक्रमाए वा
हायों वे मार गिराना वा
हाया वे सार गिराना वा

विमुक्तर विषमुफे पिनाना या सका में ही मैं मर जाती माकरके नहीं जिलाना या।

क्यों मुल्यीको जसमन्त्रयाहै। जीवन को अटिस बनायाहै।

माताजी में कहनाया है। गीतक ध्रम्ब

नातक स्थल

फिर गिरी हो मृच्छिता चैतन्य पारीने सगी स्रोतुर्मों से सार्गमानो मेदिनी होने सगी। बन्यपसुमी सागए सति किल होकर स्तान से सुन रहे बातें सभी सबसेस पूरे स्थान से।

र रामकी हो। रामकी! भी रामकी! भीवन की धाव बढ़ाना हो। मेरा प्रश्तिम नम्म निवेदन इसे भूम महा जाना हो। और किया भी किया धापने एक काम मह करना।

बड़े विषम इस फ्रामक युग में छूंक-फूक गण घरना। एसे मानव जन्म गए जो पर-मुख दुवैस होते। स्थमं दूवते सौरों की नैया मन्स्वार दुवाते।

स्थ्यं दूवतं धौरों की मेसा सम्हबार हुकाउँ। पम में तुद्रवा डासी धपनी धप्रहित को प्रीति। सम्बद्ध उगा दिया घन्तर में गैसी हास! धनीति।

^{*} सह्ताणी † अस—राजना समस्ता

उस समय दिया कुछ ध्यान नही , उस समय किया कुछ ज्ञान नही , उस समय नही थे श्राप श्राप हो सका श्रत श्रनुमान नही।

हाथो से काम बिगाडा है, हाथो से धाम उजाडा है, सुखकारक सुमधुर फलदायक हाथो से ग्राम उखाडा है।

कोई न दीखता है उपाय ग्रच्छा है मन को समभाना, जब समय हाथ से निकल गया क्या ग्रर्थ रखेगा पछताना।

दोहा

जो होना था सो हुग्रा, भाई । करो विचार। कैसे ग्रपनी भूल का होगा ग्रब प्रतिकार।

ां यह मेरे बस की वात नहीं,
यह ग्रोरों के भी हाथ नहीं,
ग्रव पुन श्रयोध्या वे ग्राए
होता ऐसा भी ज्ञात नहीं।
यदि चलकर ग्राप स्वय जाए,
सारी स्थिति उनको समभाए,
तो कुछ सम्भव लगता स्वामिन्।
ग्राने को राजी हो जाए।

ग्रम्ति-परीक्षा

कितनी उसमें वार वृत्ति थी कितना सादापन था भाषहरूने मङ्गतिम सारिवक क्रान्तिपूर्ण विन्तन था गुए-गौरव गाथा साते हैं।

वाक्य विवेग घम्म माहियं जीवन में उतरा धा एक शीम कथम पर उसका सुभ स्वतत्व निखरा धा भव हुद भास्या बतसाते हैं।

नौन उस जो कहे नर्सकिता प्राए सेरे धारे बन-बन करने बास सारे घरे! नहां पर भागे मों कह समझार उठाये हैं।

हाय ! राम क्या जिक्स गया था शम समुचा तैरा जब जनना की बातों में भ्राकर बासा भ्रत्येरा भ्रावस-स्वाक्स दुस पाते हैं।

संज्ञा मून्य कमी होते हैं अभी पीछते मार्जे तबप-महपना जैसे पंछी कट जाने पर पाँगें हम सीमित्री समझते हैं।

> भव रान योन स क्या है? कहनान किमीका तब माना अकममयहाय न निकल गया क्या भय कमम्य पद्धताना ।

> हमन बिनना समभाया था हमने बिनना मोनाया था, भाषो ना रैपावित गींन— गविनर्थ गन्धे बनाया था।

उस समय दिया कुछ ध्यान नही , उस समय किया कुछ ज्ञान नही , उस समय नही थे श्राप श्राप हो सका श्रत श्रनुमान नही।

हाथों से काम विगाडा है, हाथों से धाम उजाडा है, सुखकारक सुमधुर फलदायक हाथों से ग्राम उखाडा है। कोई न दीखता है उपाय ग्रच्छा है मन को समकाना, जब समय हाथ से निकल गया

दोहा

ँजो होना था सो हुग्रा, भाई । करो विचार । कैसे ग्रपनी भूल का होगा ग्रब प्रतिकार ।

ं यह मेरे बस की वात नहीं,
यह श्रोरों के भी हाथ नहीं,
श्रव पुन श्रयोध्या वे श्राए
होता ऐसा भी ज्ञात नहीं।
यदि चलकर श्राप स्वय जाए,
सारी स्थिति उनको समकाए,
तो कुछ सम्भव लगता स्वामिन्।
श्राने को राजी हो जाए।

है भभी सुधवसर जाने का ज्यों-र्यों कर उन्हें मनाने का भपनस्य दिखा भपनाने का समझा भर-धार समाने का।

> भव भी यदि सोगों का भय हो तो मूस पूक कर मत जाना, जब समय हाय से निकल गया क्या सम्बंदिता पक्षताता।

बोहा

तो क्या मैं जालं वहां ? हां ! जामी महाराज ! कठी राती को सता काले में क्या काल ?

गीतक छन्द

बैठ पूथक यान में से चमूपति को छात्र में सिहनाद घरण्य पहुंचे बात की ही बात में। यहां साकर रथ रका या यहां मूज्यित हो गिरी यहां क्षिपरता से कहा सन्देश घपना प्राक्तियी।

परएए बिन्ह कुछ दूर बसे पर घाये वे भी मिसे नहीं नष्टक-बिद्ध शिक्ष घोरिएत-करए पढे हुए ये कहीं-वहीं। बोमें राम यहां सीता बैठी हो ऐना है सबना ज्यों घासार दीकते स्थॉ-स्थों प्रथिक बिरह बाता बगता। मह्मक रही थी स्पष्ट उदासी कानन के भी धानन में .

भन्तः रहावास्पष्ट बदासावानम् कमाधानन्यः, भीता! सीता! सीना! वस्ते राम भूमते वतःवनं में । जैसानाम घरे! वैसाही तृष्ट्यास्तमुग्र बनासहां सूही फोड़गयाथा वतनाभेरीसीतागई वहां? वह बोला क्यो और चढाते, हाय । राम । मेरे शिरपाप , छाती पर पत्थर रख मैंने सहा दासता का श्रभिशाप । सब कुछ देना देव । न देना पराधीनता जीवन मे , सोता । सीता । सीता । करने राम घूमते वन-वन मे ।

† वाढ स्वर रघुवर श्रावाजे देरहे, ' कहा गई रे[!] कहा गई वह जानकी।

हाय । किया मैने कैसा अन्याय है आगे-पीछे कुछ भी सोच सका नही, अब सारे ही असफल हुए उपाय हैं नही दीखती निकट-दूर सीता कही, यो कह रो-रो दीर्घ सिसकिया ले रहे सजा पा चुका मैं तेरे अपमान की।

शास्त्र,पिटक,श्रुति,स्मृति,साहित्य,पुरारामे प्राय बतलाई नारी की दीनता, पुरुष-पात्र कहला कर इस ग्रिभयान में कैसी यह दिखलाई मैंने हीनता, यो गडरी प्रवाह में जाते जो बहे क्या ग्राशा उन पुरुषो से उत्थान की।

* सिह-निनाद महारण्य का चप्पा-चप्पा छान लिया, मिली कही भी नही मैथिली तब यह निश्चित मान लिया। वह अब नही विश्व में जीवित श्वापद चाट गया होगा, निगल गया होगा अजगर या विपधर काट गया होगा।

[†] लय-प्रभुवर श्रावी वेला क्यारे श्रावशे

^{*} रामायरा

-£X

गीसक छन्द

मुद्द प्रपनासा मिए वे था गए साकेट में हृदय की सब कामनाएं मिन प्रकी भी रेत में। स्वजन-परिजन बन्यु-बान्यव वे रहे सब सान्स्वना किन्तु रहने भगे राधव सब तराह से उत्मना। मगते फीके सरस स्वाद् पकवान भी कूसूम स्कोमल शस्या तीचे तीर-सी। नहीं सुहाते सुझकर मृदु परिभान भी मलयानिस भी दुवाद प्रसय समीर-सी। श्रासन कार्यों में मन बहमाते यहे स्मर विभिन्नता विभि कं घटन विधान की। उत्तेजित हो उठते मति उद्देग में उम सब कोगों से जाए धदसा सिया मुर्खी ने भा निष्कारस भावेग में हा! मेरे ही पर पर यों हममा किया स्वयं-स्वय को फिर यों समभाते रहे

बुहरो मूल न हो भातक सम्मान की। बोह्य

माना जाना भी रका चन्तपुर की मोर। सीता विरहाभात ने दिया हृदय महत्रमोर।

गीतक छ इ

भव गभी वे रानियां कर रही परभाताप हैं भाव रहें रह का रहा उनको उन्हीं का पाप है।

त्तय-प्रयुवर धावी वेता त्यां रे घावधे

ः ५ : प्रतिशोध



गीतक छन्द

शरद ऋतु की सुखद शीतल पवन लहरी चल रही, विगत घन, ग्रति शुभ्र ग्रम्वर पक विरहित थी मही। ग्रा रहा विस्तार वर्षा का सहज सक्षेप मे, ज्यो समाहित तत्त्व सारे चतुर्राविध निक्षेप मे। नाति शीत, न चाति ऊप्मा, सम ग्रवस्थित भाव मे, सर्वदा ज्यो लीन रहते सन्त सहज स्वभाव मे। निशा-वासर है वरावर तुल्यता कफ-वात मे, वेदनी ग्रायुर्यंथा सम समुद्घात-विघात मे । पूर्णत ग्रनुक्कल ऋतु यह स्वास्थ्य-शोघन के लिए, ज्यो ग्रगुवत ग्राज जन-मानस-प्रवोवन के लिए। स्वच्छ सलिल सरोवरो का मुकुर सहश सुहावना, वर्म-श्वल-ध्यान मे जैसे समुज्ज्वल भावना। जैन-मुनि भी कर रहे अव प्रतीक्षा प्रस्थान की, योग-रोधक प्राप्त-शैलेशी यथा निर्वाण की। स्वलप-सी भी वृष्टि होती, सिद्ध श्रत्युपयोगिनी, सजग मुनि की क्रिया, सवर-निर्जरा सयोगिनी। हो रही कुशकाय निदया, क्षीएा निर्भर पीनता, क्षपक श्रेण्यारुढ मुनि की ज्यो कपाय-प्रहीगाता। वर्ष भर का कृषिव-श्रम ग्रव हो रहा साकार है, खीचता तन-कार भनकान मे यथा भनगार है।



गीतक छन्द

शरद ऋतु की सुखद शीतल पवन लहरी चल रही, विगत घन, ग्रति शुभ्र ग्रम्बर पक विरहित थी मही। म्रा रहा विस्तार वर्षा का सहज सक्षेप में, ज्यो समाहित तत्त्व सारे चतुर्रविघ निक्षेप मे। नाति शीत, न चाति ऊष्मा, सम अवस्थित भाव मे , सर्वदा ज्यो लीन रहते सन्त सहज स्वभाव मे। निशा-वासर है वराबर तुल्यता कफ-बात मे, वेदनी श्रायुर्यथा सम समुद्धात-विघात मे। पूर्णत अनुकूल ऋतु यह स्वास्थ्य-शोधन के लिए, ज्यो श्रगुव्रत श्राज जन-मानस-प्रवोधन के लिए। स्वच्छ सलिल सरोवरो का मुकुर सदृश सुहावना, धर्म-शुक्ल-ध्यान मे जैसे समुज्ज्वल भावना। जैन-मुनि भी कर रहे ग्रब प्रतीक्षा प्रस्थान की, योग-रोधक प्राप्त-शैलेशी यथा निर्वागा की। स्वल्प-सी भी वृष्टि होती, सिद्ध श्रत्युपयोगिनी, सजग मुनि की क्रिया, सवर-निर्जरा सयोगिनी। हो रही कृशकाय निदया, क्षीएा निर्फर पीनता, क्षपक श्रेण्यारूढ मुनि की ज्यो कपाय-प्रहीराता। वर्ष भर का कृषिव-श्रम श्रव हो रहा साकार है, खीचता तन-सार अनशन मे यथा अनगार है।

१०० प्रति-परीका

बोहा

धारद शशधर तुल्य धव सिसी सती नी कान्ति । भाज मिस रही कान्ति में परम हृदय को धान्ति ।

गीतक छन्द

मुगम पुत्रों के प्रस्त से प्रमुदिसा सीता सती। पुण्डरीक-पुरी दमी वर्षों भविन की भ्रमरावती। स्वित से भी मिषक पूप ने समुद बल्पोरसक किए, उरमसित बाताबरण में माम सवणांकस दिए।

बोहा

र्ग्यों हिम ऋतु की सामिनी बढ़ते दोनों भात । समते सोकन युगल से माता को साक्षात । सोमित मां की गोद में कोनों पूल्य निवान ।

होते पर्यो पारित्र में सम्यग् दशन-ज्ञान।

धोमित मों की गोद में दोनों पुरूप-निभान। ज्यों नममें रिव-वन्द्रमा देते प्रमा महान।

धोमित मांधी गोद में दोनों पुष्य-निमान । ऊप्यं मोत्र म ज्योति मय ज्यों सूपम-ईदान । तुननी दोसी स्पन्नित गति देती परमानस्द । निज पूल मारमा में यथा पसते स्प्रतिक्य ।

माना जागृत कर रही नैर्मागक संस्कार। सबदीक्षित को ज्यों सुगुर निरम्माने घाषार। * माता सस्कार जगाती है, जननी सस्कार जगाती हैं, वन सहज शिक्षिका जीवन की ग्रयना कर्तव्य निभाती है, जननी सस्कार जगाती है।

जो स्वय सुसस्कृत होती है, जो परम परिष्कृत होती है, यज्ञान पटल के अचल से जो पूर्ण अनावृत होती है। क्षोगी-सी जिसमे है क्षमता, सागर-सो जिसमे है समता, नवनीत तुल्य अन्तर कोमल माता-सी जिसमे है ममता।

> भात्मीय श्रलौकिक प्रतिभा से इगित पर सब समभाती है। जननी सस्कार जगाती है।

बच्चे का कैसे पालन हो, कैसे जीवन सचालन हो, हो खाद्य-पेय कैसे नियमित, कैसे अन्तर प्रक्षालन हो, क्यो कम बेसी हसता-रोता, क्यो कम बेसी जगता-सोता, उसको गतिविधियो का पूरा अनुमान उसी को है होता।

> वह सरल मनोवैज्ञानिक वन सारी उलभन सुलभाती है। जननी संस्कार जगाती है।

ग्रमि-परीसा

होता है बानक सरस हुद्य भरता बाता प्रमिन्द प्रमिनय निर्मय है। मां के प्रांगे ही रक्तवा रहता मन के समय गृह-गार्थ मिरत मुन नेती हैं भीरम से उत्तर देती हैं मन रोप म करती शोच समक— गृह पकने बानी बेती हैं। गृहेक बात को छी-छी बार बतमाती महीं प्रमाती है। जनमी संस्कार खानती है।

रबता मनुवानन सं शासित स्वसना परकरती है शासित बारतस्य दिसाती बार-बार सद्युक्त सौरम से कर बासित कैतिक शास्मारिमक सिशाए देती वर विविध समीशाएं नवी रहती है समय-समम बच्छिसत तस्य परीशाएं। नय विवय विवेव,स्य-मिठ भाषक

पिन्दाबार सिमाती हैं जननो मंन्बार जमाती हैं संस्थारी माना-पिनु के बन्दन भी होते संस्थारी गद्द प्राचारी माता पितु के सम्बन्ध सन्त महाबारी। पिद्रा जैसा चढ़ा पूत्र भी प्रायः मातु-पितु चनुरूप

राम धौर मीता के पुत्र मुगम नक्लांक्स है तह पा

प्रात उठते ही करते हैं महामन्त्र का स्मरण सदा, नित्य नियम कर दोनो छूते पूज्य जनो के चरण सदा। नियत समय पर खेलकूद हैं, नियत समय पर विद्याभ्यास, नियत समय पर खाना-सोना, करते सर्वांगोण विकास।

सोरठा

सिद्धपुरुष सिद्धार्थ, गुर्गी विशिष्ट श्रगुव्रती ।
गुर्गा अनुरूप यथार्थ, नामकरगा निर्मल चरगा ।
वर निमित्त अष्टाग, शास्त्र-शस्त्र-विद्या-निपुरा ।
मज्जन सागोपाग, श्रागम-श्रम्बुधि मे किया ।
देव-सुगुरु-सद्धर्म, सुधामयी रत्नत्रयी ।
सुविहित श्रन्तर मर्म, मान रहा जीवन जडी ।

गीतक छन्द

ग्रनासक्त, विरक्त जीवन, बना वानप्रस्थ-सा, साधना मे रत निरन्तर, हो रहा ग्रात्मस्थ-सा। तपस्वी, भिक्षोपजीवी, ग्रकिंचन, ग्रपरिग्रही, सदन ग्राया, सती सादर ग्रसन उसको देरही।

* बाई तू है कौन ? विरिहिशी सी क्यो ऐसे रहती है ? श्राकृति तेरी बतलाती, तू श्रन्तर पीडा सहती हैं। लगता ऐसा तू है पुत्री ! रानी बडे घराने की, सार्घीमक भाई से बाई! क्या है बात छिपाने की, क्यो श्रविरल श्राखों से यो, श्रासू की घारा बहती है। श्राकृति तेरी बतलाती, तू श्रन्तर पीडा सहती है। सारी स्मृतिया जाग उठी, कोशला सामने दीख पडी, महा भयावह सिंहनाद के स्मरएा मात्र से चीस्त पडी,

लय—वाजरै री रोटी पोई

श्रीम-परीसा

₹•₹

होता है बालक सरस हृदय परता जाता प्रमिनन प्रमिनय निर्मय हो मां के मार्ग ही रक्ता रहता मन के संस्य गृह-कार्य निरत सुन सती है बीरज स उत्तर देवी है, भग रोधन करती मोध सम्म--

मन रायन करता साथसनकः— यह पकने वाली सेती है।

एकेक आत को सी-सो बार बतसाती नहीं प्रधाती है।

रकती अनुदासम से धासित , सम्मयना पर नरती है त्राप्तित बारसस्य दिखाती बार-बार सद्युण सोरभ सं कर बासित

मैतिक भाष्यारिमक शिक्षाए देती कर विकिथ समीक्षाण मती रहती है समय-समय

नन्यस्थितः तस्यः परीक्षाणः । नयः विनयः निवेन्द्रशस्य मित्रः भाषणः

नयं विनयं निवेक,गरंगं मिड भाषण् गिष्टाचार मिलाली हैं। जनमो संस्कार जगाती है।

जननी सस्कार जमानी है।

शंस्त्रारी माता-रितु के नावन भी होते संस्कारी सद् धाकारी माता सितु के सावन सदा सदाकारी। सिट्टी जैसा वहा पुत्र भी प्राय मातृ-तितु घतुक्य राम धौर सीता के पुत्र सुगस नक्साविया है तहुन।

दोहा

सुन प्रमुदित सीता हुई, सौप दिए सौल्लास। सिद्धपुरुप करवा रहा सत्वर विद्याभ्यास।

* शिक्षक सिद्धार्थ पढाता है,

ग्रध्यापक स्वय पढाता है,
सन्तोषी, सभ्य, मदाचारी
सारे शास्त्रो का ज्ञाता है।
ग्रध्यापक स्वय पढाता है।
वागी के पहले ही जिसका
व्यवहार स्वय जो बोल उठे,
पुस्तक के पहले ही जिसका
ग्राचार स्वय जो बोल उठे,
कार्यों के पहले ही जिसके
सस्कार स्वय जो बोल उठे,
जिसके सक्षेपी शब्दो मे
विस्तार स्वय जो बोल उठे,
उससे बढकर फिर कौन कहो।
बच्चो का भाग्य विधाता है।

जिसने श्रनुशासन में रहकर श्रनुशासन करना सीखा है, जिसने मित भाषणा में रहकर मित भाषणा करना सीखा है, जिसने पथ-दर्शन में रहकर पथ-दर्शन करना सीखा है,

श्रध्यापक स्वय पढाता है।

^{*} सहनाणी

धानि-परीका जान पूर्ण विश्वासी भ्रपनी करूए कहानी कहती हैं।

•¥

साकृति तेरी बतसाती तू सन्तर पीवा सहतो है। सगी बहिन से बढ़कर रसता प्रवक्तं पृप सुक्ते यहाँ सब कुछ है तो भी पर-धरहै कहो चिक्त में भैन कहां? स्था भतमाळ यह चिन्ता दन पिता निरन्तर दहती है। साकृति तेरी बतलाती तू सन्तर पीवा सहतो है।

क्या स्वत्माक यह (क्ला वन अदा । नर-तर दह्या है।

कहता में मन्दन माते।

माते ही सावर छिद्ध-पुरुष को स्विनय सीम मुकावे।
सिमा कान्य सा मोहक मुक्का मयुर-अभुर मुक्तावे।
समुत प्रमा विद्याल भाम पर भोषन हृदय सुभावे।
मनुपम माक्ष्यंण माकृषि का स्तम्म छिद्ध रह जाते।
ऐसे पुत्र रहन पा मां क्यों है कार्ट दुवा की राष्ट्र ।
सम भीर सहमयण का भी ये भाता ग्रुपस मुक्तावे।
क्या चञ्चम मिक्य है इनके कहरे ही कतसावे।
मुन-सुन मैं तो मुक्त हो गया इनकी मानिक वार्षे।
सहस कपमता में ही कितने हुने रहस्य विकासावे?

बोहा

सीता हू सीमागिनी ऐसे पुत्र समर्थ।
वर्षी करती मोती मरे। इतनी विश्वास्थलं।

† भाई! सब दुख ठीक किन्तु कोई म पदाने वाला है
जीवन के उन्नति पथ पर नोई म बहाने वाला है।
सताहू वायिरत स्थि में कर मत इनका तनिक विधार
मेरी विद्यामों ने सच्च पात्र सिम मन के मनुसार ।
नव—हन बहु भावर्ष रिवार्ष

दोहा

सुन प्रमुदित सीता हुई, सौप दिए सौल्लास। सिद्धपुरुष करवा रहा सत्वर विद्याभ्यास।

* शिक्षक सिद्धार्थं पढाता है, ग्रध्यापक स्वय पढाता है, सन्तोषी, सभ्य, मदाचारी सारे शास्त्री का जाता है। ग्रध्यापक स्वय पढाता है। वागी के पहले ही जिसका व्यवहार स्वय जो बोल उठे, पुस्तक के पहले ही जिसका म्राचार स्वय जो बोल उठे. कार्यों के पहले ही जिसके सस्कार स्वय जो बोल उठे. सक्षेपी शब्दो मे जिसके विस्तार स्वय जो बोल उठे. उससे बढकर फिर कौन कही । बच्चो का भाग्य विधाता है। श्रध्यापक स्वय पढाता है।

जिसने अनुशासन में रहकर अनुशामन करना सीखा है, जिसने मित भापण में रहकर मित भापण करना सीखा है, जिसने पथ-दर्शन में रहकर पथ-दर्शन करना सीखा है,

^{*} सहनारगी

धकि-गरीक्षा जान पूर्ण विस्वासी भपनी करुए कहानी कहती है।

भाकृति देरी बतमाती, तू भन्तर पीड़ा सहती है। संगी बहिन से बढ़कर रहाता प्रजनंभ नृप सुके यहाँ सब कुछ है तो भी पर-भर है कही चित्त में चैन कहाँ ? न्या यतलाळ यह चिन्ता यन पिता निरस्तर दहती है। बाकृति देरी नवसाठी तू भन्तर पीड़ा सहती है।

* इतने में मन्दम माते। धाते ही सादर सिद्ध-पुरुष को सविनय शीस मुकाते। किसा चान्द सा मोहक मूलका मधुर-मधुर मुस्कावे । भव्भुत प्रमा विशास माम पर लोचन हृदय सुमादे। भनुपम भाकर्षेण भाकृति का स्तम्भ सिद्ध रह जाते ! ऐसे पून रत्न पा मांक्यों ?काटे दृखा की रार्ते। राम भौर सक्मण को भी ये भाता गुगल मुनाते। नया उज्ज्यस मनिष्य है इसके चेहरे ही बतसाते। भुम-सुन में तो भुग्ध हो गया इनकी मार्मिक बार्ते। सहज अपनता में ही कितने ऋषे रहस्य दिसमाते रे

बोहा

सोदा द्व सौभागिनी ऐसे पुत्र समर्ज। नयो करती भोसी धरे । इतनी चित्ता स्थर्ण । † भाई। सब कुछ ठीक विन्तु कोई न पढाने वाला है जीवन के उन्तरि पद्म पर, कोई न बढ़ाने वासा है। सेताह दायित्व स्वयं में कर मत इनका तनिक विकार शेरी विद्याचों के सच्चे पात्र मिसे मन के धनुसार । लब-इम बह घावर्ष दिखाएं + समामण

दोहा

सुन प्रमुदित सीता हुई, सौप दिए सौल्लास। सिद्धपुरुप करवा रहा सत्वर विद्याभ्यास।

* शिक्षक सिद्धार्थ पढाता है, ग्रध्यापक स्वय पढाता है, सन्तोषी, सभ्य, सदाचारी सारे शास्त्रो का ज्ञाता है। ग्रध्यापक स्वय पढाता है। वागा के पहले हो जिसका व्यवहार स्वय जो बोल उठे, पुस्तक के पहले ही जिसका ग्राचार स्वय जो बोल उठे. कार्यों के पहले ही जिसके सस्कार स्वय जो बोल उठे. जिसके सक्षेपी शब्दो मे विस्तार स्वय जो बोल उठे, उससे बढकर फिर कौन कहो। बच्चो का भाग्य विधाता है। श्रध्यापक स्वय पढाता है।

जिसने भ्रनुशासन मे रहकर भ्रनुशासन करना सीखा है, जिसने मित भाषणा मे रहकर मित भाषणा करना सीखा है, जिसने पथ-दर्शन मे रहकर पथ-दर्शन करना सीखा है,

^{*} सहनासी

श्रमि-गरीशा

204

जिसमें सुविमर्पेश में रहक्र सुविमर्पेश करना सीसा है, जीवन-नैया का निर्धासक

मुन्टर मिन्य समाता है। मुन्टर मिन्य समाता है। मध्यापक स्वय पकाता है।

धप्यापक स्वय पहाता है
विद्या क्रम-विक्रय का साधन
जो कभी न सामा करता है
शिक्षण में भी विद्यार्थी की
धभिरुषि को बाना करता है
स्थाप पहचाना करता है
प्रामाणिकता नियमितता से
सम्बान क्रमान परता है।
भर धूर-कृद से कहा बड़ा—
वह देश-राष्ट्र निर्माता है।
ध्रम्मापक स्वय पहाता है।

यह देश-राष्ट्र निर्माता है
प्रध्यापक स्वय पहाता है
विद्यार्थी पहते जाते हैं
सम्प्रांकरा पहते जाते हैं
धपने इन सहज गुणों से ही
दे पाने बहते जाते हैं।
विद्यार्थी पहते जाते हैं।
विद्यार्थी पहते जाते हैं।
जो विजयी विद्यार्थी एक

नैसर्गिन प्रभा विभक्षाण है वर्ग-करण में जिनके जिज्ञासा जीवन सर्वांग मुसराग है युद्ध इंगित पर जो वसत हैं गुद्ध इंगित पर जो पसत हैं गुद्ध इंगित पर जो पसत हैं श्रपना ग्रौचित्य निभाने मे भी
कभी नहीं जो टलते हैं।
पल-पल को सफल बनाकर प्रगति
शिखर पर चढते जाते हैं।
विद्यार्थी पढते जाते हैं।

सोत्सुक गुरुकुल में रहते हैं,
तप, योग यथाविधि सहते हैं,
सहते अनुशासन मृदु-कठोर
प्रिय करते हैं, प्रिय कहते हैं,
सात्विक, तात्त्विक, स्वल्पाहारी,
अकुतोभय, अटल ब्रह्मचारी,
श्रम-निष्ठ, शिष्ट गुरा में विशिष्ट
व्यवहार कुशल आज्ञाकारी,
जीवन काचन में सद्विद्या
मुक्ता-मिरा मढते जाते हैं।
विद्यार्थी पढते जाते हैं।

दोहा

स्व-क्षयोपशम था प्रवल, सिद्धपुरुष सयोग।

पत्वर विद्याभ्यास का सफल हुम्रा उद्योग।

विद्यादान-प्रदान से उभय पक्ष कृतकृत्य।

मातृ-चरण मे म्रा गिरे, सिद्ध चरण ग्राहत्य।

* नैतिक, सामाजिक, भ्रर्थ-शास्त्र, शासन-विधि का ग्रध्ययन किया, हो क्रट-नीति के विशेषज्ञ श्राध्यात्मिक शिक्षरण-चयन किया,

^{*} सहनाएी

क्ष्मिक वर्गाञ्चा विसने संविमर्परा में रहकर

7 L

स-विमर्षेण करना सीका है जीवन-नैया का निर्यासक सन्दर मिष्य संभाता है। भ्रष्यापक स्वयं पदाता है। विद्या क्रय-विक्रम का सामन

जो कभी न माना करता है शिक्षण में भी विद्यार्थी की धनिरुधि को जाना करता है निष्पक्ष वक्षता से कतस्य--सदा पहचाना करता है प्रामारिगकता नियमितता से शाजान खजाना भरता है। भर ध्व-चंद संघड़ा बड़ा--

वह देश राष्ट निर्माता है। धाध्यापकः स्वयं पदाता है।

विद्यार्थी पढते जाते हैं सबर्गांकच पढ़ते जाते हैं मपने इन सहज गुलों ने ही ने भागे बढ़ते जाते हैं। विद्यार्थी पढ़ते जात हैं। ओ विनयी विज्ञ विवक्षण हैं नैसर्गिक प्रभा विस्तराण है नेस-नस में जिल्हे जिलासा

श्रीदम गर्नांग मुमदाग है गुरु इंगित पर जा यसप हैं गुरु इंगित पर को पसन 🧗

मैंने जब अपनी कन्या दी तो क्यो करते आप विचार, पड़ी म्यान को रहने दो यदि आक सको आको तलवार। तुम जिससे चाहो अपनी पुत्री का कर सकते सम्बन्ध, किन्तु सुता को मैं न क्रप में डालूगा कर आखे वन्ध। तुम क्या दोगे नहीं तुम्हारी छाया को देना होगा, अगर नहीं दोगे तो काया-माया को देना होगा। अभी स्नेह से समकाते हैं, वरना चढ़कर आएगे, माथे पर रख पाव तुम्हारी कन्या को ले जाएगे।

दोहा

वातो-वातो मे छिडा सहज सहेतुक युद्ध। उभय पक्ष के भट भिडे रण-रेखा पर कृद्ध।

गीतक छन्द

पृथु-प्रवल-बल सामने दल वच्च का हटने लगा। उदय से ज्यो मोह के चारित्र-वल घटने लगा। पुनः दोनो ग्रोर से हीने लगी तैयारियां, सन्नद्ध योद्धा बढ रहे करते हुए किलकारिया। † पूछते लवणाकुश भाई, मामाजी । यह ग्राज बज रही क्यो सहनाई। तप्त हेम से ग्राप सभी के वदन हो रहे लाल, भृकुटी-भग से लगता मानो कुपित हुग्ना है काल, श्रजब ग्राखो मे श्रक्णाई। कमर कसी तलवार हाथ मे भाला, बरछो तीर,

पहने कवच, तान सीने को चलते बाके-वीर,

देखते श्रपनी परछाई।

[†] लय-नावडा घीमो पहज्या रे

भीको यर धनुकाँस विधा घरतों की धनुसाधान कला कविता सगीत धित्र-दर्शन साहिर। मनोविज्ञान कला।

सब विद्यामाँ मे पारगत मातुल के सम्भुक्ष माते हैं लावस्थ बदन पर निकार रहा मपना कौशल विक्काते हैं मोदिक तीर्य गांभीर्य धैर्य मृप— का मन हुएँ बिमार हुमा मक्षणाई तरनगाई विलोक— मन्दर विन्तार कुक्ष मोर हुमा।

प्रस्त क्या क्या हुमा।

योहा

प्रव द्वा के घर नहीं प्रिक्त महीं है देर।
यो विकार प्रति सुता रूपकत्ता सम्पन्न।
सोसक सक्याकुमार को स्वाही परम प्रवच्न।
किया सुंहद पारस्परिक प्रविध्यन्न सम्बन्ध।
किया सुंहद पारस्परिक प्रविध्यन्न सम्बन्ध।
सिमा को भी पा स्पृपा पिता परम प्रात्मव।
प्रक्रम वापरिस्त करने पृथ्वीपूर मेजा संबाद
पुत्रम्य के कहनामा क्यानमाना पुत्री यो साल्हाद।
सोसा पुत्र उस मागिनेय के कुम की दिना जान-गह्यान
स्वानायो। मैं ऐसे सैने कर सक्या हू कम्या-यान।

मैंने जव ग्रपनी कन्या दी तो क्यो करते श्राप विचार, पडी म्यान को रहने दो यदि ग्राक सको श्राको तलवार। तुम जिससे चाहो श्रपनी पुत्री का कर सकते सम्बन्ध , किन्तु सुता को मैं न क्रूप मे डालूगा कर ग्राखे वन्ध। तुम क्या दोगे नही ? तुम्हारी छाया को देना होगा, श्रगर नहीं दोगे तो काया-माया को देना होगा। त्रभी स्नेह से समभाते हैं, वरना चढकर श्राएगे, माथे पर रख पाव तुम्हारी कन्या को ले जाएगे।

दोहा

वातो-वातो मे छिडा सहज सहेतुक युद्ध । उभय पक्ष के भट भिडे रगा-रेखा पर कृद्ध।

गोतक छन्द

पृथु-प्रवल-वल सामने दल वज्य का हटने लगा, उदय से ज्यो मोह के चारित्र-वल घटने लगा। प्न. दोनो स्रोर से होने लगी तैयारिया, सन्नद्ध योद्धा बढ रहे करते हुए किलकारिया। † पूछते लवगाकुश भाई, मामाजी । यह ग्राज बज रही नयो सहनाई। तप्त हेम से ग्राप सभी के वदन हो रहे लाल, भृकुटी-भग से लगता मानो कुपित हुआ है काल, श्रजब आखो मे श्रह्णाई। कमर कसी तलवार हाथ मे भाला, बरछी तीर, पहने कवच, तान सीने को चलते बाके-वीर, देखते श्रपनी

परछाई ।

[†] लय-नावडा धीमो पडज्या रे

विक-वरीका

धाज जा एहे पुत्रों ! पृथ्वीपुर करने संधाम भाए दिन सब्दो रहना हम राजाओं का काम वीरता भाकति में छाई।

भाज सुपुर्शी वजती है यह रए। की सहनाई चढ़ाई करते हैं माई!

चढाई करते हैं माई!

भया कारण भाकस्मिमक रख का क्या है विषम विवाद ? क्या कोई सीमाका विग्रह को करते प्रतिवाद म्यान में बात न कुछ मा**ई**।

मांगी कंपनवासा करने बंक्स का उदाह पर उस भमिमानी ने मेरी की न अरा परवाह राह माहब की मपनाई।

तय तो मामाजी! जाएंने हम धनस्य ही सान वश पद्धने वालों को दिखलाएंगे दो हाय मिटा देंगे सब घकडाई। समक गए मों पाज बजी है रहा की सहनाई

कह रहे सबलांक्य भाई। ° नव पीक्षे रहते वासे थे. वे कव यों सहने वाले थे चम पड़े सज्ज शस्त्रास्त्रीं से वे मिर्मय बहने वासे थे जाते ही दोनों पक्षों में जब प्रथम प्रथम मन्मिलम हथा य नौनशीन यों बार्टो ही---वार्ता में भादाकतम हथा।

म्यानो से निकली तलवारे खरतर वागो की वौछारे, पवि नृप के सूभट न ठहर सके लगता यव हारे, यव हारे, या देख स्वपक्ष पराजय वे---भट उभय वीर ललकार उठे, मानो सुषुप्त मृगपति जागे, क ले फएाघर फुफकार उठे। स्नकर टकारे चापो की टिक सके विपक्षी वीर नही, कैवल्य युगल के म्रागे क्या ? रह सकते घातिक कर्म कही ? ग्रवलोक पलायन सेना का पृथु प्रारा बचाने को भागे, कोसो तक दूर खदेड दिया वे थे पीछे, वे थे श्रागे।

दोहा

ऐसे कैसे भग रहे श्रो क्षत्रिय श्रवतरा। ठहरो श्रव बतला रहे तुम्हे हमारा वश।

* जान लिया जी । जान लिया , वश प्रापका जान लिया । पहचान लिया पहचान लिया वश-ग्रश पहचान लिया । देख लिया पौरुष प्रत्यक्ष , टिक पाऊगा मैं न समक्ष ,

^{*} लय-जावएा द्यो रे भाई । जावएा द्यो

कत्या देना मान सिया≀ जान वियाजी! जान सिया।

कत्या विना जान-गहचान किसे दे रहे हो श्रीमान्? किस बक्ष पर श्रीममान किया। ऐसे इसे जाम मिया?

जो होया पहिले ही शात कभी नहीं बढ़ती यह बात नहीं सही घनुमान किया। जान किया जी ! जान मिया।

ऐसा करने से प्रस्थान बचा नहीं पामीने शान वर्षों पहिसे भपमान किया? ऐसे वैसे स्थान सिया?

बोहा

भीं कहकर कोदण्ड पर ज्योंही सावा बाए।
वर-यर-यर घर कांग्ले सने प्रूप के प्राए।
भी! वष्णवध्यती! साकर इन मीरों कोससम्बाइए।
भी! वष्णवंपती! सादर छोत्सद कम्याकोले बाइए।
मैं हारा तुम अति बाबा! सब तो इन्हें मनायो।
मैरी प्रूमें मून इपावर भएना मुक्ते बनायो।
मैरी तो इनको समस्य सा धर्-वन-यर कंक्को।
पर गुरही में गोरल निकमे भेर बवर्षी मध्ये।

नय-म्हारी रव तेनहियां

मामाजी यो भानेजो को धीरज से समकाते।
नही क्षमाप्रार्थी पर वीरो | क्षत्रिय बागा चलाते।
ए वीर कुमारो | ग्रब इस रगा से उपरत हो जाइए।
रगाधीर कुमारो | शरगागत की ग्रब शान बचाइए।

ये अपने घनिष्ट सम्बन्धी श्वसुर बने अवरज कें। मिलो-जुलो, सस्नेह ले चलो, अब बरात सजधज के।

* पल भर में ही वीर-रौद्र रस बदल गया हर्षोत्सव में, शीघ्र उग्र प्रतिशोध-भावना परिवर्तित प्रेमोद्भव में। क्षरा भर पहले जो लडते थे वे आपस में गले मिले, पलट गया पासा ही सारा फूल और के और खिले।

† श्रचानक रग नया लाए, वडा रहस्योद्घाटन करने नारदजी श्राए।

मची एक ग्रिभनव हलचल-सी विस्मित-से सारे, भूके सहज ऋषिवर चरणों में सब डर के मारे, उच्च ग्रासन पर सरसाए।

जगल मे मगल यह कैसा ? कैसी तैयारी ? भाव-विभोर हो रहे भूले सुध-बुध-सी सारी, हर्प-धन उमड-घुमड छाए।

बोला पृथु कचनमाला है सुकुमाला वाला, देवर्षे । ग्रकुश को पहनाएगी वरमाला, ग्रत मगल जाते गाए।

^{*} रामायरा

[†] लय-तावडा धीमो पहज्या रे

'दाई' मागे पेट खुपाना घरे! नहां सीचे ? दिसा रहे मानन्द पुम्हारे ये नेहरे फीकें, इंदय धकराए-मनराए!

मरे ! वंश क्याहै मकुछ का यह तो बतलामो ? किसे वे रहे कन्या-चन्या यह तो समक्तामो ? ब्यान में मेरे सा जाए !

सकितय पृथुने कहा ऋषीस्वर ! मैं इनसे हारा भत बाध्य हो देता पुत्री नहीं भीर बारा भाग ही कृपया बतलाए !

वोहा

सवर्णाकुष भी ही रहे सुनने को सोल प्छ। भाकर ने नैठे समय चुपके ऋषि स्टब्स्ट ।

वताओं मैं क्या इनका वंद्य क्या प्रवासक पहचान न पाए सूर्य-वंद्य प्रवर्तश्च । कताओं मैं क्या इनका यंद्य ।

> युग निर्माता प्रभु घावीस्थर प्रथम चक्रवर्ती भरतेस्वर इस कुल के सभ-हंस । बताऊँ मैं वसा स्वका वंधा।

कितने इसम बीर कुए हैं विस विवेषी भीर इए हैं स्थागी विगतायांसा। यताऊ मैं क्या इनका बंधा। रघु-दिनीप-श्रज से उन्नायक,
नृप दगरय से भाग्य-विघायक,
योद्धा-प्राप्त प्रशस।
वताऊ में क्या इनका वग।
प्रवल प्रतापी राघव-लक्ष्मरण,
जान रहा जगती का करण-करण,
(किया) दशकघर का ध्वग
वताऊ मैं क्या इनका वग।

राम श्रौर सीता के नन्दन,
ये दोनो रघुकुल के चन्दन,
हैं श्रसली के श्रश।
वताऊ मैं क्या इनका वहा।

दोहा

हो सस्मित विस्मित पृष्ठ पूछ रहा साश्चयं ! ये वैसे आए यहा ? वतलाए तात्पर्य ?

* सीता को छोड दिया वन मे, सीता को छोड दिया वन मे। यह राम-राज्य की अजब नीति, श्री लक्ष्मरा के अनुशासन मे।

> जव गर्भवती थी महासती गर पर ग्रिभयोग बडा ग्राया, लका-प्रवास का ले निमित्त ग्रवला को दोषी ठहराया,

^{*} सहनारगी

११६ व्यक्ति-गरीका भारी अनुसन काओर क्ला

हा! घटी राम के जीवन में।
सीता को स्रोह दिया बन में।
राजव ने तो पाटी-पोती
कुस करने में रक्वीन कमी
पर वासतीस्त्र का बन मट्ट
व्यरस्व पुत्र ये पराक्रमी
नृप वयावव का योग मिला
संकट में सुम सहसीग मिला
माची का चक्र चला ऐसा
यह घनहोना संमीग मिला।
तेरी पुत्री सीमास्यती

मानो सिंहासन कोस गया प्रपयश स करकर रधुवर ने प्रपत्ताया ऐसा पथ नया।

पहिसी घटना यह निन्दास्पद

तू सोधन करकि विद्यासन में।
सीता को स्रोब दियासन में।
सुत तमक छटे हैं सबस्पांक्य
मंदुरा यह मंदुर्य सह मस्वा
स्त हुंक्य हातक घटना के
साम बह मोनी रह न सका
माता को एसा करट दिया
क्या काम राम मे हाय | किया
सरवाय किया सन्याय किया
यह महामोर सन्याय किया।

है कहा ग्रयोध्या ^२ कहा राम ^२ लग गई ग्राग सारे तन मे। माता को छोड दिया वन मे।

जिस मा का हमने दूघ पिया उसका अपमान न देखेंगे, चम-चमती इन तलवारों से हम जा करके बदला लेंगे, रे। दूर कौनसा कौशल है वीरत्व स्वय का तुम तोलो, यदि थोडी सी भी क्षमता है करके दिखलाओं कम बोलो।

> 'कलिकारक'सुलगा चिनगारी हो गए लीन नभ प्रागरा मे । सीता को छोड दिया वन मे ।

दोहा

स्रातुरता उद्विग्नता बढी उभय के स्रग । शीघ्र श्रयोध्या-गमन का छेडा गया प्रसग । वज्जजध दे सान्त्वना करते हैं श्राश्वस्त । तत्क्षरा वेवाहिक विधि की सम्पन्न समस्त ।

गीतक छन्द

चले ग्रब दिग्-विजय करने वज्र-पृथु नृप साथ में , मार्गवर्ती देश जीते वात की ही बात मे। सुर-तटी-तट जीतकर श्रागे चले कैलाश से , उत्तरी दल जीतते वढते रहे उल्लास से। बनि-अधेका सिंधु-तट के निकट साथे प्रान्त सब प्राराम से युद्ध मब लगने सगे हैं उन्हें ग्रुज-स्थायाम से

224

युद्ध मब लगने सगे हैं उन्हें मुख-स्थायाम सं। कर सफल दिग्-विजय-यात्रा सबल दस-बम ठाठ से भागिरे मां के चरल में युगल तब समार से।

देख पुत्रों की सुधोमा मित प्रफुल्सित जानकी हो रही साकार स्मृति मपराजिता करदान की। मैं सुप्रुष्मा हू मनत्मा खिला मास विशास है। सास के ता एक मरे युगम विजयी सास है।

चतुष्परो

न हती जुग जीक्रो कुग त्राता। सिद्ध नामनाएं हो सारी जाड़ी सक्षय रहो तुम्हारी।

परए प्रएत पूत्रों को माता

पूत्र रही गौरव से झाती सजस लोबनों से नहमाती। देती बार-बार प्राधीय भूम रही प्रस्तर मन-टीसं।

वयाजय न किया इशारा हा सब मीझ प्रयाग हमारा । यह सबसर कीशन जान वा प्रयम पराक्रम दिखलाने का ।

सहज जुड़ी है सना भारी दिर बरनी होगी तैयारी। तप्थाल गुजी रिशासनाई बसन उसन दोनों भारी।

दोहा

घर आए चिरकाल से करके विजय महान्। स्राते ही करने लगे, स्ररे । किधर प्रस्थान।

ग्रयोध्या हम जाएगे
 मातुश्री का यह ग्रपमान न सह पाएगे।

इतने दिन कुछ भेद न पाया , नारद मुनि ने हमे जगाया , पूज्य पिताजी को अब पौरुष दिखलाएगे ।

† यो स्न सीता सती हुई दिलगीर,
लोचन धारा बहने लगी।
हो मेरे लाल!
उनकी बाते गई कलेजा चीर,
गद्गद् स्वर से कहने लगी।
हो मेरे लाल!

रे । रे । पुत्रो । यह नया करते काम नया उन्हें नहीं पहचानते ? मेरी ग्रागा के तुम ही विश्राम , नयो यह भूठा हठ ठानते ।

* हमने उनको जान लिया है ,
 सही रूप पहचान लिया है ,
 क्या हम कम है मा । जो उनसे घवराएगे ।

वने वे कूर भाव न मोडा, हाय[।] तुम्हे वन मे जा छोडा, क्या हम श्राखे मूद, देखते रह जाएगे?

^{*} लय--राग री रेंम विद्याणी

[†] लय — बघज्यो रे । चेजारा थारी बेल

 त्रो कुछ किया उन्होंने उसको मूल समझो ! प्रपत्ने कर्तव्य को। उनके पीछे तुम न बनो प्रतिकृत्म जामो प्रपत्ने गन्तव्य को।

जनके पीक्षेतुम न बनो प्रतिक्रूम जायो प्रपत्ते ग्रन्तक्य को। महीं क्कों से प्रकृता प्रपना धर्म मेरा यह मनन सम्बेष्ट है। खोडो तुम यह चाहन का उपकर्म मिलना ही सर्क स्रोट्ट है।

ै कट्ठा का प्रतिफल है कट्ठा राजनौति की है यह पट्टा उसके वार्सों को वैची से सलकाएँगे। जाते हम कट्टमा निमाने

अपेसे को तैसा समक्रामें यही सही मन्तस्य इसी को प्रपत्नाएंगे। समें चून का तथा ग्रमी तक योद्य

क्ष होय सम्मालो स्पैर्म से। देला नहीं राम-श्रदमरा का रोप, सामोरा काम सो पैर्म से।

मिरव की भी हद होती है प्रति पीरक स्वतत्त्व कोती है प्रतिता क्लंकिता के पुत्र न कहमाएंगे। वहीं क्लेंगे नहीं रुकेंगे तमवारों के साथ मुकेंगे,

मावाका सम्मान बङ्गाकर ही माऐंगे। मयोध्या हमजाएंगे।

नय-वड़म्यो रे ! वेजास वासे देन 1 नय-राव से रह विस्तानो

ः ६ : मिलन

१२० वस्त-परीका

 भो कुछ विधा उन्होंने उसको मूल समस्ते ! प्रपते कतस्य को। उनके पीछे तुस न बनो प्रतिकृतः भागो प्रपते गरमस्य को।

नहीं बड़ों से धड़ना धपना धर्म मेरा यह मनन यथेष्ठ हैं। स्रोड़ो तुम यह आहब का उपकर्म मिसना ही सर्व थेष्ठ है।

ं कट्ताका प्रतिफस है कट्ता, राजमीति की है यह पट्ता, उलके वार्मों को वैभी से सुलकाएँग।

आते हम कर्तंच्य निभान जैसे को तैसा समम्माते

यही सही मन्तव्य इसीको धपनाएँगे। नये जुनकानया धनीतक जोग्र

न स्व होश सम्भानो स्पर्य से। देना नहीं राम-सक्तम्या का रोप,

ं भीरज की भी हव होती है भति भीरज स्वतत्व कोती है

पतिता क्संकिता के पुत्र न कहलाएंगे।
नहीं करेंगे नहीं करेंगे

तनवारों के शाथ भूकोंने, माताका सम्मान वड़ाकर ही बाएँगे।

भयोष्या हम जाएँगे । सन-पड़म्मी रे ! चेजारा चारी केत

¹ नव—राय री रेंख पिश्चारहो

* रणभेरी गूजी श्रम्बर मे , ग्राकस्मिक ग्राहव की चर्चा साकेत नगर के घर-घर मे। रएाभेरी गुजी शम्बर मे। सेना का स्कन्धावार जमा है रचे रचाये विविध व्यूह, शस्त्रास्त्रो से सब सज्ज-सज्ज है ग्रडे खंडे संनिक समूह, भू काप रही पाद-ध्वनि से नभ बिधर हो रहा नारो से, फुकारो से हुकारो से ललकारो से टकारो से, श्राखे ग्रगारे वरसाती है श्राग धघकती श्रन्तर मे। रएभेरी गूजी अम्बर मे। मुछो पर ताव चढाते है ग्रापस मे जोश जगाते है, जय तूर वजा, नक्कारो पर डके की चोट लगाते है,

> रे । ग्रवध नरेश्वर कानो मे क्या तैल डाल कर सोए है,

^{*} सहनारगी



यह कैसे हैं डरपोक लोग कुछ नहीं समभ में ग्राता है, योडी-सी खडवड सुनते ही इनका मन घवरा जाता है, ग्राक्रमणा ग्रयोध्या पर कर दे क्या कोई खेल तमाशा है, यह कठिन कल्पना भी करना थोथी-सी स्वप्निल ग्राशा है। ग्राया है पथ-भूला कोई यो कहा राम ने उत्तर में। रस्मोरी गूजी ग्रम्वर में।

उलटा उसका उपहास हुग्रा

मन मे न जरा विश्वास हुग्रा,

पर उपर्युपरि युद्धोत्तेजक

व्विन से रण का ग्राभास हुग्रा,

जाग्रो सेनानी । तुम जाग्रो

सीघे समभे तो समभाग्रो,

ज्यादा चीचप्पड करते हो—

डडो से मार भगा ग्राग्रो

सत्वर सेना को साथ लिए

हो सज्ज ग्रा गया सगर मे।

रए।भेरो गूजी ग्रम्बर मे।

* ज्यो ही कौशल को वर्ष्तियनी रगा-रेखा पर हुई खडी, त्यो ही प्रतिपक्षी सेना, भूखे वाघो ज्यो ट्रट पडी। एक-एक भट लगा भागने, कोई भी टिक सका नही, पंथास्यातचारित्र सामने क्या ठहरेगा मोह कही?

^{*} रामायरा

198 धनि-परीशा क्या नगरी के **धारक्षक**-गरा---

> भी किसी मधे में बीए हैं या इर के मारे कहीं इ⊈पे करते संबाद परस्पर में। ररएभेरी गुत्री भन्तर में। समसनी मयकर जनता में मण रही कहीं पर भगदक-सी भाषात-यास सब ठप्प हथा हो रही स्थवस्था गडवड-सी जग-जीवम भस्त-अयस्त बना

भातक भतकित खाया है, श्री रावद-मध्मए के होते यह कैसी किस की माया है, ये कौन ? कहां से भाए हैं?

मद पूछा रहे एक स्वर में। ग्राभेरी गूंनी धम्बर में। भारसक-नामक मे देखा वन-मानस सक्ट ग्रन्त ह्या दल-बादम अर्थो बाहिर सेना

तो उसका धन्तर प्रस्त हमा माराज्य सभा में बदाञ्जिस बोला जन-शायक ! क्या जाने ? किसने हम पर बाक्रमण किया **उसको** परमेरवर पहिचाने हत्त्वस-की सतवल-की भाषी है उचन-पूजन सीपुर मर में 1 रगभेरी गंजी प्रम्बर में। यह कैसे हैं डरपोक लोग
कुछ नहीं समभ में ग्राता है,
थोडी-सी खडबड सुनते ही
इनका मन घबरा जाता है,
ग्राक्रमण ग्रयोध्या पर कर दे
क्या कोई खेल तमाशा है,
यह कठिन कल्पना भी करना
थोथी-सी स्विप्नल ग्राशा है।
ग्राया है पथ-भूला कोई
यो कहा राम ने उत्तर में।
रणभेरी गूजी ग्रम्बर में।

जलटा उसका उपहास हुग्रा मन मे न जरा विश्वास हुग्रा, पर उपर्युपरि युद्धोत्तेजक ध्विन से रएा का ग्राभास हुग्रा, जाग्रो सेनानी । तुम जाग्रो सीधे समभे तो समभाग्रो, ज्यादा चीचप्पड करते हो— डडो से मार भगा ग्राग्रो सत्वर सेना को साथ लिए हो सज्ज ग्रा गया सगर मे। रए।भेरो गूजी ग्रम्बर मे।

• ज्यो ही कौशल को वर्ष्णियनी रएए-रेखा पर हुई खडी, त्यो ही प्रतिपक्षी सेना, भूखे बाघो ज्यो ट्ट पडी। एक-एक भट लगा भागने, कोई भी टिक सका नही, पंथाख्यातचारित्र सामने क्या ठहरेगा मोह कही?

^{*} रामायरा

१२६ ग्रीम-परीक्ता

चेना है या साए हो भाडे के पक्ड-पकड़ रगस्ट केबल भगना ही सीचे ये मानो रेगिस्सानी कट। कौन सुम्हारा है मधिनायक उसको धाये धाने दो, प्रास्त बचाकर जो बचारे जाए उनको जामे दो।

योहा

देस विपक्षी अस प्रवस चिन्तित सेनाध्यक्ष। सब्दे में धसमध हैं हम इनके समकक्ष। धहो! धकस्पित कस्पना होती है सागर।

सूर्यं चन्त्र रहते हुए, समसावृत संसार।
पहुचाया प्रविध के निकट गुण्त संवाद।
'इत्यात का यह प्रकृत है' तरत उठे सविधाद।

युग पनटा उत्तटी घरा या टूटा ग्राकाश। कीन कर रहा है गरे! यह ग्रमफल ग्रायास।

विविध विकल्पों में विकल चसे प्रयोग्यानाण। नानापुष गण रण तुरंग सारी सेमा साथ। उन सक्तात युगस शीरों से करने को सम्राम।

रोपारुण हो धमराङ्ग्रण में भाए सहमण राम। प्ररुण नैत्र निकारुण हुदय त्यों निष्पकम्प निस्मेह पर-पर प्रपर दथन से इसते शहन-मुत्तन्तित देह सोच रहे जन घरे! हो गया है किसता किन्नु साग।

प्रकृती नदी है वड़ी स्थापना प्रवृक्त एहे भूज-उप्त , नवृक्त रहे विजयी व्यॉंस्पुको कर वेंगे सस-सब्द है प्रयुक्त कोदण्ड हाथ में मूर्त क्य उमें स्थाम ।

सब-मयम ग्राम मनाएँ नाएं

नल, सुग्रीव, विभीषण, अगद आजनेय से वीर, अहप्रथमिका वाले योद्धा एक-एक से घीर, सवको साथ लिए सत्वर गति, रघुकुल तिलक-ललाम।

त्राते ही देखा है सारी सेना ग्रस्त-व्यस्त, प्राप्त पराभव से विभीत से शोकाकुल सत्रस्त, सूर्य सूनु, लकेश ग्रडे ग्रा, ग्रामुख पर पग थाम।

दोहा

लगे कुचलने लवरा दल प्रवल वना निज पक्ष।

नभ्चारी नारद निपुरा ने निरखा प्रत्यक्ष।

भामण्डल-गृह रथनुपर पहुच गए ग्रविलम्व।

देखो कैसे लग रहा ग्रधर ग्रभ्न में स्तम्भ।

म् पूछ रहा सादर प्रिंगाम कर भ्राज व्यग्रता है कैसी? ऐसी ही है वात भ्ररे! पर तेरे तो सुनने जैसी। पुडरीकपुर पर से उडते मिला जानकी का भ्राभास। निञ्चित ही वह वैदेही थी, मुभे हो गया हढ विञ्वास।

वोल रहा भामण्डल दुखित हो, कैसी वाते करते हैं? जले-कटे घावो मे क्यो ग्रव नमक-मसाले भरते हैं? इवापद-सकुल सिंहनाद वन मे जीने की क्या ग्राजा? युग वीते, ग्रव गगन कुसुम-मी करना उनकी ग्रभिलाषा।

दोहा

निश्चित जीवित जानकी कहता हू मै मत्य। हैं। जीवित है, पूछता खेचरपति प्रिंगपत्य।

^{*} रामायरा

कठा-कैठा कमा यहां वना एहा है बात? चठ आ कठ विमान में कर सत्वर साक्षात।

> धाया है भामण्डल भाई भनमोर धमा की रजनी में भासोक किरुए प्रमिनव पाई। भाषा है भामण्डल भाई।

यह जनक विदेहाकी देटी

उने गनास में भी बेटी प्रांतों में गिरते नाष्प बिन्तु गहरे चिन्ताम्बुधि में पैठी नमचर पति में पहचान सिया सीता है निश्चित जान सिया किर मुक्क कर देखा एक बार नारक से मच्या मान सिया कार्यों से बिहुड़ी महिन मिसी सीमान्य बल्तरी सहस्तरी सहस्तरी

श्राया है भागव्यक्त भाई।

प्रहा ! बुक्ते नीय में ज्योति जसी मृत म सजीवन-गतित दसी पान्य म बिद्धु जीकों की नित्त रही साज तो कमी-क्सी क्य-क्ष्म बहनी मूगी मरिता पुरान्ति हा रही मूब बनिया पाराम्य भन्न बम्बस निक्ता स्वती म उदिन हुमा महिना सिलला प्लावित है मरुस्थली पतभड में हरिहाली छाई। ग्राया है भामण्डल भाई।

गीतक छन्द

स्नेह सरवर मे निमज्जित वहिन-भाई मिल रहे, चिर-विरह-दव-दग्ध उनके हृदय-उपवन खिल रहे। मूक मन है, मूक वार्गी, कुछ नही कह पा रहे, वेदना सवेदना में उभय वहते जा रहे।

* चोटो पर चोटे ग्राती, भाई [!] मैं क्या बतलाऊ [?] फटती जाती है छाती, भाई [!] मैं क्या बतलाऊ [?]

श्रगुलियो पर यो गिन-गिन , कैंसे काटे दुख के दिन [?] बातें वे कही न जाती, भाई [!] मैं क्या बतलाऊ [?]

जैसे-तैसे बच पाई, पुण्योदय से यहा श्राई, समता से समय बिताती, भाई ¹ मै क्या बतलाऊ ?

दोनो भानेज तुम्हारे , ग्राशा के ग्रमर सहारे , उनसे थी जी बहलाती, भाई [।] मैं क्या वतलाऊ ?

नारद ऋषि ने सुलगाया , विद्रोही भाव जगाया , बच्चे मेढक वरसाती, भाई [।] मैं क्या बतलाऊ ?

^{*} लय---मगल है ग्राज तेरे शासन ने

सङ्में साकेत गए हैं भड़ने साकेत गए हैं एक गर्डमें तो समस्त्रती मार्डमें क्या बतसाऊ ?

बोहा भरी ! संगनी सोदरी यह क्या किया धनर्ष?

में समभ्यती रह गई, है इसका क्या धर्म?

धारिक परीकार

क्यों उनको जाने विया सिया महीं क्यों रोक? वे ये बच्चे क्यों नहीं दिखलाया धाक्षीक? वती वसी अस्दी वर्ले कहीं न विगडे काम। पूर्णतया धनभित्र हैं उनसे महनए। राम। **ं असे स्वरित मन पवन-वे**ग से रुग प्रांगण में भाए हैं सबराइन्छ न जनमी के घरलों में शीध ऋकाए हैं। मामच्छल का परिचय पा सविनय दोनों ने किया प्रशास गले सगाया गोद विठाया सैसा मधुर मिसन का माम ? सममाता मातम भागव्यम ऐ! वीरों! परा विचारकरो। तुमकरोन ऐसे उपन-पूपत भीरों! मन में कुछ पैर्य भरो। परिपर्य महीं भव तक भगूभव भाहर करना तम कब सीचे उसमें भी सम्मुक प्रविश्वर कर शक्ति संतुनित क्वम भरो । तरुणाई की भक्ताई में कर्तका स्वयं का मदाभक्षी भावेश हटा विदेश मिटा माठाके मन का वतेश हरी। भिसना हो तम्हें पिता जी से दो बिसय-महित के साम मिसी है! सर्वे वस वैद्वर्य जारा धपने कम का भावर्ध-स्मरी।

ो समापरा

सय-जनस्थान तुम्हारे हारे पर

दोहा

जीते तो भी हार है, हारे तो भी हार। घर मे क्षति, जग मे हसी, ग्ररे। उभयत मार।।

* हमने सोचा मामाजी ग्राए उत्साह वढाने को, किन्तु ग्राप तो ग्राए हम को उल्टा पाठ पढाने को। ग्राए इतने दल-बल से, क्या बिना लडे ही फिर जाए? मान पराजय भुक जाए?क्या करें?ग्राप ही समभाए।

दोहा

वतलाए किस बात में हम है उनसे न्यून।
माता के अपमान पर उबल रहा है खून।
समभ गया मण्डल महिप उनका देख उवाल।
अपने रुख को बदलते, वोल उठा तत्काल।

ं वाह । वीरो जैसी आशा थी वैसे ही तुम निकले सपूत, अब मैं भी साथ तुम्हारे हू लो, बढो क्रान्ति के अग्रदूत, है पक्ष हमारा न्यायपूर्ण अन्यायो का बदला लेंगे, इन शस्त्रास्त्रो से शौर्य भरा पूरा-पूरा परिचय देगे।

दोहा

स्तेचरपति शर-चाप ले वढे छेडने युद्ध। कपिनायक, लकेश का किया मार्ग श्रवरुद्ध।

^{*} रामायरा

^{ां} सहनाएगी

विद्यायरपित को उभर देख रहे निस्तब्ध। सहसा उनक बदन स निक्स पढे ये शक्ट।

भामण्डल ! सह क्या घरे [!] रिपु सनाके सा**य ।** युद्ध नहीं है हा न हो यहां भीर ही बात ।

भाषो भामण्डल ! सपने दल में धामो। क्यों उद्यर खड़े हो कारण तो समझामो।

तुम भूल रहे हो वह दल नही हमारा हो तुम भूम रहे हो वह दम महीं हमारा। 'क्यो? ग्डुका से ही हैसन्ताच सुम्हारा?' हो हों सीतासे ही सम्बाध हमारा। सीतान रही तो भी प्रतिकच हटायो। क्यों उकर कड़े हो कारण तो समस्प्रयो।

ऐसे मामध्यल क्यो कार्तों में ठगते ? है ठगने की क्या बात ? हाथ सम्माको कलतेन प्रत्क भैमा ! यह भ्रान्ति निकासो ? पहल ये दोनों कौन ? रहस्य क्वायों ! क्यों उक्तर कड़े हो कार सुता सम्मामो !

सीता न रही शो कही राम क्या सगते ?

श्रामा । ग्रिनिकट वरा हो यदि विक्रासा ?
'सो बतासाओं उत्कट श्रस्तर प्रमिसाया । प्रीमें स कोले— में सीता-मुत प्यारे सक्यांकुरा दोनों रापक करा उत्रियारे । क्यांसिता जीविता है तो हमें दिकामों ? क्यों उपर कहें हो कारण तो समकामों ।

दोहा

चुपके से चलते वने रथनुपुर पति साथ। ग्रा बैठे सीता निकट कपिपति, लकानाथ।

महारथी चलते गए पाया कर-सकेत। वैदेही के यान मे, हुए सभी समवेत।

लवणाकुश के सामने टिकान राघव-सैन्य। मानो भगदड-सी मची छाया दुर्दम दैन्य।

* बोले लक्ष्मिए से श्रीराम, देख पलायन ग्रपने दल का विचलित से परिएााम। बोले लक्ष्मिए से श्रीराम।

त्राता नही समभ मे भाई। कैसी विकट परिस्थिनि ग्राई, कौन ग्रयोध्या पर चढ ग्राए^२ क्या है इनके नाम^२

सचमुच ही ये सवल साहसी,
मन मे उठती श्राह दाह-सी,
पता नहीं है इस श्राहव का क्या भावी परिगाम।

कहा सभी वे वीर हमारे,
कहा सभी वे घोर हमारे,
नही दीखता है कोई भी गतरस होता काम।

श्रपने को चलना ही होगा , रिपु दल को दलना ही होगा , कलनातीत हुई है यह छलना गतिविधि सारी वास ।

^{*} लय--जागो जागो हे नादान

बोहा

चषर वेग संबद्ध रहे सवणांकुश उद्दाम । रषारूक सम्मूल झड़े उनसे लक्ष्मण राम।

† भाई ! सहमरा य दोनो सगते है प्यारे-प्यारे ! भगते है प्यारे प्यारे और नयनों के तारे। कहता भन्तर-दिस कोई सम्बाभी निकट हमारे । भाई! सक्ष्मण ये दोनो लगत है प्यारे-प्यारे। रैसी सुन्दर माकृति है मामा पपनी प्रतिकृति है **एड-एड क**र मन में द्राता मिसने का बाह पसारें। **मोक्रें** उत्पृत्स कमल-सी मादक-सी धौर धमस-सी भमत-सा बरस रहा है मध्यम स मोहनगारे। कोमस करकमस-नास से

> सुन्दर मित सरस सक्तीने सुगठित हैं मनसक सारे। कर-दार कोदण्ड समामे इनको कैसे पहिकानें

भाकर्षक काल-दाम से

पूर्वे भी को कब कैसे? किसके ये राज-बुकारे। * ग्रजी [!] तुम लडने श्राए। खडे-खडे क्या देख रहे हो यो मुह-बाए। बोल रहे लवगाकुश कर-गर-चाप चढाए। ग्रजी [!] तुम लडने श्राए।

यह रएा कोई नहीं तमाना ,
पूछों जो भी हो जिज्ञासा ,
समाधान देने शस्त्रास्त्र-नास्त्र हम लाए।

तुम हो महायुद्ध के जेना, समरागम के पूरे वेत्ता, हमने सुनी तुम्हारी भारी दन्त-कथाए।

इन हाथो से रावरा मारा ? एसे जीता भारत सारा ? लडने नहीं, सीखने ग्राए युद्ध-कलाए।

श्रकुश । हमने क्या जाना था ? इन्हे विश्व-विजयी माना था , पर इनकी तो काप रही है श्ररे । भुजाए ।

देख रहे हो क्या जी भरके , दिखलाग्रो कुछसाहस करके , हमे सिखाग्रोगे तुम, या हम तुम्हे सिखाए ।

† बच्चो तुम । रहने दो उपदेश, घर को जाग्रो, जाग्रो। लेते क्यो व्यर्थ मोल सक्लेश, घर को जाग्रो, जाग्रो। जाग्रो । जाग्रो । प्रारा बचाग्रो, क्या ग्रच्छा है इतना ग्रावेश, घर को जाग्रो, जाग्रो।

^{*} लय-राग री रेंस पिछागो

[†] लय-कैसो निकाल्यो भिक्षु पथ

किसके कहने से सुम भाए क्सिके द्वारा हो चक्साए शक्तमों ! दीपक में भ्रतापात मों मत लाखो लाखो ।

वासी दोसी है क्या सेना? भीपरा है रसा का पद्म पैना .

धरने से प्रत्ने धन्तिय कार मित्रों स मिस भाषी ! हमको तम पर करुगा माती

पलती तमनार सक्पाती बच्चों की हत्या का यह पान रे! मह ध्यर्थ सगाओ। लेता है जा सैनिक शिक्षा

शिक्षा केलाते में स्त्रो टीशा बचपम में ऐसे ध्यंग-विनोद कर मत मीत धलाओ।

कोरी बना रहे हो बात पानी बना उद्दे हो बात

या काशो हिन्यार नहीं हो सको हमारे सान। करुणा किसी दीन पर करना मोसी किसी हीन की भरता

म्मा-पात्र हम नहीं तुम्हारे क्यों फैसाएं हाज। सेना कुछ भी नहीं हमारे

दहल गये क्यों इदय सम्हारे हम को भागे गहां देखने करामात सामातः।

हम है मैसर्गिक संस्कारी प्राप्त कर चुके मनुसब भारी

भौर तुम्हारी भी तो सारी जान रहे हैं क्यात ! तव--वरे । थो । पारत के समहर

मूल्यवान मत समय बिताश्रो , श्राग्रो श्रव शस्त्रास्त्र उठाश्रो , पहले हमसे लडो, श्रडो फिर, भर देगे श्राघात ।

† सुनो सैनिको ग्रव तुम सारे करो सहर्ष पूर्ण विश्राम, द्वन्द्व-युद्व चारो मे होगा नही तुम्हारा इसमे काम। सभी देखते रहो शान्त हो भित्ति चित्रवत् बन निष्काम, यो कह उतरे समरागरा मे लवरा कुञ श्री लक्ष्मरा-राम।

राघव का स्यन्दन कृतान्तमुख, सौमित्री का वीरविराध, वज्र लवरा का, पृथु अर्कुश का चला रहे हैं अव्यावाध। बचा बचा कर पितु-पितृव्य को छोड रहे मीता-सुत तीर, करते विद्ध शताग अर्ग को घायल कर-कर अरव-शरीर।

गोतक छन्द

तीक्ष्ण श्रामुध राम-लक्ष्मण के घनाघन चल रहे, किन्तु उनके श्रस्त्र ही हा । श्राज उनको छल रहे। फेंकते हैं किघर, जाते किघर ही, लगते कही, साधना-साधित श्रत श्राघात करते हैं नही। रथ चलाश्रो, कुचल दो, यो कह रहे हैं सूत से, तप्त प्रकृपित राम-लक्ष्मण हो रहे हैं भूत से। करे क्या रथ हुए जर्जर, श्रव्य घायल हो गए, खीचते बलगा हमारे हाथ दुर्वल हो गए।

दोहा

लिया हाथ मे राम ने ग्रायुघ वज्रावर्त। शिञ्जिनी को तान कर गर फैंका पर व्यर्थ।

135

एक-एक कर यों सभी भस्त्र गए बेकार। थड़ा ज्ञान बिना यथा कियान हरती भार। मों सदमरा के भी सभी हैं निर्देहिम्मार। दया-दान संयम विना ज्यों होते निस्सार। मित चिन्तन में हारह उभय बन्ध गम्भीर। भौर इचर संघल रह तीसे ताने तीर। * बाहु ! बाहु ! तुम तो बड़े ही कमजोर निक्से हमने समम्बादा घौर क्छ, घौर निकले। इस क्या ऐसे ही मत्र वकोर निकसे

मन्दि-परीक्षा

हुमने समभा था भौर कुछ भौर निकले। हम तो सुनते ये विष्वविज्ञता ही सारे भारत मु-भव्यक्त के नेता हो किन्तु कोरे बार्तों के बतकोर निकसं। हमने समस्त्र या ग्रीरकृद्ध, ग्रीर निक्ले। पहिले ही जात होता हो माते नहीं ऐसे इज्जत शुम्हारी गंबाते नहीं

कायरों के ही सच्चे शिरमोर निकसे। हमने समस्त्र था भीर कुछ, भीर निकसे। इतना कहने पर भी एक समती नहीं कैसे वर्मात्मा है? टीस अयती नहीं हम तो कितानी ही बार भक्तभीर निकर्म। हमने समका या घौर कुछ धौर निकले। **पोध शीले इ**न बाएों में प्राएत हैं नहीं होना इनसे तम्हारा भी त्राण तो महीं

सय-प्रश्नुधत का एसान बुल्ने नान धुननी

करके एक एक सब को बटोर निकले। हमने समभा था ग्रौर कुछ, ग्रौर निकले।

दोहा

सुन कटु बात विपक्ष की जगता जोश सरोष। वरसाते बागावली, करते श्रति श्राक्रोश। किन्तु लक्ष्य को एक भी नहीं बीधता ठीक। बिना ग्रक के शून्य के सख्या यथा ग्रलीक।

गीतक छन्द

सोचते हैं उभय भ्राता कहा जाए ? क्या करे ? समभ मे कुछ नही भ्राता किसे पूर्छे ? क्या करें ?

उत्तरोत्तर शस्त्र सारे भ्राज उत्तर दे रहे, जो ग्रमोघ ग्रचूक थे वे सब विदाई ले रहे। शिथिल-सी दोनो भुजाए, ग्रथिल-सा चैतन्य है, बिना सोचा, बिना समभा, भ्रा गया कार्पण्य है।

हे त्रिलोकी नाथ । त्राता, कहा जाए ? क्या करे ? समभ मे कुछ नही ग्राता किसे पूछे ? क्या करे ?

हो रही अज्ञात सिहरन, श्रौर कम्पन देह मे , रोष ग्राता, उतर जाता, हृदय डूबा स्नेह मे । बिना अन्तर-दाह कैसे युद्ध हो सकता कहो ? बिना अन्तर-ग्राह कैसे युद्ध हो सकता कहो ?

विधि-विधानो के विधाता । कहा जाए ? क्या करें ? समभ में क्रुछ नहीं स्राता किसे पूछे ? क्या करें ?

हृदय कहता मिले, स्थितिया बाध्य करती युद्ध को , प्रथम ही अवसर हमारा पथ हुग्रा अवरुद्ध हो । मिथ गुण जैसी भवस्या स्वान्त डांबाडोस है तोल है ना मोल है ना इक्षर मधुर मद्योस है। विकस-सामन स्वट्यटाता कहां जाएं? क्या करें? समस में कुछ नहीं माता क्ये पूर्षे? क्या करें?

> ‡ इतन में धक्स न धक्क भाकस्मिक बाए। चलाया है जा कता बीर वक्षस्थक में

14

र्धान-परीका

पन में तक भए मूर्छाया है
स्वामी को संज्ञा-सून्य देख
स्मन्दन किराभ ने मोड़ लिया
श्री बासुदेव के भीवन में—
इतिहास घनोचा ओड दिया।

हिहाकार मचासेना में सकट घायया रे।
धीकों में घभेरी सम्नाटा छा गया रे।

हमके यक्के बैनिक सारे कौप रहेहें सब के सारे सबक्या महाप्रमय होगारे! बिगड़ी कौन सुमारे सब का जी कबरा गया रे!

सहसा संवित साहस ट्रेटा मानों बाल्य वैश्वें का ट्रूटा सच्चा सबस सहारा छूटा क्टा भाव्य देवता उनटा वक वक्त गया रे.

[‡] सहनारणी किय—सीटा बाता की बोबी से इक्सट बारी सुदड़ी

ग्रग्नि-परीक्षा

छोटे-छोटे दीख रहे हैं, कहते रए हम सीख रहे हैं, मारे कथन ग्रलीक रहे हैं, चीख रहे हैं सब, क्या इन्द्रजाल ग्राया नया रें।

> * पा मृदु मनहारी मन्द पवन लक्ष्मरा ने जब पलके खोली, देखा रथ को वापिस जाते तत्क्षरा अन्तर-आत्मा डोली, क्या कर डाला ? यह रे विराध ! तू मुभे किधर ले, जाता है, रम रहे राम रएा-प्रागरण मे क्या लक्ष्मरा घर को जाता है। चल भटपट ले चल मुभे वहा अक्श को अकुश मे लूगा, जाते ही सीघा चला चक वैरी का मस्तक छेदुगा, बातो-बातो मे पहुच गया वहा पवन-वेग सीघा स्यन्दन, कस-कस तीखे ताने हस-हस ग्रकुश करता है ग्रभिनन्दन।

† रे [!] श्रकुश [!] हो जा श्रव तैयार । सस्मित विस्मित सभी सुन रहे लक्ष्मिएा की ललकार । रे [!] श्रकुश [!] हो जा श्रव तैयार ।

^{*} सहनाणी

[†] लय-जगाया तुमको वितनी बार

185

इतर गयारे! तू धिनमानी सीमा पार हुई खैतानी नहीं क्सेगी धव मनमानी एक बार में ही उतरेगा सारा शिर का मार।

हमने या इतना समस्त्रया वण्या आनं प्यारिक्समाया उसका यह सामार चुकाया वड-वड दोम रहा या सब चझ मेरा एक प्रहार !

यों कह कर में चक्र उठाया मीम गगन में उसे पुमाया मानो सपरादित्य उगाया सर्णाणं मरण्या को ध्वनिता सह उद्धल रहे संगार।

सन्न रह गए दर्शन सारे मर जाएंगे ये श्रेचारे पता नक्यों येगए उमारे क्यों भ्राए हैं इनसे भ्रपना करकाने संहार।

भुमाधुमाकर जोध कगाया मारक्षेत्रु धादेश सगाया स्वरित्तर्जाकृत्गतिकरूपसाया द्याया है सम सहाप्रसद्भा सारे विकासार।

> वन भक्तः धवक्र कररहाः— हैसबुद्धाक्षास्यसम्बद्धान्त्वन देनाः प्रदक्षिणाः वार-वार सद्माणः राधवकावित्रितमन

कर शिथिल हुए, मुह उतर गए, नयनो मे रजनी-सी छाई ग्रव भाग्य पलटने की भाई। यह नई चुनौती-सो ग्राई। क्या वासुदेव दलदेव नए? दोनो ये धरती पर उतरे, क्या ग्रच्छरेग होने वाला? कुछ भी न रहस्य समक्त पाए, रिव होते रिव का उदय हुग्रा? तीर्थंकर रहते तीर्थंकर? ग्रनहोनी यह कैसे होगी? मस्तिष्क खा रहा है चक्कर।

* कर प्रदक्षिणा अकुश की अब पुन आ रहा चलता चक्र , लगा रामलक्ष्मण को ज्यो कल्पान्त काल पवनोद्धत नक। अब यह निश्चित ही आता है करने नर-हिर का सहार , मुखडा कुम्हलाया उत्फुल्ल कमल पर मानो गिरा तुषार। दशक्षर का इसी चक्र ने इसी रीति से किया विनाश , दर्शक जन निस्तब्ध खडे हैं डोल रहा सब का विश्वास। आते ही सन्निकट वीरवर ने दक्षिण कर फैलाया, बैठ गया उसमे रथाग जब, तब कुछ जी मे जी आया।

गीतक छन्द

हैं सुनिश्चित ये हमारे निकट सम्बन्धी सही, अन्यथा चक्राक्रमण यह व्यर्थ यो जाता नही।

^{*} रामायगु

बोहा

भरे । भाग में क्यों मुने । शींच रहे हो बाज्य । भीर व्यक्ति की मत करी जाने दो साम्राज्य ।

 कर कलंकिता उसे राम तो वन में रख माए,
 किन्तु शीम का बस या उसमें महिष्ह सरसाए सहव ही टसी मापदाएं।

उसके नत्यन सपनानस्यन इनको पहिचानो , ह्योड रोप साझ्योध कथन मेरा सच्या मानो ट्रूर हों सारी दुविभाएं। सांच कोल कर अरा प्यान वे एक बार मर्सको इनमें भपना संस सांक सकते हो सो सांकी

मिक क्या ग्रह हम समस्त्रएं।

विभी भाए सो मुन्ते कही मादि । में हू पर का योगी पर सकत तुम्हारे रहे सफस कुछ तो हम् की कार्य होगी । इतना भी क्लिक करन सके जब कहा नहीं क्ला याँ दिना तुम्हारे हुनों के पड़ सकता ऐसे की नम्मा ?

में दशवन सबस सभ्य करने प्रदेशत्व दिखाने द्याण हैं परितान मृत मा प्रतिव्रता~-के तुम्हे बताने द्याण हैं।

नव - नावदा भीमो परम्या रै

† महमारी

मत्पुत्र कभी यो माता का
ग्रपमान नही सह मकते हैं,
पाते ही सचमुच शुभ ग्रवसर
वे मौन नही रह सकते हैं।

गीतक छन्द

सुधा-स्नावी शब्द सुन ये हृदय गद्गद् हो गए, प्रम के अविरल अनन्त अथाह जल मे खो गए। जतर रथ से छोड आयुध, उभय मिलने जा रहे, इधर लवएगाकुश समुद सानन्द, सविनय आ रहे।

- * कुछलिजित से, कुछ सिजित से चरणों में शीश भुकाते हैं, नहलाते लोचन घारा से दोनों को गले लगाते हैं, शरपर रखकर कर बार-बार कोमल तन को सहलाते हैं, शुक्ल-ध्यानी ज्यो एक चित्त उनमें तन्मय हो जाते हैं।
- मं स्नेह-सुधा से सिंचित कर्गा-कर्गा आज अयोध्या का सारा। उमड पड़ी है अविरल गित से पुत्र-प्रेम की उज्ज्वल धारा। स्नेह-सुधा से सिंचित कर्गा-कर्गा आज अयोध्या का सारा। उमड पड़ी है अविरल गित से पितृ-प्रेम की उज्ज्वलधारा। पुत्र पिता से, पिता पुत्र से, परम मुदित मन मिलते है। शिश को देख सिन्धु, रिव-दर्शन से पङ्कज ज्यो खिलते हैं। विनय और वात्सल्य बरसता है भोगी पलको के द्वारा। स्नेह-सुधा से सिंचित कर्गा-कर्गा आज अयोध्या का सारा।

^{*} सहनारगी

[†] लय—प्रभो [।] तुम्हारे पावन पथ पर

या युगल युगपुष्य युग क ग्रमर आवी जाए हैं भन इनके पूर्णंतः साम्प्रत सुर्वाशत प्राए हैं। दाय कोई चल ज पाता नहीं जाए ? क्या करें? समक्र से कुछ नहीं प्राता कहा जाए ? क्या करें?

दोहा

यो दोना का हो रहा धन्तर हुवय प्रधान्त । उसभन म तन मन दबन नेसान्त धान्त विभ्रान्त ।

कान्दिशीक से हो एई किकर्सम्य विमुद्र। पस-पल बढ़ता जा रही व्यथा गूढ़ से गूढ़)

भ्रमानक रुग समा सात ।
 वका रहस्योद्घाटन करने नारदजी माए ।

देश टॉनन भ्रवसर घरती पर उत्तरे भ्रम्बर से बस नभी भाषकी ही भी बोस सब एक स्वर से करपना सागर शहराए।

किया उजित सम्मान सन्त का होता है जैसे दील रहे हैं भाज राम भवनका ऐसे कैसे ? नदन सरसिज क्यों कुम्हलाए।

बोहा

बाबा बुडेहो गा छूना महीं स्वभाव । रे[!] ऋषिका वर्षों कर रहेर्से बावों पर घाव ।

दुत बाह् से हा रहा मन तो अल धुन साव । धीर प्रापका सूमली ऐस समय सजाक।

तक-ताका योगा करावा र

ग्रग्नि-परीक्षा

ग्राए हमको पूछने क्या न देखते ग्राप[?] घरा पराई हो रही प्रतिहत पुण्य-प्रताप।

* नहीं मुक्ते तो एसी स्थितिया देती दिखलाई, यो मत न्याकुल बनो जरा घीरज रक्खों भाई, वैर्य के फल मीठे गाए।

खिलने के अवसर पर क्या कोई यो मुरमाता, मिलने के अवसर पर क्या कोई यो सकुचाता। विकलता तुम जैसे पाए।

दोहा

की सेवा जो भ्राज तक उसका यह परिग्णाम। राज्य पराया हो रहा, कहते ग्रच्छा काम।

होश उड रहे हैं यहा, ग्राप रखाते स्थैर्य। हाय जोडते दूर से धन्य ग्रापका धैर्य?

त्यागी सन्यासी वने करना था परमार्थ। किन्तु ग्राप तो कर रहे, पिशुन नाम को सार्थ।

ऋषि तो भक्तो को परमार्थ-पथ ही दिखलाते,
 पर विरले मर्मज्ञ समभते सन्तो की वाते,
 ग्रगर ग्रन्तर-पट खुल जाए।
 वडा रहस्योद्घाटन करने नारदजी श्राए।

सभी ज्ञान्त हो जाग्रो मेरी सुनो ब्रह्म-वाणी, रामचन्द्रजी के थी मीता नामक महारानी, जगी सब मे जिज्ञासाए।

^{*} लय-तावटा पीमो पटज्या रे

बोहा

घरे! घाय में क्यों मृते! सींच रहे हो घाण्य। भौर व्यक्ति ती मत करो जाने दो साम्राज्य।

* कर कसकिता उसे राम तो वन में रच माए किन्तु शीम का बल या उसमें महिल्ह सरसाए सहस्र ही उसी सापदाए।

उसके नन्दम नयनामन्दन इनको पहिचानो छोड रोप माक्रोस कपन मेरा सच्या मानो

दूर हों सारी दुविचाए। प्रांत कोल कर जदा क्यान दे एक बार क्यांको इसमं घपना प्रंश सांक सकते हो तो मांको स्थापक क्या सब हम समस्प्राएं।

ं जी में भाए सो मूक्ते कड़ी

माई! मैं हू घर का योगी पर सत्त्र तुम्हारे रहे धफल कुछ तो हम् दौड़ाई होगी? इतना भी विम्तन करन छके बब चक मुदर्धन नहीं चमा यों बिमा तुम्हारे पुत्रों के घड सकता ऐते कीन मता?

ये दसबन सबल सम्माकरके घरनत्व दिनाने भाग हैं पनिनाक मुत्र या प्रतिव्रता— ने तुम्हें बनान भाग हैं।

नव---नावड़ा बीमों पड़क्या रै | महनारी

सत्पुत्र कभी यो माता का ग्रपमान नही सह सकते हैं, पाते ही सचमुच शुभ ग्रवसर वे मौन नही रह सकते हैं।

गीतक छन्द

सुधा-स्नावी शब्द सुन ये हृदय गद्गद् हो गए, प्रम के अविरल अनन्त अथाह जल मे खो गए। उतर रथ से छोड आयुध, उभय मिलने जा रहे, इघर लवए। कुश समुद सानन्द, सविनय श्रा रहे।

* कुछलिजित से, कुछ सिज्जित से चरगो में शीश भुकाते हैं, नहलाते लोचन धारा से दोनों को गले लगाते हैं, शरपर रख कर कर बार-बार कोमल तन को सहलाते हैं, शुक्ल-ध्यानी ज्यो एक चित्त उनमें तन्मय हो जाते हैं।

स्नेह-सुधा से सिंचित करा-करा श्राज श्रयोध्या का सारा।
उमड पड़ी है श्रविरल गित से पुत्र-प्रेम की उज्ज्वल धारा।
स्नेह-सुधा से सिंचित करा-करा श्राज श्रयोध्या का सारा।
उमड पड़ी है श्रविरल गित से पितृ-प्रेम की उज्ज्वलधारा।
पुत्र पिता से, पिता पुत्र से, परम मुदित मन मिलते हैं।
शिश को देख सिन्धु, रिव-दर्शन से पद्भज ज्यो खिलते हैं।
विनय श्रीर वात्सल्य बरसता है भोगी पलको के द्वारा।
स्नेह-सुधा से सिंचित करा-करा श्राज श्रयोध्या का सारा।

^{*} सहनाएी

[†] लय-प्रभो [।] तुम्हारे पावन पथ पर

१४६ श्रीच-गरीमा रए: भी कारए: बना हुए का गोरव से मन कुन रहें। प्रकुश के उस धीवनम को प्रावन्तित लक्ष्मए! पूस रहें।

मूल रहे हैं मुख सरवर में द्वस्य तगरहा प्यायन्याय। स्तेह-मुमासे सिधित करण-करण भाव भयोच्याका सारा। पुत्र पिता से बदकर क्या? सम्बन्ध दूसरा होताहै?

यदि स्वामों की पड़े न झामा चढ़े न पदापात का पास । स्नेह-सुमा से सिपित करण-करण श्राज समोम्या का सास । सक-कुरा के विनयी विजयी हैं कितने साज सुपूत कही? कितने मर हैं प्राज स्वर्ग से जहां पूत्र उस्सूत न ही?

भीर पिता भी कहां राम का विक्रमाएं मादर्श उजारा ?

पुत्र पिता से बहकर क्या? धनुसम्ब दूसरा होता है?

स्तेह-मुखा से विधित करा-करा आब प्रयोग्या का सारा ।
एक पूर्वरे को प्रतिमित्र से प्रतिमित्र हण्ट्या निरक्त रहे ।
एक पूर्वरे के भागों को मातुक का कर परक्ष रहे ।
याना वातावरस्य समूचा व्यक्त रहुन्त मुम्य सिद्धारा ।
स्तेह-मूचा सं सिर्विण करा-करा साथ प्रयोग्या का सारा ।

y .

बोहा पा अगपनि की प्रेरणा यद्मश्रंप-मस्कार।

कार-कार करने सब राम व्यक्त प्रामार। प्राप हमार गरमप्रिय भागीतन के तुल्य।

चुनासक्या में नहीं इस उपक्रित का मूल्य। .

सोरटा

तरभाग ७८ विमान मिसन रार कर मीपला । परुष गर्रे स्वस्थान ह्योग्युपि में माननी । ग्रपने पुत्रो को लेकर पुर मे राम ग्रा रहे। हृदय सब के हर्षा रहे, परम ग्रानन्द मना रहे।

> सिंजित है नगरी सारी, सोत्सुक है सब नर-नारी, हो हो उद्ग्रीव पथ पर पलक विछा रहे।

> दर्शक श्रागे से श्रागे, जाते हैं भागे-भागे, ग्रनुशासन के नियमों को श्रटल निभा रहे।

पथ की है उचित व्यवस्था,
गित-विविया सारी स्वस्था,
जय-जय घ्विन से धरगी ग्रम्बर गुजा रहे।

राघव सौभागी कैसे?

घर ग्राए नन्दन ऐसे।

यो जन-जन मुक्त कण्ठ से महिमा गा रहे।

दशरथ सुत प्रमुदित ग्रानन,

बरसाते जलघर बन घन,

सबको कर तुष्ट पुष्ट उत्साह बढा रहे।

ां उने छज्जो पर, छत पर हैं
समवेत नगर की महिलाए,
उस समय उन्हें कुछ पता नही
रह गए कहा शिशु-वालाए,
सुध-बुध भूली सबकी पलकें
थी लवगाकुश पर विछी हुई,

^{*} लय—यह है जगने की वेला † सहनाएों

प्रमित-परीक्षा

प्रांचों के प्रांगे ताथ रहींछवि बिना यत्र के कियों हुई।

स्वका प्रमित्रादन ग्रेस रहे

प्रविचन समुदित सुकुमार युगल

प्रतिपत्त विकसित मानस स्वतदल

हुपीतिरेक से रहे उछम

हैं सफल सुफल सक प्रांगाए

प्रानन्दास्तावित पन्ततल

उस्लिसित बायुमण्डल सारा

पन-पन जय-जय मगल-मंगल।

ः ७ : ऋग्नि-परीक्षा

भांको के प्राये नाल रहीप्रवि विना यत्र के खियो हुई।

सक्ता प्रमित्राधम स्टेंस रहे

स्वित्रम समुदित सुकुमार मुगम

प्रतिपक्त विकस्तित मामस ध्रत्यल
हुर्यातिरेक से रहे उन्हम

हुँ सफल सुफ्रम सम्र प्राणाए

प्रानन्दाप्लावित प्रन्तस्तल

रस्तिति वामुमण्डम सारा

पन-नग जय-जय मगल-मगम।

O

गीतक-छन्द

समय वर मध्याह्न का रिव मध्य है स्राकाश मे, शिखर पर पहुचा यथा यौवन प्रपूर्ण प्रकाश मे। क्षेत्र छाया का सुविस्तृत हो रहा सिक्षप्त है, त्याग से अविरति घटाता श्राद्ध ज्यो निलिप्त है। श्रमिक सारे श्रम-परायण कार्य मे रत हो गए, यथा सज्जन जन सहर्ष परोपकृति मे खो गए। गृहििएाया गृह-कार्य निरता, छात्र शिक्षरण मे लगे, यथा योगी-चेतना हो स्वात्म वीक्षरा मे लगे। कर रहे हैं श्राद्ध सामायिक श्रमण-सम्पासना, सून रहे उपदेश मुनियो का मिटाने वासना। श्रालसी खा-पी खुशी से तान खुटो सो रहे, व्यर्थ बातो मे कई ग्रनमोल ग्रवसर खो रहे।

दोहा

शान्त मना एकान्त मे बैठे हैं श्रीराम।
भोजन से विनिवृत्त हो करने को विश्राम।
सौमित्री, शत्रुघ्न त्यो, पवनपुत्र, सुग्रीव।
लकापति, ग्रगद प्रमुख श्राए मिल उद्ग्रीव।
कर स्वीकृत श्रवधेश ने सबका सविधि प्रणाम।
ग्राए कैसे इस समय १ पूछा क्या है काम १
प्रतिनिधित्व करते हुए बोले लक्ष्मण ग्रायं।
ग्राज एक ग्रभ्यर्थना श्रावश्यक ग्रनिवार्य।



च्या का च्याच्या रीत क्या है कालाई . किया का बीचा कर केवल गुर्छ अला है के हर म क्षेत्रक है की रेक्टर है the state were the stay of the the state of the state of the स्या सहस्य प्रमान्त्रीय है । सं क् न्द्रित्तं सुकार्वे स्टब्स् श्रांत स्थापकार्यः। के देनीकेंग्रें के स्थाप क्षेत्रण के स्थ 幸事事を受けれる。

ĮźĄ	र्मा ल-प रीका					
	• बद मो हो जरा विचार विद्व ग्रामार, राम के द्वारा ! सीता का कौन सहारा?					
	पित-पुत्र विरह की जो तीक्षी ग्रविकारा। ग्रीता का कौन सहारा? प्रमुको ऐसे यंदुत्र मिले कुस-सम्बर्धन केसूत्र मिले					
	सोचें यह किसका छक्त उपक्रम सारा।					
	कह कपकिता वन में खोड़ा बेचारी की तुरा वर्धी तोड़ा,					
	कर भाषणुतम भपमान उसे दुरकारा।					
	पुत्रों से समय विताती वी ज्यों-स्यों करमक्त समझाती वी					
	ये भीन वहां धव कहो रहा क्या वारा?					
	उसका भी तो कुछ वीवन है					
	रघुकुम काओ संजीवन है					
	इस मोरनिसी ने भव तक नहीं निहासा।					
	र्मो कोवन कितना दुर्मर है यस-यस पस्योपम सागर है					
कसने जोवन से वह नांकही किनाय।						
	माजा हो तो सिसकर जाएं,					
	भन वसम्मान हम से माएँ					
	षाचा है प्रमु मानेंगे विनय हमाधा <i>।</i>					
	म त्रमा है वातावरण सभी					
	मण्या घवसर यह प्रमो ! भनी					

मुक्रपु निमिक्कि है पर्योक्त इसारा।

सब-दे नदुष एक वहारा

गीतक-छन्द

पहुत श्रच्छो मत्रणा दी समय पर श्राकर मुक्ते, हो गया विश्वास, विजयी-पुत्र दो पाकर मुक्ते। शीघ्र जास्रो, मना लाश्रो, है सती सोता सही, कहे कुछ भी लोक, मानूगा न श्रव मैं एक ही।

दोहा

सत्वर पुष्पक-यान ले चले कपीश्वर स्रार्य।
पुतला स्राहारक का यथा करने श्रपना कार्य।
पुडरीकपुर मे पहुच वैदेही के पास।
बद्धाञ्जलि श्रनुनय-विनय करते हैं सोल्लास।

महासती । ग्रब हम पर महर करे,
 चले ग्रयोध्या रघुवर श्रन्तर क्लेश हरे।

कुल कमले [।] कमनीय कले [।] श्रमले [।] श्रचले [।] सन्नारी [।] सहज सुव्रते [।] सौम्य सुशीले [।] श्रननुमेय श्रविकारी । होगे हम सब श्राभारी , शुभ-दर्शन दे सरस सौख्य वितरे ।

भेजा पुष्पक यान राम ने ससम्मान ले श्राने, श्राया मैं उनसे ही प्रेषित विधिवत् श्राज बुलाने, यह विनय दास की माने, वदन-सोम से स्वीकृति-सुधा भरें।

हुआ श्रापके पुण्योदय से परम हर्ष घर-घरमे, बढी सौगुनी माता की शोभा साकेत नगर मे, पर पीडा प्रभु के स्वर मे, रत्न-प्रसूते । श्रपना स्थान वरें।

[•] लय-जय जय जगमग विद्या ज्योति जरे

(X=

जोवन मर मैं साथ रही

फिर भी पाए पिह्नान महीं

कहमाते हो धन्तर्यामी

फिर प्रम में भूते हो स्वामी!

थीं कितनी विषयाएं फेसी,

मैं तो प्राएगें पर पी खेसी

रही प्रतिपत्त प्रशुपद धनगामी

फिर प्रम में भूते हो स्वामी!

धपने तन-मन को टटोती

मेरी धीगण सत्य बोती।

गा देखी मेरे में सामी

फिर प्रम में भूते हो स्वामी!

इस प्रवक्षा हो स्वामी!

इस प्रवक्षा है प्रकार किया

फिर प्रम में भूते हो स्वामी!

इस प्रवक्षा है प्रकार किया

फिर प्रम का वदमा हाय! सिमा

हित कामी बन मों प्रतिगामी किस ध्रम में मूले हो स्वामी। नहीं, नहीं मेरे मन में तो सका श्रीसा कीई तरव दिवते। सप्रतिहत धास्था है मानों ज्यो क्षायक सन्यक्त । अड-जन का उमाद मिटाने सक्युक यही ध्यकुक दवा

सकत परीक्षण हो जाने से हो जाएगी गुट हवा। बोहा

विनेते ! युरा म मानमा भाषाय मेरा न्यव्ट । शमतशामगा मि पिविम कर्च हुमा अ। क्ष्ण । प्रमृदित मना मनस्विनी जोमी गिरा गम्भीत । तब नहीं जिननी करी कर्न परीक्षा भीत । राज्यका * कहो ज्यो दिखलाऊ, मेरा श्रटल सतीत्व। कहो ज्यो वतलाऊ, मेरा ग्रडिंग सतीत्व।

पावक की ज्वाला फेलू, या पन्नग से भी मैं खेलू, ग्रत्युष्ण कोश भी पी जाऊ, मेरा ग्रटल सतीत्व।

उत्तप्त उठाऊ गोला, खाल मैं जलता-शोला, मैं रिक्त तुला पर तुल जाऊ, मेरा ग्रटल सतीत्व।

ग्रम्बर मे ग्रधर रहू मैं, ग्रातप ग्रत्युग्र सहू मैं, जल में स्थल, स्थल में जल लाऊ, मेरा ग्रटल सतीत्व।

दोहा

श्रन्तिम निर्ण्य में हुश्रा निञ्चित श्रिन-स्नान सत्वर सब होने लगा एकत्रित सामान श्रित विशाल समतल घरा, देख एक उपयुक्त। स्थान परीक्षा का वही माना सबने युक्त।

चुदवाई मध्योमध्य एक गहरी लम्बी चौडी खाई, जिससे समुपस्थित जनता को वह दृश्य देसके दिखलाई, खैरों के लक्कड चीर-चोर श्राद्यन्य उसे भरवा डालो,

[‡] लय-दीपावा ले नन्द

^{*} सहनाएी

बोहा

किपिति मैं भूमी नहीं वह शोयल कातार।
महीं भीर घव चाहिए स्वामी का सरकार।
हाप जोड़ती दूर से उनको मैं महाराज।
क्या करना घव शेप है बुना रहे जो भाव।
हां रह रह उठता मनसि एक घवस्य विचार।
जसें-स्यों उतरे सोशा से यह सोझन का भार।
नहीं चाहती हूं मक मैं यह लिए कमक।
कह से जा उनसे यही मेरी वाल निर्मण।
यदि करवाए निकय तो मैं भाने तैमार।
को भी वे भावेश हें है सहर्य स्वोकार।

गीतक सम्ब

भा कपीहचर ने सुनाया महीं भाती बानकी हैन उसको पिर धरेला धार्म के सम्मान की। नहीं होना जा धर्मोच्या घड धरिक बदनाम हैं स्पष्ट कहती राम से मेरे न कोई काम है। राम की बो बो बरोहर सौंच वी वह राम को बुला पठिता को कर्जीकत कर रहे क्यों नाम को। हों क्सोंच उतारने बच कहें घाउंनी वहां। बो कहेंसे दे परीक्षा मैं दिलाउंनी बहां।

मह सुनवे ही रामय के बेहरे पर धाई बमक नई गोमोदगम-सा हुमा युगम पक्कें तत्त्रसम् समझाना गई। है सीवा में इतनी इड़ता है सतीत्व पर इतना बीस मटम मारम-विकास सबम बतनाता ससका ठायी। शोघ्र उसे ले ग्राग्रो, दिखलाए जनता को सही स्वरूप, होगी उचित व्यवस्थाए, सारी उसके मन के अनुरूप। मैं सहर्प सहमत हू, सीता ग्राकर ग्रग्नि-परीक्षा दे, गौरव वढा सूर्य-कुल का, इस जड जनता को शिक्षा दे।

दोहा

किष्किन्घाघिप ने दिया, जा सुखकर सवाद। वैदेही के हृदय मे उमड पडा ग्राल्हाद। तत्क्षण वैठ विमान मे पहुच गई साकेत। किकी महेन्द्रोद्यान मे हुए सभी समवेत। लक्ष्मण शश्रुघ्न ग्रादि ने किया चरण सस्पर्श। ग्रव राघव से चल रहा गुप्त विचार-विमर्ष।

* मै लिज्जित हू सोता । जो कुछ अनहोनी यह वात हुई , अपने दृढ सम्बन्धो की हा । अकस्मात् ही घात हुई । धन्य-धन्य है तेरा साहस, धन्य-धन्य है सबल सतीत्व , दिखा रहा साक्षात युगल पुत्रो का शौर्य भरा व्यक्तित्व। उस पर भी यह अग्नि-परीक्षा देने का जो दृढ सकल्प ,

उस पर मा यह आर्नान्यराक्षा प्राचित जा हुढ सकल्प, दिखलाता साकार सत्य-बल और शील का श्रोज ग्रनल्प। किन्तु तोल लेना ग्रपने को श्रति दारुण दुष्कर है काम, हो न कही परिगाम चिलत, यो घीमे स्वर से बोले राम।

† किस भ्रम में भूले हो स्वामी। मर्यादा पुरुषोत्तम नामी, किस भ्रम में भूले हो स्वामी।

रामायएा
 लय — प्रमु वासुपूज्य भजले प्राएा।

भोषन भर मैं साब रही
फिर भी पाए पहिचान महीं
कहमाते हो पन्तवामी!
फिर प्रमाने मुसे हो स्वामी!
पी कितमी विपदाएं मेली,
मैं दो प्राएगें पर भी केमी
रही प्रतिपक्ष प्रमुपद धनगामी।
किस प्रमामें मुखे हो स्वामी।
धपने तन-मन को टंटोसो
मेरी मौगाष्ट्र सर्थ कोती

दक्ति-वरीका

इस भवसा से भाकोश किया किस भव का बदमा हाय! निया हित कामी बन मों प्रतिगामी किस भ्रम में भूते हो स्वामी!

क्या देवती भेरे में क्षामी किस भ्रम में भूमे हो स्वामी!

नहीं, नहीं भेरै मन में तो खका असा कोई तत्त्व दिन्छे ! समितहत भास्या है मानों ज्यों सायक सम्प्रस्त्व । अक्-अरुका का उमाद मिटाने सप्यमुख्य मही अपूक्त दया सफल परीक्षण, हो जाने से हो आरएनी पुढ हवा ।

बोहा

विति ! दुरा ग सालगा प्राराथ मेरा स्पष्ट । क्षमतस्त्रामणा वि विविध वस्त्रं हुमा को कष्ट । प्रमुदित मला मलस्विमी कोली गिरा गम्भीर । एक नहीँ वितमी कहो कर्द परीक्षा चीर । एकाव्यं * कहो ज्यो दिखलाऊ, मेरा श्रटल सतीत्व। कहो ज्यो वतलाऊ, मेरा श्रिडग सतीत्व।

पावक की ज्वाला भेल्, या पन्नग से भी मैं खेलू, यत्युष्ण कोश भी पी जाऊ, मेरा श्रटल सतीत्व।

उत्तप्त उठाऊ गोला, स्राल में जलता-शोला, में रिक्त तुला पर तुल जाऊ, मेरा ग्रटल सतीत्व।

ग्रम्बर मे ग्रधर रहू मै, ग्रातप ग्रत्युग्र सहू मैं, जल मे स्थल, स्थल मे जल लाऊ, मेरा ग्रटल सतीत्व।

दोहा

श्रन्तिम निर्ण्य में हुश्रा निश्चित श्रिन-स्नान सत्वर सव होने लगा एकत्रित मामान श्रित विशाल समतल घरा, देख एक उपयुक्त। स्थान परीक्षा का वही माना सबने युक्त।

; खुदवाई मध्योमध्य एक गहरी लम्बी चौडी खाई, जिससे समुपस्थित जनता को बह हश्य दे सके दिखलाई, खैरों के लक्कड चीर-चोर ग्राद्य- उसे भरवा डालो,

[‡] लय--दीपावा ले नन्द

^{*} सहनाएी

आज्यस्यमान बैरवानर से त प्रज्यमित उसे करवा आली!

वोहा

समुपस्यिति यनिवार्य है प्रातः सबकी मत्र। उद्योगित यह भोषणा यत्र तत्र सर्वत्र।

 भीर क्षितिज की खाती मास्कर नम प्रांगण में भइता है।
 धुनि ज्यों बन्धन-धुक्त साधना-पन पर धाने बड़ता है।
 धस्एा धस्एाई धस्ए स्पोम है घस्ए सिन्स है, घस्ए पर तस्स् धरएता निए प्योतिमय स्प मैपिसी का निकरा।

ग्रम्बर से प्रम्बर मिए की नव किरएों भूपर उत्तर रहीं। ग्रामिन-कुष्य की ज्वासाएं, ग्रम्बर कुने को उत्तर रहीं। रवि किरएों की ज्वासाओं की फैन रही है प्रकर प्रमा है विशास उस जन-समूह के ग्रामम पर ग्रस्थुय विभा।

गीतक द्वस्य

विषर देखो उघर मातव मेदिनी समवेत है उघर सूना-सा समुचा हो रहा साकेत है। भोड़ पाराबार की ज्यों उमझती ही का रही हा दबा सम्पास है--म्बर्गि एक ही दस सा रही।

कौन कहना रे ! घमाणा सती है ना जामकी स्पष्ट देवी कप को प्रतिमृति-सी मगदान की। चमजमाना प्राप्त इसका स्वयं साक्षी सरथ का साग म मों हाम देना काम है क्या सम्य का। * हाय । राम इस सीता को जीती न देखना चाहते। वन मे नही मरी तो श्रव पावक मे इसे जलाते।

कैंसे ये पापाएं हृदय है करुएा जरा न त्राती, क्या त्रपनी ग्रघींगिनी ग्रवला ऐसे मारी जाती? नहीं मानते कहीं सुनी मनमानी सदा चलाते। हाय! राम इस सीता को जीती न देखना चाहते।

कितने गए जिप्टमडल, कर अनुनय-विनय मनाने, किन्तु एक की भी न चली यह क्या सूभी, क्या जाने? लव्यप्रतिष्ठ सभी हारे हैं समभाते-समभाते। हाय! राम इस सीता को जीती न देखना चाहते।

जब से इस घर मे ग्राई इसने दुख ही दुख देखा, पता नही बेचारी के कैसी कर्मों की रेखा? कौन करे क्या। जब रक्षक ही यो। भक्षक बन जाते। हाय। राम इस सीता को जीती न देखना चाहते।

हरा दिया राघव-लक्ष्मरा को, इसके नन्दन ऐसे , वीर-प्रसूता वह हो सकती है कलिकता कैसे ? लेना श्रन्त किसी का श्रनुचित नीतिकार वतलाते। हाय । राम इस सीता को जीती न देखना चाहते।

यह सप्ताचि सर्वाशी पलभर मे भस्म करेगी, सुकुमाला बाला गुए। माला हा । बेमोत मरेगी, देख-देख इसकी ग्राकृति सबके अन्तर श्रकुलाते। हाय । राम इस सीता को जीती न देखना चाहते।

^{*} लय-हाय राम इरा मिनखा देही स्यू

खाती पर रक्ष हाथ स्वयं की करते क्यों न समीका, क्या सीला की सरह राम दे देंगे क्रांकिन-परीका? समसे कौन रहस्य? हो रही सरह-तरह की बाउँ। हाय! राम इस सीता को जीती न देखना चाहते।

वोहा

यान्ये समुचित रूप से बड़े-बड़े मंचान। बैठे वर्णक कर सभी प्रपने प्रपने स्थान।

उच्च मंच से कर रहे थी राघव उद्घोष। हो जायो सामोक्ष सव हो जायो सामासः।

सुनो-मुनो साकेतवासियों! सौसा भौमें दिखाएगी।
 सूर्यवंश की विश्वय-पताका भूतस पर महराएगी।

बिना हुताशन-स्नान किये होता धोने का तोल नहीं नहीं बाग्रा पर बहुता सब तक हीरेका कछ मोल नहीं कड़ी कसोटी पर कस धपनी प्रमिनव ज्योति खगाएगी। सुर्यवस्य की विकय-स्ताका भूतल पर कहराएगी।

वेवेही के पाषिक तम पर धाषिक मोह धमुद्राग म हो नहीं निकर सकता स्वक्तित्व स्वय ना कव दक त्याग न हो सरय-मील-कस से जीवन-मांग्दर पर कसल पढ़ाएगी। सूर्यवेष नी विकय-मताना मृतम पर सहराएगी।

पुरेषण का विश्वयन्यताना भूतन पर नहराएगा।
मुर्ने स्थान से बनक-मुता धव को सपने उद्गार कहें
महीं बाक भी बोका होगा सारी बनता धान्त रहे भटक भारत विश्वयन पूर्णत स्त्री सफ्ता पान्त रहे भटक भारत विश्वयन्यताका भूतक पर महराएगी।

सय-पात्र दिनासय भी भोटी है

* उज्ज्वल मजुल परिधान लिए ज्यो ही वैदेही हुई खडी, शारद शशघर की सी किरएो मानो । मुखडे पर फूट पडी, सौगुना रूप तव चमक उठा तेजोमय भव्य ललाट छटा, निकला हो मानो तिग्म-भान् कर नितर-वितर घनघोर घटा। सबकी ग्राखे हैं उसी ग्रोर वे सकरुए। भाव विभोर सभी . मानो राकेश्वर-दर्शन को उत्सुक हैं चतुर चकोर सभी, है सहज शान्त ग्रति सीम्याकृति धृति भलक रही है, दुलक रही, किचित्भी भयका काम नही वह पुलक रही है, मुलक रही।

दोहा

ब्रह्मचयं के तेज से हैं करा-करा उद्दीप्त। भाव-भरेस्वर में दिया सभाषरा सक्षिप्त।।

† जीवन की यह स्वर्गिम वेला मेरे श्रग्नि-स्नान की। विलदानो से रक्षा होगी नारी के सम्मान की। वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।

जागृत महिला का महत्त्व इस महि-मडल पर ग्रमर रहा, जिसने प्राण-प्रहारी सकट, प्रण को रखने सदा सहा,

^{*} सहनाएी

[†] लय-ग्राम्रो बच्चो तुम्हें दिखाए भाको हिन्दुस्तानी की

क्षाती पर रख हाय स्वय की करते क्यों म समीक्षा, क्या सीता की तरह राम दे देंगे प्रनिन्मरीका? समके कौन रहस्य? हो रही तरह-तरह की कार्से। हाय! राम इस सीता को जीती न देकमा चाहते।

बोहा

बान्धे समुचित रूप से सड़े-यडे मंचान। बैठे दर्सक बन सभी धपने-धपने स्थान।

उच्च मंच से कर रहे श्री रावव उद्वोप । हो जाझो कामोश सब हो जाझो कामाश ।

मुनो-सुनो साकेतवासियों । सोता शौर्य दिकाएगी । सूर्यवस की विजय-पताका भूतक पर सहराएगी।

विना हुवायन-स्नान किये होता सोने का ठोल नहीं महीं धाए। पर बढ़वा सब ठक ही रेका कछ मोल नहीं कड़ी कसोटी पर कस सपनी समिनव क्योवि जनाएगी। पूर्वबंध की विवय-अताका स्रुवल पर सहराएगी।

बैदेही के पाधिव सन पर धिक मोह धनुराग न हो महीं निकर सकता स्पक्तित्व स्वय का बाव दक स्याग न हो सरम-दील-वन से जीवन-मण्टिर पर कमश बढ़ाएगी। सूर्यक्श की विजय-पताका भूतक पर सहराएगी।

मुने प्यान से जनक-मुता धव वो अपने उद्गार कहें महीं बान भी बांचा होगा सारी जनता खान्त रहें प्रदेश धारम विस्वास पूर्णत सती सकता पाएगी मूर्येवस की विवय-मताका मूत्रम पर नहराएगी।

भय-पाव दिनासम की चोटी है

* उज्ज्वल मजुल परिघान लिए ज्यो हो वैदेही हुई खडी, शारद शशघर की सी किरणे मानो । मुखडे पर फूट पडी, सौगुना रूप तव चमक उठा तेजोमय भव्य ललाट छटा, निकला हो मानो तिग्म-भान् कर तितर-वितर घनघोर घटा। सवकी श्राखे हैं उसी श्रोर वे सकरुए भाव विभोर सभी . मानो राकेश्वर-दर्शन को उत्सुक हैं चतुर चकोर सभी, है सहज शान्त ग्रति सौम्याकृति धृति भलक रही है, दुलक रही, किंचित्भी भयकाकाम नही वह पुलक रही है, मुलक रही।

दोहा

ब्रह्मचयं के तेज से है करा-करा उद्दीप्त। भाव-भरेस्वर मे दिया सभाषरा सक्षिप्त।।

† जीवन की यह स्वरिंगम वेला मेरे अग्नि-स्नान की। विलदानो से रक्षा होगी नारी के सम्मान की। वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।

जागृत महिला का महत्त्व इस महि-मडल पर ग्रमर रहा, जिसने प्राण-प्रहारी सकट, प्रण को रखने सदा सहा,

^{*} सहनाएगी

[†] लय - भ्राभो वच्चों तुम्हें दिखाए भाकी हिन्द्स्तानी की

24

इतनी कठिन परोक्षा देते किंचित् नहीं विपाद है

वसिदानों से रक्षा होगी नारी के सम्मान की। मैंने स्वीक्त किया पतिवृत अपना धर्म निभाने को धन्तः-स्फुराणा से इस मानवता का मान बढ़ाने को मारतीय संस्कृति का गौरयमय इतिहास रहाने को प्रपने उत्तम सावकरव पर सभिनव अभक बढ़ाने को साक्षी है मेरे मन की त्रिम्रवन भास्कर भगवान की ह बिनदार्गों से रक्षा होगी नारी के सम्मान की।

कड़ी जुड़ेगी उसमें मेरे इस उत्मत ममियान की।

प्रकि-यरीसा उसके महावा उक्काल प्रविरत प्रविकल प्रविश्व स्रोत वहा , दिससाया है हृदय सोलकर समय-समय बीरत्व महा

सरम रापच से कहती मन में श्रपरिमेय शास्त्राद है भिर भावाक्षित सफल हो रहा मेरा भन्तर नाद है धुस जायेगा सहज सदा को भूठा जन-प्रपवाद है यों कह हुद सकस्य सनाती उच्च स्वर से जानकी ! विभिदानों से क्या होगी मारी के सम्मान की।

 रवि चन्द्र विद्याए, सोक्पास घरणी घम्बर, घगरिगत तारे सर्वेष्ठ स्वर्धेदर्शी घनस्त भगवन्त सिद्ध साक्षी सारे मन से काएगी से काया से सावे-जगते श्रीराम स्रोड की नहीं विसी की भावांका मैंने बैनारिन इष्टि बोट।

दोहा

में सच्ची हू तो बने, पावक निश्चित नोर।

फिगिति जलादे ग्रन्थया मेरा मृदुल गरीर।

इघर उठ रही होलिया, हुई वोलिया वन्द।
चित्राकित से हो रहे, सब नीरव निन्पन्द।

मगल लोकोत्तम शरण, विघ्नहरण है चार।

ग्रहंदतन्, मुनि, धमं को रटती वार-वार।

नमोवकार वर मन्त्र जप करके हृदय विशाल।

जलती ज्वाला कुण्ड मे कूद पडी तत्काल।

सवने देखा स्मितमना ग्रटल सतीत्व प्रभाव।

हुग्रा हुताशन स्थान मे लहराता तालाव।

* देखो पावक पानी-पानी, वह श्रिन-परीक्षा अटल वनी। सीता सतीत्व की महनागी, देखो पावक पानी-पानी।

सरवर हो रहा तरगाकुल, खिल रहे कमल उत्पल शतदल, भीनी-भीनी-सी मधुर-मधुर, नीलाम्बर में उडती परिमल, वैदेही के यश ज्यो उज्ज्वल कीडा करता हसो का दल, रह-रह श्राता शीतल समीर, लहराता जिससे ऊर्मिल जल।

^{*} सहनागी

१६६ योज-मरीजा मानो सहरूँ उठ-उठ सहर्य

मिशा-महित स्वरिंगम सिहासन

कर रही सती की धगवानी। देखों पावक पानी-पानी।

कर रहा सूर्य-सां उद्गासन है समाधीन उस पर सीवा सुक्ष पूर्वक साथे पद्मासन मानो मराम पर सरस्वती उत्पन्न पर कममा कलावती। सद्कालोपरि सम्पन्-सद्धा रुखें हुई सुधोमिन महास्ती। पल में कैशा प्रसटा पासा इसकी खोजे समुसन्मानी।

सुन्द

देखी ! पादक पानी-पानी।

भारम-श्रम्ति का स्रोत जिमर भी बहु श्वसता है।
उघर निरस्तर हरा भारा उपकन हिससा है।
प्रारम-श्रम्ति का स्रोत जिमर भी वह श्वसता है।
स्रोत किना परभार की भीरे बहु न छकेगा
स्रोत मार्ग की वामार्थों को छहु न छकेगा।
स्रोत कभी भी मीन भारकर रहु न छकेगा।
स्रपनी मन्तर-साछी पूरी बहु न सकेगा।

इसमें भीभनन निमंत्रता है उर्धिमतता है। भारम-दानित ना सांत निभार भी वह जमता है। दुरकर मति दुरकर है उसे अमाहित करना मुनिमाओं को स्थाग भीनता होता मरना। ध्येय-ध्यान एकत्व लिए इसमे सचरना, विपदाग्रो से नहीं, सुखो से पडता डरना। वहीं घन्य जो रखता इसकी ग्रविकलता है, ग्रात्म-शक्ति का स्रोत जिघर भी वह चलता है।

जिसने ब्रह्म पा लिया उसने सब कुछ पाया, त्विरित ग्रसम्भव को भी सम्भव कर दिखलाया। शूली को सिंहासन, ग्रहि को हार बनाया, वज्ज-कपाटो को पल भर में नोड गिराया। तत्क्षरण ही सहकार बिना बोये फलता है, ग्रात्म-शक्ति का स्रोत जिधर भी बह चलता है।

कच्चे घागे से छलनी में नीर निकाला, बना स्वत पीयूष, प्राराहारी विष प्याला। लाघ न पाया रेख मृगाधिप भी मतवाला, जजीरो का बन्द खुल गया, दूटा ताला। बिना स्नेह बाती के दीपक भी जलता है, श्रात्म-शक्ति का स्रोत जिधर भी बह चलता है।

खीच-खीच कर हारे चीर न गए उतारे, लगे किसी को और किसी के कौडे मारे। घोर ग्रमा मे भी दिखलाए चाद ग्रौ' तारे, तो यह पावक-पानी हो क्या हश्य नया रे! वहीं सफल हो सकता जिसमे श्रविचलता है, ग्रात्म-शक्ति का स्रोत जिधर भी वह चलता है।

दोहा

त्राखे पथराई रही, देख शील साकार। जन-सागर मे उमड कर ग्राया मानो ज्वार। मानो भहरें चठ-चठ सहर्ष कर रही सती की मगदानी।

ग्रमि-परीक्षा

कर रही सतीकी भगवानी। देखो पावक पानी-पानी।

मिए-मिंबत स्विष्णिम विश्वासन कर रहा सूर्यं-सा उद्गासन है समारीन उस पर सीता सुद्ध पूर्वक साथे पद्मासन मानो मराम पर सरस्वती उत्पल पर कमला कनावती।

> सद्कामोपरि सम्यग्-अद्धा र्थों हुई सुधोमित महासती। पन में कैसा पत्रदा पासा

इसको खोचे मनुसमागीः देको ! पावक पानी-पानीः।

भारम-शक्ति का स्रोत जिल्हा भी बह वसता है।

सुन्द भारम-शक्तिकासी अक्र वसराहै

जबर निरन्तर हरा-मरा उपवन वित्तसता है। भारम-शनितका स्रोत जिम्मर भी वह जनता है। स्रोत विका परकर को भीरे वह न सकेगा

ओंड मार्ग की बाषाभी को सह म सकेगा। स्रोत कभी भीमीन घारकर रहन सकेगा भपनी भन्तर-वाशी पूरी कह न सकेगा इसमें भमिनव निमलता है कर्मिमता है।

दुष्कर मति दुष्कर है उसे प्रवाहित करणा सुविभामों को त्याग सेसना होता सरमा। घघक रही थी घाय घाय जो साय साय कर जलती थी, गगन चुम्बिनी भीषण लपटें कोसो दूर उछलती थी, सोता के पावन सतीत्व से ग्रग्नि हुई पानी-पानी। सुनो जहा ही गूज रही है महासती की ग्रमर कहानी।

खोडो बात ग्राज की, याद करो वह दृश्य स्वयवर का, वज्रावर्त धनुष चढाते क्या साहस था रघुवर का? सीता के पावन सतीत्व से फली कामना मन-मानी। सुनो जहा ही गूज रही है महासती की ग्रमर कहानी। भुल गए क्या ग्राजनेय ने ग्रतल महार्गाव पार किया,

नाग-पाश को तोडा कैंसा रावएा का सत्कार किया ? सीता के पावन सतीत्व से लाया भूषएा सहनाएी। सुनो जहा ही गूंज रही है महासती की ग्रमर कहानी। ग्ररे ! सुना क्या कभी श्रमोघ शक्ति ऐसे बेकार गई, लक्ष्मएा ने नव सजीवन पा, सस्थापित की ख्यात नई, सीता के पावन सतीत्व से मारा रावएा ग्रभिमानी। सुनो जहा ही गूज रही है महासती की श्रमर कहानी।

सिंहनाद उस महारण्य में जीने की भी क्या ग्राशा? टूट चुकी थी राघव को तो मिलने की भी श्रभिलाषा, सीता के पावन सतीत्व से प्रकटो परम पुण्यवानी। सुनो जहा ही गूज रही है महासती की ग्रमर कहानी।

* इतने मे ही बढा अनुश्रुत शान्त सिलल का भीषण वेग, बहने सब मचान लगे फैला जनता में अति उद्देग। त्राहि-त्राहि यच गई क्षराो मे आकुल-व्याकुल हुए सभी, अरे! हुआ क्या ? अरे! हुआ क्या ? हो जाएगा प्रलय अभी।

^{*} रामायरा

करतम स्वनियों से ध्वनित भू-नम एकाकार । अन-समूह में हा रहा मुझ-मुझ जय-व्यकार । करा-करा में पौक्य जगा हुई पुष्प बौद्धार । नमस्कार करत सभी भूक मुक सारस्वार । उठे मुनस्का वाद्य सब गीतों के स्वर-तार ।

242

प्रगटे सत्य सतीत्व पर श्रद्धा के संस्कार। सपने सपने कर रहेसभी स्थक्त उद्गार। * मन्य हैं महासती! महाभाग! सुम्हारी बलिहारी आर्प!

मानव-मन उत्साहका कोई भारन पार!

ध्यमिन-परीका

वितहारी जाएं शीत की महिमा महकाएं बहुतों को हो मिल बाता है मानव का घाकार किन्तु निकासा घरे! मानितो! तू ने सच्चा सार है स्वार समुद्रा कार्य है।

है ससार समूचा भाभारी हम क्या गौरव गाएं? कम्प हे! महासती! महाभाग! तुम्हारी बमिहारी बाएं! सुख में तो सब न्यिकाते हैं प्रपता भपना स्परव किन्तु कस्ट में जो दिखासाए उसका महा-महस्य

किन्तु केष्ट संज्ञा (दक्षाक्षायुं उदका महा-सहरूव कैसामिभा तरूव संस्कृति को बिस्सृति कमी न करणाएँ। मन्य है! महासती! महाभाग! नुस्हारी बिनहारी बाएँ। सार्य वीवन सर्य-सीन का रहा ज्वमन्त प्रमाण एक-एक घटमार्थों पर न्योस्थायर कर दें प्रारा

दुमहो भाग-गरण संस्कृतिको क्रुवियो स्था नया नतमाएँ? भग्य है। महासती ! महाभाग ! तुन्हारी दनिहारी नाएँ । ! सुनो जहाँ ही गूज रही है महासती को धनर कहानी ।

ी सुनो जहाँ ही गूज रही है महासदी की धनर कहानी। जो जीवित प्रतिमृति सस्य को ब्रह्मचर्य की घटन नियानी। नव-न्हार स्वपुर करत विद्वार

नव—न्तर ७०५६ करत वहार नय—वापूकी सह समर कहाती घघक रही थी घाय घाय जो साय साय कर जलती थी, गगन चुम्बिनी भीपण लपटे कोसो दूर उछलती थी, सोता के पावन सतीत्व से ग्रग्नि हुई पानी-पानी। सुनो जहा ही गूज रही है महासती की ग्रमर कहानी। छोडो बात ग्राज की, याद करो वह दृश्य स्वयवर का, वज्रावतं घनुष चढाते क्या साहस था रघुवर का? सीता के पावन सतीत्व से फली कामना मन-मानी। सुनो जहा ही गूज रही है महासती की ग्रमर कहानी। भूल गए क्या ग्राजनेय ने ग्रतल महार्णव पार किया, नाग-पाश को तोडा कैसा रावण का सत्कार किया?

सीता के पावन सतीत्व से लाया भूषण सहनाणी। सुनो जहा ही गूंज रही है महासती की ग्रमर कहानी।

ग्ररे । सुना क्या कभी श्रमोघ शक्ति ऐसे बेकार गई, लक्ष्मण ने नव सजीवन पा, सस्थापित की ख्यात नई, सीता के पावन सतीत्व से मारा रावण श्रभिमानी।

सुनो जहा ही गूज रही है महासती की अमर कहानी।
सिंहनाद उस महारण्य मे जीने की भी क्या आशा?
दूट चुकी थी राघव को तो मिलने की भी अभिलाषा,
सीता के पावन सतीत्व से प्रकटो परम पुण्यवानी।
सुनो जहा ही गूज रही है महासती की अमर कहानी।

* इतने मे ही बढा अनुश्रुत शान्त सिलल का भीषण वेग, बहने सब मचान लगे फैला जनता में अति उद्धेग। जाहि-त्राहि पच गई क्षणों मे आकुल-व्याकुल हुए सभी, अरे हिं आ क्या निया प्राप्त । हिं आ हिं सा निया प्राप्त । हिं सा निया प्राप्त । हिं सा निया प्राप्त । हिं सा निया । हि सा निया । हिं सा निय । हिं सा निया । हिं सा

^{*} रामायग्र

प्रमिन-परीका

६ घर-उधर जन लगे आगने किन्तुन पाते आएए कहीं ऐसा लगता है झव तो ये बच पाएसे आएए नहीं। बच्चे, बुटडे, भरुए तरुए सब करते साक्रन्यन भीत्कार, भड़ता ही जासा है पानी कहीं दीखता सारन पार।

यह नया घम्युचि उत्तर गया है या है कृषित देव माया, या निन्दाकी महासती की उसका यह प्रतिकल पाया। है! मगदान! करें न्या? कैसे झान्त बने यह पारावार हो स्वाकृषि दार-वार करण स्वर से कर रहे पुकार।

> -≄्रं जय सीता माता, तेरे विनान कोई जगदम्बे!शाता।

र्थक्य सीता माता। महासतो सब भपनी स्रोधिट मासाः (शां)ी

तेरी सवस शक्ति का है परिश्रय पाया। पतिव्रते !हे सुमते !करपक्ती !देवी!

वपरीक हम सब हैं परण कमन सेबी।

धमम धममता करता बड़े-बड़े होते। धममों के शय-बस को उत्तम जन भोते।

हम अपराधी सारे समा हमें कर दो। कस्त्रमापकक पसारो यह संकट हर दो।

सोरठा

सुम जनता की साह ! दोनों हार्घों से सपित । कर साहप्ट प्रवाह सीठा में सीमित क्रिया । मुख-मुख मगल ही मगल है,
 गूज रहा श्रम्वर भूतल है।
 मुख-मुख मगल ही मगल है।

मिट्टो के करा-करा मे मगल, जन-जन के तन-मन मे मगल, सरवर, तरुवर, वन-राजी मे महक रही महिमा परिमल है।

विकच वदन लवरणाकुश ग्राते, सविनय चरणो मे लुट जाते, दोनो ग्रोर सुशोभित मा के, यथाख्यात सह ज्यो केवल है।

सपरिवार राघव बद्धाञ्जलि , देते हैं शत-शत श्रद्धाञ्जलि , मुक्त-कण्ठ गुराग-गान कर रहे , किया सूर्य-कुल को उज्ज्वल है।

है हर्षातिरेक मे लक्ष्मणा, चरण-स्पर्श कर रहे प्रति क्षणा, श्री शत्रुष्म, विभीषण कपिपति सबके विकसित हृदय कमल हैं।

ग्राए नारद नृत्य रचाते, सतत शील की महिमा गाते, पैर न टिकते पवन-पुत्र के पुलकित बासो रहे उछल हैं।

^{*} लय-म्प्रमर रहेगा धर्म हमारा

इभर-उभर जन सगे भागने किन्तुन पाते त्राए। कहीं

ऐसा सगठा है सब हो ये बच पाएंगे प्रास नहीं। धर्म पूर्व प्ररुप तरुए सब करते भाकन्दन बीतकार पढता ही काता है पानी कहीं दीवता घारन पार।

धक्ति-परीबा

यह नया धम्बुधि उसट गया है या है कृपित देव मार्या , या निन्दा की महासदी की उसका यह प्रतिफल पाया। है ! भगवान ! करें क्या ? कैसे झान्त बने यह पारावार हो बदाश्चलि बार-बार करुण स्वर से कर रहे पुकार।

> ⊅ जय सीता तेरे किता त कोई जगहमी ! त्राता। 🗱 अन्य सीता माता।

महाससी धव धपनी लो समेट माया। (मां) तेरी सबस शक्तिका है परिचय पाया।

माता

पविवर्ते । हे सुमते ! करपसरे ! देवी ! चंत्ररीक हम सब हैं चरण कमन सेवी।

धमम सम्भवा करता बढे-बढे होते। मध्यों के ध्रय-क्रम को जलभ जल धोते।

हम भपराभी सारे क्षमा हमें कर दो। करमा पसक पसारी यह संबद्ध हर हो।

सोरठा

मुन अनला भी ब्राह ! दोनों हाचों से सपदि । कर भाक्य प्रवाह मीठा के सीमित किया ।

नव--> वय भित्तो ! दैवेय !

तेरे मे ग्रक्षय सत्व भरा , तेरे मे ग्रव्यय तत्त्व भरा , सस्कृति का महा महत्त्व भरा , ग्रपनत्व भरा तू श्रुत-परिकर । जय हो, जय हो ,

कितने शरगागत तारे है , कितने जन पार उतारे हैं , जितने न व्योम मे तारे हैं , श्रद्धानत है सारे सुर-नर जय हो, जय हो ।

तू कामघेनु, तू नन्दनवन ,
तू सुर-सरिता, सुर-वृक्ष सघन ,
'तुलसी' का तू ही जीवन-धन ,
ग्रिभनन्दन ग्रिभनन्दन सादर जय हो, जय हो ।

महासती भी जय हो जय हो घटन सरोहर शीर्य भक्षय हो

₹b₹

माझादित यों सारी जनसा सीता का भगियान सफ्स हो।

* अयं ब्रह्मवर्षं अयं द्रतं शेक्टरं अयं हो, अयं हो अयं हो । जय ज्योतिर्धर! जस प्रमा प्रकर! जस हो जस हो, जस हो।

मन्दि-परीक्षा

तभ में हु सर्वोत्तम सप है जप में सू सर्वोत्तम अप है रवि से बढकर उप्रातम है, तू शीतम ज्यों धारद छदाधर जय ही जय ही जय ही।

त जीवन का उन्नायक है, सायक का माग्य विमायक है सन्तों का सदा शहायक है

वांधित दायक हे मंगभवर! जय हो अय हो अय हो ; न बनुपमेय है मनुपम है दुर्वेय दुरनुपर दुर्गम **है** संयम रक्षाम म सदाम है

यम-नियम सभी तेरै धन्तर जय हो अय हो अय हो , नू ही गन्तव्य हमारा है **पू ही मन्तस्य हमारा है** नू ही कर्तथ्य हमारा है तू सदा सम्य हे द्रान्ति-निक्र ! जय हो अय हो अय हो ।

मब--प्राप्ते सथ-पर वर व्योति हिरस्य

प्रशरित



* यह अग्नि-परीक्षा की घटना सर्वत्र देश मे विश्रुत है उसका साहित्यिक काव्य-रूप लो सबके सम्मुख प्रस्तुत है, इतिहासो मे है रही सदा गौरवमय भारत की नारी. उसके सतीत्व के मध्यम से ही चमक उठी रचना सारो। रामायरा के हैं विविध रूप अनुरूप कथानक ग्रेहरा किया, निश्छल मन से कलना द्वारा समुचित भावों को वहन किया, वास्तव मे भारत की संस्कृति है रामायरा मे बोल रही, ग्रपने युग के सवादों से वह ज्ञान-ग्रन्थिया खोल रही। जिसमे सीता का शीर्य भरा जीवन देता सन्देश नया.

म्रादेश नया, उपदेश नया, नारी-जागृति उन्मेष नया.



* यह ग्रग्नि-परीक्षा की घटना सर्वत्र देश मे विश्रुत है, उसका साहित्यिक काव्य-रूप लो सबके सम्मुख प्रस्तुत है, इतिहासो मे है रही सदा गौरवमय भारत की नारी, उसके सतीत्व के मध्यम से ही चमक उठी रचना सारो।

> रामायण के है विविध रूप श्रनुरून कथानक ग्रेहण किया, निश्छल मन से कलना द्वारा समुचित भावों को वहन किया, वास्तव में भारत की सस्कृति है रामायण में बोल रही, श्रपने युग के सवादों से वह ज्ञान-ग्रन्थिया खोल रही।

जिसमे सीता का शौर्य भरा जीवन देता सन्देश नया, आदेश नया, उपदेश नया, नारी-जागृति उन्मेष नया,

^{*} सहनाणी

मिल-परीका महिसा के माता के मिसते

295

इसमें सीता क युगस रूप प्रपने ही सत्य-शील दल से निमरा जग में उसका स्वरूप।

निर मानोक्षित कसित कस्पना माज सकस सानार हुई धिका विविध समीकासय यह मिनिन कृति सैयार हुई। मृति-सित्यों की सतत प्रार्थमा रह रह प्रेरित करती थी भाता की भावन वासी उत्साह हुवय में मरती थी।

वोहा

तुन सबकी धन्यर्थना समुदित किया प्रयास । द्विशताब्दी का निम गया धनायास प्रवकाश । पिथम यंग विहार से पावन उत्तर प्रान्त । यादन युगम सहस्र की साथी यात्रा धान्त । धकस्मान्त ही बीच में मन्त्री नवर्ग प्रयास । धोरा नपन्ती का किया सकम सुकन धनियान । वीदासर से सी मिदा करना की विश्वसर । विश्वस सारणा-वारणा कर धासन का स्वस्य । मगारोह धनिनिष्कमणा सुधरी में सम्पन । विकट मार्ग मेवाइ के देवे परम प्रसन्त ।

रामायन १ मुनिधी नम्पाताल वी १ मंत्री मुनिधी मणततालको स्वामी १ मुनिधी मुक्तालको ४ मानार्थमी तलसी की बाता

श्रग्नि-परीक्षा

यया समय हो केलवे पहुचे राजसमन्द।
सघ चतुष्टय मे खिला अनुपम अभितानन्द।
सख्या श्रमणी श्रमण की दो सौ मे कम तीन।
गुरु-अनुशासन रत सदा शासन मे तल्लीन।
* चातुर्मासिक, दैं मासिक, मासिक महाभद्रोत्तर तप भव्य,
तेरापथ की तप साघना चलती श्राज अनल्प अलभ्य।
सारे मेदपाट का अभिनव हुआ एक ही चातुर्मास,
अगुज्जत श्रान्दोलन सहवर्ती नये मोड का नया विकास।
तेरापथ की क्रान्ति-भूमि यह जन्म-भूमि मेवाड प्रदेश,
इस शासन के गौरव मे रखता है अपना स्थान विशेष।
यही हुआ शास्त्रो का मथन, यही मिला निर्णय नवनीत,
यही पूज्य आचार्य भिक्षु का पनपा तेरापन्थ पुनीत।

दोहा

स्वय ग्रलोकिक पुरुष थे, दिया ग्रलोकिक तत्त्व।
क्रान्तिकारको मे रहा उनका वडा महत्त्व।
स्पष्टवादिता मे प्रथम, निर्णायक निर्भीक।
उनको वागी सघ मे वनी लोह की लीक।
सबल मगठन-शक्ति के सूत्रधार वेजोड।
जागृति लाने श्रम किया जीवन भर जी तोड।
भारमल, ऋषिराय, जय, मघवा, मागाक, डाल।
श्री कालू करुगा जलिध गगा-गोकुल-गोपाल।
उनके पुण्य प्रताप से सिद्ध सदा सब कार्य।
है कृतज्ञ श्रद्धा प्रगात 'तुलसी' नवमाचार्य।

^{*} रामायण

195

महिला के माता के मिनसे इसमें सीता के युगल रूप भगने ही सरम-शील वस में निकारा जग में उसका स्वरूप।

विर धाकांशित किसत करणना ब्राज सफल साकार हुई विक्षा विविध समीकाम्य यह प्रमिनव इति तैयार हुई। मुनि-सिसमें की सतत प्रार्थमा रह रह मेरित करती थी भासा की मादुक वारणी छस्साह हुदय में मरती थी।

बोहा

भुन सक्की सम्मर्थना समुदित किया प्रमास ।
विश्वताक्यी का मिल गमा भनायास भवकाछ ।
पश्चिम मेंग विहार से पावन उत्तर प्रान्त ।
माइल मुगल सहस्य की साभी यात्रा धान्त ।
सकम्मात् ही बीक में मंत्री नवर्ग प्रयाग ।
सार नगम्यी का किया सक्का मुफल समियान ।
बीनामर से सी विशा बन्ना की विश्वस्य ।
स्वार सारिग्रा-बाररणा कर शासन को स्वस्य ।
ममारोह समिनिष्कसम्य मुसरी में सम्यन्त ।
विवार सारीग सेवाइ के नुसे प्रमा प्रमन्त ।

रामायम

मृतिमी बन्गानात थी।

२ मंत्री बुतिकी शगतनामधी स्वाधी

३ सुनिधी सूचनानजी

४ पात्रायेथी शूलनी की जाता

ग्रीन-परीक्षा

₹4

 इस पावप के प्रथम चरण में यह माधिक इति है सम्पूर्ण वो ह्वार सतरह सम्बत भादव इच्या नवमी परिपूर्ण। यो-दो घट्टा तक रावि में रचना का यह प्रथम प्रयोग इद विश्वास घटल मारमा में होगा इसका खुम उपयोग।

सोरठा

पन्द्रम् पुष्य भगस्त, निश्चि में साढ़े दस बजे। प्रमुदित मन-तन स्वस्य हुई सुझद सम्पन्नता। बोहा

יקי ד

वर्षमान शासन मुदित वर्षमान परिएाम। वर्षमान साहित्य है वर्षमान सद कासः।